वर्ष - 2022
अंक - 8

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खान भारती

भारतीय खान ब्यूरो
नागपुर

कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही क्यों ?

- यह संविधान की मूल भावना के अनुरूप है ।
- संविधान निर्माताओं की इच्छापूर्ति संभव होगी ।
- राष्ट्र की गरिमा और महिमा में वृद्धि सुनिश्चित है।
- जन - जन में राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रतिष्ठा होगी ।
- हमारी कथनी और करनी का अंतर समाप्त होगा ।
- जन - जन की भाषा हिंदी में प्रभावी सम्प्रेषण व पत्र व्यवहार संभव होगा ।
- राष्ट्र और जनभाषा के साथ ही हिंदी की राजभाषा कें रूप में प्रतिष्ठा होगी।
- जटिल कार्य प्रक्रिया को सहज व सरल बनाना संभव होगा।
- राजभाषा हिंदी की सेवा करने से राष्ट्र सेवा की गर्वानुभूती होगी ।
- हिंदी में काम करना हम सबका धर्म और कर्म है।

हिंदी में कार्य कैसे शुरू करें ?

- पहले हिंदी में हस्ताक्षर करना प्रारंभ करें।
- छोटी - छोटी सभी टिप्पणी नोट आदि हिंदी में लिखना शुरू करें ।
- सभी कार्यालयीन प्रपत्रों को हिंदी में ही भरें और अपने सहकर्मियों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करें ।
- प्रयत्नपूर्वक सभी पत्र व्यवहार हिंदी में ही कार्य करें ।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में ही प्रेषित करें।
- अंतरराष्ट्रीय भारतीय अंको का प्रयोग करें यथा 567943 ।
- जैसा आप सोचते है या जो आप करना चाहते हैं, हिंदी में बिल्कुल वैसा ही लिख दें।
- कठिन और साहित्यिक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए ।
- तकनीकी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखें जैसे - मेटल फर्नेस ।
- किसी भी प्रकार की कठिनाई या असुविधा की स्थिति में राजभाषा विभाग से सहयोग प्राप्त करें।

वर्ष - 2022 अंक - 8

खान भारती

हिंदी अनुभाग
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

:: संरक्षक ::
संजय लोहिया
भा.प्र.से.
अपर सचिव एवं महानियंत्रक (प्रभारी)

:: संपादक मंडल ::
:: मुख्य संपादक ::
डॉ. वाय. जी. काले
खान नियंत्रक एवं राजभाषा अधिकारी

:: संपादक ::
अभिनय कुमार शर्मा
संपादक

:: संपादन सहयोग ::
मिताली चटर्जी
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

असीम कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

किशोर डी. पारधी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कु. वीनू खत्री
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

:: साज - सज्जा एवं टंकण ::
प्रदीप कुमार सिन्हा
अवर श्रेणी लिपिक

संजय लोहिया, आईएएस
अपर सचिव एवं महानियंत्रक (प्रभारी)
SANJAY LOHIYA, IAS
Additional Secretary & Controller General (Incharge)

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय अपनी हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' का प्रकाशन करने जा रहा है। हिंदी देश की परंपरा और आस्था का मूल आधार है। इसका अस्तित्व जितना प्रभावी है, उतना ही समृद्ध और विकसित भी। हिंदी गृह – पत्रिका हिंदी के प्रचार – प्रसार के साथ ही समस्त कार्यालय परिवार के सदस्यों की सृजनात्मक गतिशीलता और सकारात्मक सोच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

हिंदी हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है और संविधान द्वारा राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित है। अत: सरकार की राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन एवं सूचीबद्ध कार्यों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए हमारे द्वारा सतत् प्रयास किए जाते रहना चाहिए। साथ ही, हिंदी के प्रति हमारा दायित्व एक नागरिक के नाते राष्ट्रभाषा के लिए तथा एक सरकारी कार्मिक के नाते राजभाषा के लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। हमारा यह नैतिक और मौलिक उत्तरदायित्वबन पड़ता है कि हम राजभाषा हिंदी के प्रति अपने राष्ट्रीय एवं नैतिक कर्तव्यों को समझें और पूरे मनोयोग से सदैव उसकी सेवा में तत्पर रहें।

मेरी यह कामना है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार – प्रसार का माध्यम बने तथा इसमें प्रकाशित रचनाएं पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हों। 'खान भारती' के प्रकाशन के लिए भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय बधाई का पात्र है।

16/8/22

(संजय लोहिया)
अपर सचिव एवं महानियंत्रक (प्रभारी)

खण्ड घ, द्वितीय तल, इन्दिरा भवन, सिविल लाईन्स, नागपुर 440 001
Block D, Second Floor, Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur 440 001
फोन/फैक्स Phone/ Fax No. 0712 2560041, 2565073 इ-मेल/E-mail: cg@ibm.gov.in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES
मुख्य खान नियंत्रक का कार्यालय
OFFICE OF THE CHIEF CONTROLLER OF MINES

संदेश

यह हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम, समर्पण, लगाव और सम्मान को मूर्त रूप देने का यह अनुपम प्रयास है। भारतीय खान ब्यूरो हिंदी की प्रगति, प्रचार और प्रसार के लिए अत्यंत ही गंभीरतापूर्वक कार्य कर रहा है

हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और सशक्त संवाहिका भी है जो देश ही नहीं, विदेशों में बसे करोड़ों प्रवासी भारतीयों और भारत मूल के लोगों के बीच आत्मीयता का मधुर संबंध स्थापित करती है। यह लोगों को भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति से निरंतर जोडे रखने में एक सशक्त माध्यम का काम करती है। इसी में हम लोग अपनी अस्मिता की पहचान भी पाते हैं।

विभाग के सदस्यों द्वारा लिखित रचनाओं के जरिए जहाँ एक ओर सदस्यों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का परिचय मिलता है, वहीं यह पत्रिका व्यक्तिगत स्तर के साथ ही सरकारी काम - काज में भी हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का व्यवहारिक संदेश भी देती है।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों , संपादक मंडल और अन्य सदस्यों को उनके इस सार्थक योगदान के लिए बधाई देता हूं तथा भविष्य में राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर उन्नति और 'खान भारती' की सफलता एवं उन्नति की कामना करता हूँ।

(पी. एन. शर्मा)
मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी)

द्वितीय तल, खंड-'क' इंदिरा भवन, सिविल लाइन्स नागपुर - 440001
दूरभाष संख्या - 0712 - 2560961
ई-मेल : ccom@ibm.gov.in

2nd Floor, 'A' Block, Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur - 440001
Tel. : 0712 - 2560961
e-mail : ccom@ibm.gov.in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय अपनी हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' का प्रकाशन करने जा रहा है। यह कार्यालय हिंदी की प्रगति, प्रचार और प्रसार के लिए सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी का प्रयोग अत्यंत व्यापक स्तर पर होता है। यह विश्व में भारत की प्रतिनिधि भाषा के रूप में राष्ट्र की पहचान सुरक्षित करती है तथा साथ ही इसका प्रयोग राष्ट्र निर्माण के रूप में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम में होता है।

हिंदी अपने राष्ट्रीय स्वरूप में पूरे देश की संपर्क भाषा भी बनी हुई है। अपने सीमित रूप में राजभाषा के रूप में हिंदी राज – काज के व्यवहार में विभिन्न भाषा- भाषियों के बीच परस्पर संप्रेषण का माध्यम है। संपूर्ण भारतवर्ष में बोली और समझी जाने वाली हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में अपना दायित्व सफलतापूर्वक निभा रही है।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की सफलता एवं उन्नति की कामना करता हूँ।

(पंकज कुलश्रेष्ठ)
मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी)

इन्दिराभवन, सिविललाईन्स, नागपुर 440 001 फोन/ फैक्सक.0712 2561824 ,2565073 ईमेलccom-mes@ibm.gov.in
Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur 440 001 Phone/ Fax No. 0712 2561824, 2565073, E mail: ccom-mes@ibm.gov.in

डॉ. योगेश जी. काले
खान नियंत्रक (त.ख.प्र), (पुर्वांचल) एवं
राजभाषा अधिकारी
Dr. Yogesh G. Kale
Controller of Mines (TMP), (EZ) &
Rajbhasha Adhikari

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
खान मंत्रालय
MINISTRY OF MINES
भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES

18 अगस्त 2022

संदेश

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' के वर्ष 2022 के नवीन अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है। यह राजभाषा के विकास एवं प्रचार – प्रसार की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर एवं प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में यह कार्यालय सराहनीय कार्य कर रहा है।

विभागीय हिंदी गृह – पत्रिका का प्रयोजन जहाँ एक ओर राजभाषा हिंदी का प्रचार – प्रसार कर कार्यालय में हिंदी में कामकाज के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है, वहीं यह हिंदी में विभिन्न विधाओं में अपनी अभिव्यक्ति के साथ ही कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने के प्रति हमारे समर्पित भाव और सक्षम कार्यकुशलता का प्रतिबिंब है। इसकी सार्थकता इसमें है कि हम हिंदी को केवल हिंदी दिवस या हिंदी पखवाड़े के दौरान महिमा मंडित न करें बल्कि अपने दैनंदिन कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक महत्व दें। प्रेरणा, प्रोत्साहन और सदभावना पर आधारित राजभाषा विभाग की नीति वे अनुसरण में भारतीय खान ब्यूरो और उसके अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के हिंदी के प्रगामी प्रयोगों को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है और इसमें हम आप सभी के सहयोग से बहुत हद तक सफल भी हुए हैं।

आज विश्व एक वैश्विक ग्राम के रूप में बदलता जा रहा है और ज्ञान संचालित समाज का निर्माण हो रहा है। ऐसे में ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अधिक से अधिक प्रसार के लिए हिंदी का अधिकाधिक उपयोग आवश्यक है। हम अपनी भाषा में जितना अधिक सोचेंगे और अपने आपको व्यक्त करेंगे, उतना ही अधिक हिंदी का विकास होगा। प्रतिदिन के कामकाज में सहज और सरल हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग कर हम हिंदी को बढ़ावा दे सकते हैं।

मैं गृह – पत्रिका 'खान भारती' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

18|08|2022
(डॉ. योगेश जी. काले)

इंदिरा भवन, सिविल लाईंस, नागपुर - 440 001
दुरभाष: (0712) 2562143
ई-मेल: com.tc@ibm.gov.in/zo.kol@ibm.gov.in
वेबसाईट : http://ibm.gov.in

Indira Bhavan, Civil Lines, Nagpur-440 001
Telephone: (0712) 2562143
e-mail: com.tc@ibm.gov.in/zo.kol@ibm.gov.in
Website: http://ibm.gov.in

संपादकीय....

वर्ष 2022 में हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' का 8वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि 'खान भारती' का प्रकाशन दोनों रूपों में अर्थात् ई–पत्रिका (फ्लिप पत्रिका) और हार्ड कॉपी दोनों में हो रहा है। इससे पाठकगण इसमें प्रकाशित लेख अधिक सरलता से पढ़ पाएँगे और इसमें दी गई जानकारी से लाभान्वित हो पाएँगे।

'खान भारती' के माध्यम से भारतीय खान ब्यूरो के परिवार के सदस्य स्वयं के विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को तो अभिव्यक्त करते ही हैं साथ ही, अपने कार्यक्षेत्र से संबंधित तकनीकी जानकारी को भी साझा करते हैं। इस प्रकार हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' में तकनीकी एवं सामान्य दोनों शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे में राजभाषा हिंदी का बहुमुखी गुणात्मक विकास स्वमेव सुनिश्चित हो जाता है और साथ में कार्मिकों की रचनात्मकता की भी अभिव्यक्ति हो जाती है।

आज अगर कहें कि हिंदी केवल भारत की है अथवा मात्र एक बोलचाल की भाषा है तो ऐसा सोचना पारंपरिक होगा। सही अर्थों में आज हिंदी का वैश्वीकरण हो चुका है और तकनीकी रूप से इतनी समृद्ध हो चुकी है कि लोगों द्वारा इसको अपने कार्यक्षेत्र में प्रयोग किया जाना बहुत ही आसान हो गया है। एक सामान्य व्यक्ति मोबाईल में, कम्प्यूटर में हिंदी लिख भी सकता है या वाइॅस टाइपिंग भी कर सकता है। अन्य भाषाओं की तरह हिंदी भी तकनीकी रूप से समृद्ध और अग्रमुखी हो गई है। कोविड–19 महामारी भी हिंदी के बढ़ते कदमों को रोक नहीं पाई। समकालीन तकनीकी प्रगति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के कारण हिंदी अपनी महत्ता और उपयोगिता बनाये हुए हैं।

वर्ष 2022 में हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' में विभिन्न विषयों से संबंधित आलेख, कहानी एवं कविताएं प्रकाशित किए गए हैं । निश्चय ही पाठकों को ये रूचिकर लगेंगे और विविध सूचनाप्रद आलेखों को पढ़कर उनकी जानकारी में वृद्धि होगी। आपके सुझावों और मनोभावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अपने वरिष्ठ अधिकारियों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके मार्गदर्शन से यह पत्रिका अपने वास्तविक कलेवर को प्राप्त कर सकी।

अभिनय कुमार शर्मा
संपादक

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
	राष्ट्रीय एकता की सतत कड़ी है हिंदी	डॉ. वाय. जी. काले	1
	रेलवे स्टेशन पर गड़बड़	अभिनय कुमार शर्मा	3
	जल है तो कल है	भरत कुमार शर्मा	5
	क्रिप्टो करेंसी एवं ब्लॉकचौन माइनिंग	विकास कुमार	7
	जंगल की रानी – बाघिन	जी. एस. सोनेकर	9
	आपदा प्रबंधन	संजय डोंगरे	13
	लम्हेटाघाट भारत का पहला भूवैज्ञानिक उद्यान	अक्षय गुप्ता	16
	संस्कृत भाषा या संस्कृत दिवस का महत्व	मोहम्मद कासिम	18
	रणबॉकुरे	ए.जे.पठान	21
	भारती स्वर्ण खनन उद्योग – इतिहास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावना	संतोष पाणी एवं चित्रलेखा नंदनवार	27
	माँ की ममता	एकता गिरि	34
	बाजारवाद के दौर में बढ़ता हिन्दी का भाव	किशोर डी. पारधी	38
	ग्लोबल वार्मिंग/वैश्विक तापमान में वृद्धि और उसके विनाशकारी प्रभाव	आर.एस.धोपटे	40
	मंडेला इफेक्टरू कारण एवं संभावनाएं	सूर्यभूषण प्रसाद	43
	बधाई हो लड़की हुयी है	कु. वीनू खत्री	47
	बाइज्जत बरी	नंदकिशोर कनौजिया	49
	संकट में है हवा और पानी	प्रदीप कुमार सिन्हा	50
	संयुक्त परिवार	अभिषेक कुमार	52
	गौसंरक्षण तथा अर्थव्यवस्था	जय कुमार	54
	बीरबल का न्याय	आर. आर. सदावर्ते	56
	निरक्षरताः एक सामाजिक अभिशाप	पप्पू गुप्ता	57
	राजभाषा हिंदी : कल और आज	असीम कुमार	59
	अष्टांग योग का दैनिक जीवन में महत्व	विनय कुमार सक्सेना	61
	श्रमेव जयते	पुखराज नेणिवाल	64
	बोनेक लोर (जंगल के आँसू)	विनय कुमार	68
	कविता		
	हिंदी से ही है हिन्दत्व	सुरेश अरुण पाटिल	69
	ईन्सपेक्टर	प्रशांत तिनगुरीया	70
	अग्निपथ	टी. एम. पुस्तोडे	70
	'' मैं'' को '' मैं'' में देख	पवन कुमार	71
	बढ़े चलो	राजेश धावड़े	71
	धरती बचाओ	चूनाराम	72
	वृक्ष है प्राण वायु का दाता	अनिता शर्मा	72
	मैं हूँ बाउंडरी मैन	राजेश कुमार	73
	हिंदी प्रगति		
	वर्ष 2021 – 22 के दौरान राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यों का विवरण		74

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखक के अपने हैं एवं संगठन से उसका कोई संबंध नहीं है।

राष्ट्रीय एकता की सतत कड़ी है हिंदी

डॉ. वाय. जी. काले
खान नियंत्रक एवं राजभाषा अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

हिंदी विश्व की समृद्ध भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह भारत जैसे विशाल देश की बहुमत की भाषा है और इसकी देवनागरी लिपि पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है और साथ ही सरल और बोधगम्य भी। हिंदी ही वह जन भाषा है जो संपर्क भाषा का रूप धारण कर राष्ट्र के विखरे कणों और शक्तियों को संगठित करने की क्षमता रखती है। राजभाषा के रूप में हिंदी और इसकी देवनागरी लिपि को अंगीकार करना स्वराज्य प्राप्ति जैसा ही महत्वपूर्ण है।

हिंदी एक लंबे अर्से से देशभर की जनता की संपर्क भाषा का कार्य कर रही है। प्राचीन काल में अपनी शास्वत संस्कृति से अभिन्न रूप में समादृत हिंदी संत कवियों की वाणी में जन–जन तक पहुंची। फिर, स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक के रूप में हिंदी उभरी। भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान यह महसूस किया गया कि आंदोलन को सफल बनाने के लिए जन–जन को जोड़ना पड़ेगा और जन–जन को जोड़ने के लिए एक भाषा और लिपि की आवश्यकता होगी। उपयोगिता, उपयुक्तता और सहजबोधगम्यता के कारण बहुमत द्वारा समर्थित हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में पूरे देश में मान्यता प्रदान की। इस तरह हिंदी भाषा अपनाने का नारा देशभर में भी राष्ट्रीय आंदोलन के साथ ही प्रारंभ हुआ। स्वाधीनता के पश्चात हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में भी स्वीकार कर लिया गया।

देश की राष्ट्रीय एकता के रूप में हिंदी और देवनागरी की उपयुक्तता एवं उपयोगिता के संबंध में अनेक विद्वानों ने भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था – 'हिंदी भाषा और देवनागरी ही वह माध्य्यम है जिसके द्वारा पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है'। योगीराज अरविंद का कथन है – 'भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले व्यक्ति ही सच्चे भारतीय बंधु हैं' आचार्य विनोबा भावे के अनुसार 'संपर्क भाषा के रूप में हिंदी और राष्ट्रीय लिपि के रूप में देवनागरी के द्वारा ही राष्ट्रीयता की भावना ही पनप सकती है'।

सन् 1915 ई. में महात्मा गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से लौटकर दक्षिण भारत में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की स्थापना कर दक्षिण भारतीयों को हिंदी समझने, पढ़ने और विचार विनिमय के लिए ऐसी पृष्ठभूमि तैयार की थी जिसने राजभाषा और लिपि के जटिल प्रश्न को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1948 ई. में संविधान सभा में महात्मा गांधी जी ने सुझाव दिया था कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी या हिंदुसतानी को राजभाषा के रूप में अपनाया जाए। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी और देवनागरी को वह दर्जा संविधान सभा ने दिया। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी, संस्कृत से शक्ति प्राप्त कर सके तथा वैज्ञानिक रूप से पूर्ण और सहज होने के कारण अधिकाधिक लोकप्रिय हो सके, इस बात का ध्यान रखा गया था।

आज आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रहित में सभी भारतवासियों द्वारा पूर्ण शक्ति, भक्ति और अनुरक्ति से इसे प्रोत्साहन दिया जाए। यदि भारत के सभी भाषाओं के साहित्य को देवनागरी में भी लिखा जाए तो समस्त

भारतवासी इससे लाभान्वित होंगे। इस प्रयास से संपूर्ण राष्ट्र को भावात्मक एकता के सूत्र में आबद्ध करने में सुगमता होगी। भारत में अनेक बोलियां और भाषाएं ऐसी हैं जो मौखिक रूप में हैं तथा जिनकी कोई लिपि नहीं है। इस लिपि विहिन बोलियों और मौखिक भाषाओं के लिए तो देवनागरी लिपि ही सर्वाधिक उपयुक्त है। इससे समग्र देश में भावात्मक एकता स्थापित करने और भारतीयता का भाव जगाने में सुगमता होगी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत और भारतवासियों की आधुनिक एकता और परंपरागत अस्मिता हिंदी पर निर्भर है। देश के नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, प्राविधिक उन्नयन के लिए यह परम अपेक्षित है। भाषा की उत्प्रेरक शक्ति राष्ट्र निर्माण में महत्ती भूमिका निभा सकती है। जब तक देश के प्रत्येक भाग में हिंदी की प्रतिभा का विकास नहीं होगा, तब तक भारतवासी आधुनिक संसार को अपना वास्तविक वर्चस्व दिखाने में सामर्थवान नहीं हो सकेगा। हिंदी को अपनाना हर एक देशभक्त का परम कर्तव्य और पूनीत दायित्व है।

रेलवे स्टेशन पर गड़बड़

अभिनय कुमार शर्मा
संपादक
भारतीय खान ब्यूरो,नागपुर

मेरी सासू माँ को मेरे पूरे परिवार में बहुत बुद्धिमान और सामान्य ज्ञान से भरपूर माना जाता है। उनकी रीजनिंग पावर की दूर तक चर्चा है। लेकिन कभी–कभी अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण यह सामान्य ज्ञानऔर तर्कशक्ति अपने को धोखा दे जाती है।ऐसा ही कुछ मेरी सासू माँ के साथ हुआ। वो उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में रहती हैं। एक बार की बात है वो रेलवे स्टेशन पर अपने माता–पिता को लेने गई थीं। हालांकि मेरे ससुर जी जो पेशे से डॉक्टर थे, वो ही किसी भी अतिथि को लेने के लिए रेलवे स्टेशन पर जाया करते थे। लेकिन उस दिन वह अपने मरीजों में बहुत व्यस्त थे इसलिए उन्होंने मेरी सासू माँ को उन्हें लेने के लिए स्टेशन जाने दिया। सासू माँ के माता–पिता मुगलसराय–इलाहाबाद पैसेंजर से मिर्जापुर (यूपी) से आ रहे थे। यहाँ मेरी सासू माँ दो बड़े भ्रम का शिकार हुईं।

पहला भ्रम ट्रेन का नाम, रेलवे की समय सारणी में ट्रेन का नाम मुगलसराय–इलाहाबाद पैसेंजर था लेकिन आमतौर पर ट्रेन को मुगलसराय एक्सप्रेस के नाम से जाना जाता था। मेरी सासू माँ इस छिपे हुए तथ्य से अनजान थीं और उन्होंने पूछताछ काउंटर पर न पूछते हुए सीधे कुली से मुगलसराय एक्सप्रेस किस प्लेटफॉर्म पर आएगी,यह पूछकर वो प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर पहुंच गयीं और ट्रेन का इंतजार करने लगीं और फिर वही हुआ जो नहीं होना चाहिए था। जब ट्रेन प्लेटफॉर्म पर पहुंची तो ट्रेन आने की घोषणा मुगलसराय–इलाहाबाद पैसेंजर के नाम से की गई। इसलिए स्वाभाविक रूप से उन्होंने घोषणा पर बिलकुल भी ध्यान नहीं दिया। वह तो अपनी मुगलसराय एक्सप्रेस का इंतजार करती रहीं और आश्चर्य करती रहीं कि उस दिन ट्रेन इतनी देर से क्यों आ रही है? दूसरा भ्रम तब हुआ जब प्लेटफॉर्म अचानक बदल दिया गया। ट्रेन को प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर पहुंचना था, जहां वह उसका इंतजार कर रही थीं, लेकिन ट्रेन तो प्लेटफॉर्म नंबर दो पर पहुंच गई। चूंकि सासू माँ पहले से ही ट्रेन का गलत नाम समझे बैठी थीं, इसलिए उन्होंने प्लेटफॉर्म बदलने की घोषणा पर भी ध्यान नहीं दिया। उन्हें क्या पता था कि जिस ट्रेन का वो इंतजार कर रहीं हैं वो तो उनके पीछे प्लेटफॉर्म नंबर दो पर ही खड़ी है।

दूसरी तरफ उनके माता–पिता ट्रेन से उतर चुके थे। उन्होंने दाएं–बाएं देखा,उन्हें यह आश्चर्य हुआ कि खबर देने के बावजूद रेलवे स्टेशन पर कोई उन्हें लेने क्यों नहीं आया। आज तक ऐसा नहीं हुआ की जमाई राजा अपने सास–ससुर को स्टेशन लेने न आये। उन्होंने थोड़ी देर प्रतीक्षा की। इसके बाद अंततः उन्होंने एक ऑटो किराए पर लिया और सासू माँ के घर पहुंचे। जब मेरे ससुर जी ने उन्हें सासू माँ के बिना देखा तो वह हतप्रभ हुए और आश्चर्य से पूछा कि उनकी धर्मपत्नीकहाँ है? उन्होंने कहा कि उन्होंने तो उसे स्टेशन पर नहीं देखा। यह सुनकर वह बेचैन और अचंभित हो गये और तुरंत रेलवे स्टेशन की ओर दौड़ पड़े । स्टेशन पर पहुँचने के बाद, उन्होंने पूछताछ काउंटर से संपर्क किया और उनसे उनकी धर्मपत्नी के नाम की घोषणा करने का अनुरोध किया। यहाँ एक और गड़बड़ हुई वो यह कि जब उनके नाम की घोषणा हो रही थी तो

वह घोषणा में अपना नाम समझ ही नहीं पाई। जब मेरे ससुर जी को नाम घोषित होने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली तो वे निराश और चिंतित हो गए।

क्योंकि मेरी सासू माँ के माता –पिता जिस ट्रेन से आये थे वो तो प्लेटफॉर्म नंबर दो पर आयी थी तो वो उसी प्लेटफॉर्म पर उन्हें खोजने गए। लकिन वह वहां तो थीं नहीं। आखिरकार, उन्होंने उन्हें सभी प्लेटफार्मों पर खोजने का फैसला किया। उन्होंने प्लेटफॉर्म नंबर एक से शुरुआत की। फिर जब वो अपनी तलाश के आखिरी पड़ाव पर यानी प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर पहुंचे तो उन्हें अपनी मंजिल यानी उनकी धर्मपत्नी दिख गयीं। जैसे ही उन्होंने उन्हें प्लेटफॉर्म पर देखा, वे चकित रह गए और नाम की घोषणा पर कोई प्रतिक्रिया न देने पर उन्हें खूब डांटने लगे। सासू माँ ने भ्रमित होने का कारण समझाने की कोशिश की। लेकिन सब कुछ व्यर्थ था। ससुरजी सासू माँ की एक भी सुनने को तैयार नहीं थे। सासू माँ भी बहुत हैरान थीं कि आखिरकार उनसे ये गलती हो कैसे गयी। ऐसी गलती कैसे कर दी जो उनके लिए असंभव थी। वह यह मानने को तैयार नहीं थीं कि उनका कॉमन सेंस और सामान्य ज्ञान चूक गया। हालांकि भारतीय रेलवे ने उन्हें ऐसा सोचने पर मजबूर कर दिया था। इसलिए, वह रेलवे प्रबंधन को कोस रही थी और उनकी घोषणाओं के तरीके की निंदा कर रही थी जिसके कारण वह अपना नाम नहीं पहचान पाईं। एक और बड़ी बात यह है कि इसी के कारण उन्हें बेकार में ही अपने पति की नाराजगी का शिकार भी होना पड़ा।

जल है तो कल है ।

भरत कुमार शर्मा
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, रांची

जल धरती का सबसे अमूल्य व महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जल की वजह से ही इस धरती पर जीवन संभव है जिसमें हम इंसान,पेड़–पौधे, जीव जंतु का जीवन आश्रित है। धरती के कुल क्षेत्रफल में से 70 प्रतिशत भूभाग पर जल विस्तृत है। उनमें से 97 प्रतिशत सागरों और महासागरों में है जो नमकीन है जो पीने योग्य नहीं है केवल 3 प्रतिशत पानी ही पीने योग्य है जिनमें से 2.4 प्रतिशत ग्लेशियरों और उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव में जमा हुआ है और केवल 0.6 प्रतिशत पानी नदियों, तालाबों और अन्य जल स्त्रोतों में है जिसका इस्तेमाल हम पीने के लिए करते है। उपयोग एवं इस्तेमाल के लिए प्रभावी रूप से उपलब्ध जल की मात्रा बहुत ही कम है जो नदियो झीलों और भूजल के रूप में उपलब्ध है। अधिकांश जल का उचित इस्तेमाल न होने के कारण और जल की उपलब्धता की विषमता होने के कारण जल संसाधन एवं प्रबंधन की आवश्यकता होती है। धरती पर जल का स्त्रोत वर्षा है जिससे प्राकृतिक रूप से जल चक्र द्वारा धरती पर जल की आपूर्ति तथा जल संतुलन बन रहता है।

एक अनुमान के अनुसार एशिया का मध्यपूर्व क्षेत्र, उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश क्षेत्र, पाकिस्तान, तुर्की, अफगानिस्तान और स्पेन आदि देश 2040 तक अत्यधिक जल तनाव की स्थिति होने की संम्भावना है। जल संकट से सर्वाधिक ग्रसित देश कत्तर, इजराइल, लेबनान, ईरान, जोर्डन, लीबीया, कुवैत, सउदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इरीट्रिया, सैन मीरनो, भारत, पाकिस्तान तुर्कीमिस्तान, ओमान आदि देश है।

दक्षिण अफ्रीका का केपटाउन शहर में पानी के उपयोग को सीमित और प्रबंधित करने हेतु सभी लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डे जीरो के विचार को पेश किया गया था। ताकि जल के उपयोग को सीमित करने संबधी प्रबंधन और जागरूकता को बढ़ावा दिया जा सके। भारत के अधिकांश क्षेत्र मानसून वर्षा पर ही आश्रित हैं। पिछले कई वर्षों से कमजोर मानसून के कारण लगभग 330 मिलियन लोग लगभग एक चौथाई जनसंख्या गंभीर सूखे से प्रभावित हैं। भारत में लगभग 50 प्रतिशत क्षेत्र सूखे की स्थिति से जूझ रहे हैं विशेषरूप से पश्चिमी तथा दक्षिणी राज्यों में जल संकट की गंभीर स्थिति है।

जल संकट के परिणामः–

1. खाद्य सुरक्षा– कृषि क्षेत्र में अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है तथा खाद्य सुरक्षा की कुंजी है।

2. जल संघर्ष और प्रवासन– जल की कमी से आजीविका का संकट उत्पन्न होगा जो प्रवासन को बढ़ावा देगा।

3. आर्थिक अस्थिरता– देश की जी. डी. पी. प्रभावित होगी, आर्थिक समस्या उत्पन्न होगी।

4. जैव विविधता का हानि– जल संकट से पेड़–पौधों को नुकसान पहुँचने के साथ ही जीव–जंतु पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

हमें अगर अपने कल अर्थात आने वाले पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित रखना है तो जल को संरक्षित करने की जरूरत है। इसमें सिर्फ सरकारी प्रयास ही काफी नहीं होगा अपितु जनभागीदारी के द्वारा ही यह संम्भव हो पाएगा। पिछले कुछ वर्षो से जल संरक्षण तथा जल का समुचित उपयोग की प्रति सरकारी प्रयास तेज हुए है जिसमें Per Drop Per Crop, हर घर जल आदि योजनाओं के द्वारा जल को संरक्षित करना है।

सतत् विकास लक्ष्य 6 के तहत 2030 तक सभी लोगों के लिए पानी की उपलब्धता और स्थायी प्रबंधन सुनिश्चित किया जाना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए जल संरक्षण के निम्न प्रयास किए जा रहे हैं :–

- वर्तमान समय में कृषि गहनता के कारण जल के अत्यधिक प्रयोग को कम करने हेतु कम पानी वाली फसलों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- द्वितीय हरित क्रांति में कम जल गहनता वाली फसलों पर जोर दिया जा रहा है।
- रेन वाटर हार्वेस्टिंग द्वारा जल का संरक्षण।
- वर्षा जल को संरक्षित करने हेतु सतह पर संग्रहित करने के लिए टैंको, तालाबों तथा चौक डैम आदि की व्यवस्था।
- झीलों, नदियों और समुद्रों जैसे प्राकृतिक जल स्त्रोत काफी महत्वपूर्ण हैं। ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र दोनों ही विभिन्न जीवों की विविधता के घर है और इन पारिस्थितिकी तंत्रों के समर्थन के बिना ये जीव विलुप्त हो जाएंगें। इसलिए प्राकृतिक जल निकायों को संरक्षित करना तथा जल के प्रत्येक बूंद का समुचित उपयोग के साथ संरक्षित करना भी आवश्यक है।

क्रिप्टो करेंसी एवं ब्लॉकचैन माइनिंग

विकास कुमार
सहायक खान नियंत्रक
भारतीय खान ब्यूरो, गुवाहाटी

पिछले काफी समय से दुनियाभर में क्रिप्टो करेंसियों का चलन बढ़ा है। भारत में केंद्र सरकार और रिजर्व बैंक का मत यह रहा कि क्रिप्टो करेंसियां गैर कानूनी हैं, इसलिए इनके लेन–देन को कानूनी मान्यता नहीं दी जा रही थी। रिजर्व बैंक ने एक सूचना जारी कर बैंकों को क्रिप्टो करेंसी के लेन–देन से दूरी बनाने और अपने ग्राहकों को आगाह करने को कहा, तो सर्वोच्च न्यायालय ने यह फैसला सुनाया कि चूंकि सरकार ने इन्हें गैर कानूनी घोषित नहीं किया है, इसलिए बैंकों को दी गयी यह हिदायत कानूनन ठीक नहीं है।

क्रिप्टो एक नयी कंप्यूटर टेक्नॉलॉजी 'ब्लॉकचेन' की देन है। इस तकनीक का अभी तक अनुभव यह रहा है कि वर्तमान में चल रही क्रिप्टो करेंसियों के उद्‌गम, निर्माता आदि का कुछ पता नहीं चलता। यदि कोई व्यक्ति गैर कानूनी रूप से क्रिप्टो प्राप्त करता है, तो उसका पता नहीं लगाया जा सकता। तकनीकी विकास एक निरंतर प्रक्रिया है। इस संदर्भ में ब्लॉकचेन तकनीक के कई अभूतपूर्व फायदे हैं। इसका उपयोग कर स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, भूमि रिकार्ड सहित कई नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाया जा सकता है।लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इस टेक्नॉलॉजी के नाम पर क्रिप्टो को अपनाना भी जरूरी है?

क्रिप्टो समर्थकों का कहना है कि 'ब्लॉकचेन' तकनीक का भरपूर लाभ उठाने और इसके विकास को गति देने के लिए क्रिप्टो करेंसी की माइनिंग एक प्रोत्साहन के रूप में कार्य करती है। इसलिए उनका तर्क यह है कि क्रिप्टो और 'ब्लॉकचेन' टेक्नॉलॉजी को अलग नहीं किया जा सकता, लेकिन टेक्नॉलॉजी के समर्थक, पर क्रिप्टो के विरोधियों का तर्क है कि 'ब्लॉकचेन' तकनीक का उपयोग करने के लिए क्रिप्टो की जरूरी शर्त नहीं होनी चाहिए। यह सही है कि किसी भी कार्य के लिए प्रोत्साहन जरूरी है, लेकिन वह विधिसंगत और नैतिक रूप से सही होना चाहिए। वर्तमान क्रिप्टो करेंसियां यह शर्त पूर्ण नहीं करतीं।

क्रिप्टो करेंसियों की कीमत में लगातार होते उतार–चढ़ाव और बढ़ती कीमत के कारण युवा इसकी तरफ आकर्षित हो रहा है। यह एक अंधे कुएं की तरह है, जहां पैसा कहां और किसकी जेब में जा रहा है, किसी को नहीं मालूम। यदि यह पैसा देश के विकास में लगे, हमारे युवा उद्योग–धंधे में लगाएं, तो हमारी जीडीपी में खासा फायदा हो सकता है। कहा जा रहा है कि पिछले कुछ समय से देश में पूंजी निर्माण कम हो रहा है। यदि ऐसी आभासी कथित संपत्ति में पैसा लगाने की प्रवृत्ति बढ़ी, तो यह निवेश और अधिक कम हो सकता है।

क्रिप्टो एक ऐसी मूल्यवान आभासी संपत्ति है, जिसके धारक को तो उसका पता होता है, लेकिन किसी अन्य को इसका पता तभी चलता है, जब इसमें बैंक के माध्यम से लेन–देन होता है। हालांकि घोषित लेन–देन के बाद इस पर आयकर लगाया जा सकता है, लेकिन यदि इसकी बिक्री विदेश में हो, तो कर नहीं लगेगा। वास्तव में क्रिप्टो एक वैधानिक संपत्ति नहीं है, इसे किसी कंपनी या व्यक्ति की बैलेंसशीट में नहीं दिखाया जा सकता। इस प्रकार क्रिप्टो आयकर, जीएसटी एवं अन्य करों की चोरी का माध्यम बन रही है।

क्रिप्टो का उपयोग अपराधियों, आतंकवादियों, स्मगलरों, हवाला में लगे लोगों द्वारा किया जा रहा है। हाल में पूरी दुनिया में जब साइबर अपराधियों ने कई कंपनियों का डाटा वापस देने के लिए फिरौती बिटक्वाइन में मांगी थी, तब इससे बिटक्वाइन के आपराधिक इस्तेमाल की बात सामने आ गयी।क्रिप्टो करेंसी को करेंसी कहना ही गलत है। करेंसी का अभिप्राय है सरकार की गारंटीशुदा, केंद्रीय बैंक द्वारा जारी मुद्रा। क्रिप्टो करेंसी निजी तौर पर जारी आभासी सिक्के हैं, जिनकी कोई वैधानिक मान्यता नहीं है।

क्रिप्टो समर्थक भी यह मानते हैं कि क्रिप्टो का विनियमन जरूरी है,लेकिन उनका कहना है कि क्रिप्टो को मान्यता देकर विनिमयन हो। क्रिप्टो विरोधियों में से भी एक वर्ग ऐसा है,जो मानता है कि हालांकि इसके विनियमन में ही भलाई है, क्योंकि प्रतिबंध को प्रभावी नहीं किया जा सकता, लेकिन एक वर्ग यह भी मानता है कि क्रिप्टो को गैर कानूनी गतिविधियों को बढ़ावा देने के चलते प्रतिबंधित करना चाहिए और यह संभव है। क्रिप्टो प्रतिबंधित करते हुए इसकी अंतर्निहित तकनीक से कोई परहेज नहीं होना चाहिए। 'ब्लॉकचेन' तकनीक का उपयोग तो तब भी किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी के विकास को प्रोत्साहन सरकारी डिजिटल करेंसी के माध्यम से किया जा सकता है। ऐसी करेंसी घरेलू लेन–देन में इस्तेमाल तो हो ही सकती है, साथ ही इसकी वैश्विक मांग भी हो सकती है।

जंगल की रानी - बाघिन

जी.एस. सोनेकर
सहायक खनिज अर्थशास्त्री
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

दोस्तों, गर्मी का मौसम यानि शादियों की सौगात। शादियों में दुल्हा–दुल्हन को आशीर्वाद देने जाना पड़ता है। रिश्तेदारों से मिलना भी होता है और उनसे हँसी–खुशी से बातें होती हैं। शादी के बहाने हमें घूमने को मिलता है। अच्छी बुरी बातें सुनने को मिलती हैं। चलना, मिलना, बातें करना इसका ही नाम जिन्दगी है।

इसी शादी के सिलसिले में मैं पिछली गर्मी के मौसम में चन्द्रपुर गया था। वहां अनेक रिश्तेदारों से मीठी–मीठी बातें हुई थीं। ऐसे ही एक नजदीक के रिश्तेदार से बातें हो रही थीं। बातों–बातों में उन्होंने कहा था कि इस बुद्ध पूर्णिमा की रात मैंने तोड़ोबा जंगल के मचान में बितायी थी, वहां मुझे बहुत अच्छा लगा, मन को खुशी मिली। एक अलग वन अनुभव मिला। ये बातें सुनकर मुझ जैसे जंगल प्रेमी को उस पर गुस्सा आया। पर गुस्सा दबाते हुए मैंने उनसे कहा– 'आपने मुझे साथ में बुलाया रहता तो मैं भी आ सकता था।' मेरी चाहत देखकर वे बोले ''अगली बार मैं और आप बुद्ध पूर्णिमा के दिन जरूर जंगल की मचान पर मिलकर बैठेंगे। पर जरूर आना।'' मैंने कहा, 'मैं कोई भी हालत में आपके साथ आऊँगा, आप जिस जंगल में ले जाओगे, वहां आऊँगा।'' उस शादी से मैं खुशी से घर लौटा।

एक साल बीत गया था, मतलब कि अगली बुद्ध पूर्णिमा सिर्फ चार दिन दूर थी। मुझे पिछली गर्मी के मौसम की पुरानी बातें याद आईं। मैंने उस नजदीक के रिश्तेदार को फोन किया और पूछा कि जंगल में जाने की और मचान पर बैठने की कुछ योजना है क्या? उन्होंने कहा, ''मेरी बातें एक कर्तव्यनिष्ठ वन अधिकारी से हो गयी है। उन्होंने हमें बुद्ध पूर्णिमा के दिन दोपहर को सीधे ताड़ोबा वन विभाग कार्यालय में पहुंचने के लिए बोला है। मैं उस दिन आपको वहीं मिलूंगा।'' मुझे इतनी खुशी हुई थी कि आनंद मन में न समा रहा था। उस दिन मैं एक किताब पढ़ रहा था। उस किताब में लिखा भगवान बुद्ध का उपदेश मेरे पढ़ने में आया था। भगवान बुद्ध ने कहा था कि ''मनुष्य ने अपने पंचेन्द्रिय की ओर ध्यान देना चाहिए और अपने पंचेन्द्रियों को निर्मल आनंद देना चाहिए। मनुष्य ने असत्य की राह त्याग कर सत्य की राह पर चलना चाहिए। इसी उपदेश का पालन करने हेतु मैंने मेरे पंचेन्द्रियों को निर्मल आनंद देने हेतु बुद्ध पूर्णिमा के दिन जल्दी उठकर अपनी तैयारी पूरी की और बस से दोपहर दो बजे उस बताए हुए वन विभाग पहुंचा। वहां जाकर मैं वहां के वन अधिकारी से मिला और कहा मैं आज बुद्ध पूर्णिमा की रात को जंगल की मचान पर बैठकर जंगली पशुओं की गिनती भी करूंगा। वह अधिकारी बोले, अच्छी बात है। पर अभी दो बजे हैं, आप चार बजे यहां पहुंचना।' मैंने कहा 'मैं जरूर चार बजे आऊँगा ।' उस वन विभाग के बाहर आकर मैंने अपने रिश्तेदार को फोन लगाया और बोला कि मैं यहां पहुंच गया हूं। आप जल्दी यानि बराबर चार बजे यहां पहुंच जाओ। वह रिश्तेदार बोला मैं बराबर चार बजे तक वहां पहुंच जाऊँगा। मैं एक घने झाड़ के नीचे बैठकर आराम कर रहा था। बैठे–बैठे थोड़ी नींद भी लग गई थी। नींद में फोन बजा, मैंने फोन पर बात की। वह रिश्तेदार बोले मैं वन विभाग पहुंच गया हूं। आप यहां जल्दी आ जाओ। मैं हाथ–पांव धोकर उस वन विभाग कार्यालय पहुंचा। चार सवा चार बजे वन अधिकारी कार्यालय से बाहर आए। उन्होंने ड्राईवर को वन विभाग की जिप्सी गाड़ी लाने को कहा। ड्राईवर जिप्सी गाड़ी लेकर

हमारे पास पहुंचा। वन अधिकारी ने हमें गाड़ी के पिछले सीट पर बैठने को कहा और अधिकारी सामने की सीट पर बैठे। वन अधिकारी ने ड्राईवर को गाड़ी निकालने को कहा और गाड़ी जंगल की ओर चल पड़ी। गाड़ी जंगल के पास पहुंच रही थी तभी वन अधिकारी साहब ने कहा 'हम आपको प्रथम शाम को खाना खिलाएंगे और बाद में जंगल की मचान पर बैठाएंगे।' मुझे भूख लगी थी और उसलिए उनकी वह खाने की बात सुनकर बड़ी खुशी हुई। वन अधिकारी ने गाड़ी को प्रथम नर्सरी के पास ले गए। मैंने कहा 'साहब, गाड़ी नर्सरी के पास क्यों ले आये।' साहब ने कहा, इस नर्सरी में एक बाघ रोज इस समय आ रहा है और अभी आया होगा तो हमें देखने को मिलेगा। साहब ने नर्सरी के चौकीदार को आवाज दिया– 'राजू, आज बाघ नर्सरी में आया है क्या?' चौकीदार बोला – 'नहीं साहब, आज बाघ नहीं आया।' हमारी गाड़ी वहां से चल पड़ी और जंगल की संकरी, टेढ़े–मेढ़े रास्तों से आगे बढ़ गई। आधे घंटे का सफर याने जंगल सफारी करने के बाद मेरे रिश्तेदार बोले 'वो देखो मेरी मचान, इसी मचान पर पिछले साल बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं बैठा था। वो देखो, मचान के बराबर सामने पानी। पर उस पानी में बाघ नहीं आया।' वन अधिकारी ने ड्राईवर को गाड़ी पानी के पास रोकने को कहा। गाड़ी पानी के पास रूक गई। मैंने उस मचान को देखा और कहा, 'मचान तो अच्छी है, ऊँची भी है और सबसे महत्वपूर्ण बात वह पूरी तरह से सुरक्षित है। कोई भी जंगली जानवर मचान पर नहीं आ सकता।' मेरे रिश्तेदार पानी की ओर देख रहे थे और बोल रहे थे, मैं पूरी रात जागते रहा पर कोई भी जंगली जानवर पानी पीने नहीं आया। सिर्फ हिरण को छोड़कर। साहब, आज हमें अच्छी मचान पर बैठाना ताकि हमें बाघ दिख जाए। साहब बोले, जरूर मैं आपको अच्छी मचान पर बिठाऊँगा। मेरी नजर में एक जगह है। इस जंगल में वहां बाघिन का बच्चा अकेला हमें मिला था। हम तीन–चार घंटे उस बच्चे के पास खड़े रहे पर बाघिन बच्चे के पास नहीं आयी। आखिर हमने उस बच्चे को उठाकर पशु चिकित्सालय याने जंगली जानवरों के दवाखाने में ले गए। वहां पशु चिकित्सक ने उसकी जांच की। वहां दूध पिलाया। बाद में शाम को उस बच्चे को उसी जगह पर पहुंचा दिया। और एक अनोखी बात हुई। बच्चे की आवाज सुनकर बाघिन वहां आयी और बच्चे को मुंह में पकड़कर ले गई। वह बाघिन आज वहां हो सकती है। और उसी जगह की मचान पर आपको हम बैठाने वाले हैं।' हम चारों वहां बातें कर रहे थे, तभी मेरे रिश्तेदार की नजर मचान के सामने वाले उस पानी पर गई, रिश्तेदार बोले – 'ये पानी शांत नहीं है। यह हिल रहा है। यहां कोई भी जानवर बैठा नहीं दिखाई दिया और देखो, वह पानी गिरते हुए आगे भी दिख रहा है। जरूर हम लोगों के आने के पहले यहां इस पानी में एक जंगली जानवर बैठा होगा और अपनी गाड़ी की आवाज सुनकर पानी से उठकर आजू–बाजू चला गया होगा। जानवर ज्यादा दूर नहीं गया होगा।' हम चारों गाड़ी के दाहिनी ओर जानवर को ढूंढ़ रहे थे तभी वन अधिकारी धीरे से बोले ''आगे देखो, गाड़ी के सामने बाघिन खड़ी है। पूरी गीली है। शरीर से पानी गिर रहा है। यही इस पानी से बाहर आयी है। देखो–देखो, वह अपनी ओर गुस्से से देख रही है। देखो, उसकी बड़ी–बड़ी आंखे, वह मुंह भी खोल रही है। मुझे लगता है कि ये अपनी गाड़ी पर हमला करने की शायद सोच रही है और हमला कर सकती है। ड्राईवर गाड़ी पीछे लो।' ड्राईवर ने वन अधिकारी से कहा 'पहले कैमरे से इसका फोटो खींचते हैं, बाद में गाड़ी पीछे करते हैं।' साहब बोले, ठीक है। जल्दी चार–पांच फोटो निकाल लो। आफिस में सबको दिखा देंगे। बाघिन हमारी तरफ एकटक देख रही थी। वह अपनी जगह से हटी नहीं थी। ड्राईवर गाड़ी पीछे ले रहा था। उसी वक्त साहब बोले 'देखो बाघिन आंखें मिचल रही है। बंद–चालू कर रही है। इसका मतलब बाघिन ने हमें पहचान लिया है। अभी वह हमारी गाड़ी पर हमला नहीं करेगी। पर अब गाड़ी निकालो और उस जंगल की रानी बाघिन को अपनी जिंदगी जीने दो। उसे परेशान मत

करो।' हम तुरन्त वहां से निकले और जंगल की सैर करते–करते, सफारी करते हुए एक सूखे तालाब के पास पहुंचे। साहब ने ड्राईवर को गाड़ी वहां खड़ी करने को बोला और हमें नीचे उतरने को कहा। हम गाड़ी से बाहर आए। हमने वहां देखा कि वन मजदूर तालाब को खोदकर गहरा कर रहे थे। साहब ने वन मजदूरों से कहा ''सब इधर आओ, जल्दी खाना लगाओ और सभी लोग खाना खा लो। हम सबने हाथ धोकर नीचे बैठकर स्वादिष्ट खाना खाया। साहब ने हमें गाड़ी में बैठने को कहा। हम गाड़ी में बैठ गए। गाड़ी जंगल से जा रही थी। लगभग शाम के सात बजे थे। जंगल में अंधेरा छा रहा था। जंगल के रास्ते से जाते हुए हमें हिरण, भालू, रोही, चांदी भालू इत्यादि प्राणी देखने को मिले। बीच–बीच में जंगल में लगाए कैमरा टैप अंधेरे में चमक रहे थे। थोड़ी देर बाद हमारी गाड़ी एक मचान के पास रूकी। उस मचान पर दो वन कर्मचारी बैठे थे। उनसे साहब ने पूछा 'आपने अब तक कितने जानवर पानी पर देखे।' उन्होंने कहा 'यहां अभी पांच–छह हिरण और दो भालू पानी पीने आये थे और एक भालू इधर आ रहा है।' साहब ने हमसे कहा 'आपको भालू देखना हो तो इस मचान पर बैठ जाओ। यह भालू का इलाका है।' मैंने साहब से कहा, साहब यह मचान ऊँची नहीं है। सुरक्षित नहीं है। बाघ एक ही छलांग मारकर मचान पर आ सकता है। हमें दूसरी मचान की ओर ले चलो।' साहब ने ड्राईवर को वहां से गाड़ी निकालने को कहा और कुछ दस मिनट के बाद हम एक बड़ी मचान के पास पहुंचे। वहां तीन वन कर्मचारी मचान पर बैठे थे। साहब ने हमसे कहा 'आप दोनों गाड़ी से नीचे उतरो और तुरन्त इस मचान पर चढ़ जाओ। मचान ऊँची, मजबूत और सुरक्षित है और एक खास बात यह है कि यह जगह बाघ का इलाका है। मचान के नीचे रात को उतरना नहीं। इन लोगों के साथ रहना। सबेरे हम आपको लेने को आयेंगे।' इतना कहकर गाड़ी निकल गई। हमें लेने के लिये मचान से तीनों वन कर्मचारी नीचे उतरे ओर हमसे कहने लगे 'चलो ऊपर जल्दी, जंगल में अंधेरा ही अंधेरा है।' मैंने उनसे कहा 'मुझे नैसर्गिक क्रिया के लिए जाना है।' तब वह कर्मचारी बोले, ज्यादा दूर मत जाना। यहीं नजदीक बैठकर जल्दी आओ। मैं तुरन्त वहां से पन्द्रह–बीस फीट अंधेरे में गया और जल्दी वापस आया। फिर हम पांचों लोग उस मचान पर चढ़कर बैठे। उस समय रात के आठ बजे थे। मचान पर तीनों वनकर्मियों ने अपना–अपना खाना निकाला और बात करते करते खाना खा रहे थे। मैंने मन ही मन कहा, कैसे इन वनकर्मचारियों को शायद ये नहीं मालूम कि जंगल में मचान पर शांत बैठना पड़ता है। चुपचाप रहना पड़ता है। कितनी जोर से बातें कर रहे है। इस शोर से बाघ पानी पीने नहीं आयेगा। पर हम दोनों की मजबूरी थी, हमने उन्हें रोका नहीं। हम दोनों चुपचाप मचान पर बैठकर मचान के पास दस फीट दूरी पर पानी था उस ओर देख रहे थे। तभी अचानक बाघ ने जोर से दहाड़ लगाई। खाना खाने वाले वनकर्मचारी चुप हो गये। थोड़े डर गये। उन्होंने अपने खाने के डब्बे बंद किये और मचान के आगे से जो दहाड़ सुनने आयी, उधर सब देख रहे थे। उनमें से एक जन बोला 'अब शांत रहना, बाघ पानी पीने आ रहा है।' मैंने कहा – 'उस सामने वाली झाड़ी से आवाज आयी और उस झाड़ी में आंखें चमक रही हैं। मैं तो बच गया। मैं जो नैसर्गिक क्रिया के लिए उस झाड़ी के पास बैठा था और उस झाड़ी के पीछे ही बाघ भी बैठा था।' बाघ और हमारा अंतर लगभग अस्सी मीटर रहा होगा। उस झाड़ी में छुपकर बाघ हमें देख रहा था। हम चुपचाप बैठकर उस झाड़ी की ओर देख रहे थे। कुछ दस मिनट हो गये होंगे तो और जोर से बाघ ने दूसरी दहाड़ लगाई। हम मचान पर बैठे पांच पांडव के समान थे फिर भी डर गए थे। हम सब अंधेरे में उस बाघ को ढूंढ़ रहे थे तभी पांच मिनट बाद उन झाड़ियों से गुरगुराते हुए बाघ बाहर आया और बिना डरे हमारी ओर आ रहा था। हम उसे देख रहे थे। तुरन्त बाघ ने अंधेरे का सहारा लिया और बड़े झाड़ों के बीच से, हमारे मचान के पास पानी पीने आया। मचान के पास पानी होने से बाघ की पानी पीने की आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बाघ ने एक दो–मिनट नहीं, पर

लगभग आठ–नौ मिनट पानी पीया, इससे हमने अनुमान लगाया कि कितने समय से वह बाघ प्यासा होगा। मचान के पास बाघ पानी पी रहा था पर हमारी हिम्मत उसे ऊपर से झुककर देखने की नहीं हुई। हमें लग रहा था कि बाघ पानी पीने के बाद हमारी मचान के नीचे बैठेगा और आराम करेगा। हम चुपचाप मचान पर बैठे थे। कोई हिला नहीं। तभी कुछ क्षणों के बाद वह बाघ वापस जाते हुए दिखा। एक वन कर्मचारी ने मुझसे कहा ''साहब आपके पास तो टार्च है, जल्दी उस बाघ पर मारो। मैं टार्च लेकर तैयार ही था। मैंने तुरन्त टार्च चालू की। टार्च के प्रकाश में बाघ अच्छी तरह दिख रहा था। इस प्रकाश में बाघ की चाल देखने को मिली। प्रकाश पड़ते ही बाघ अचानक रूक गया और हमारी ओर मुड़कर देखने लगा। तभी एक वनकर्मचारी बोला ''यह बाघ नहीं बाघिन है। बाघिन की चाल तो देखो और उसका चेहरा देखो, बाघिन देखने में उम्दा और खूबसूरत है। यह तो जंगल की रानी है। तेज नजर से अपनी ओर देख रही है। टार्च मारने से बाघिन को गुस्सा आया होगा तो कभी भी अपने मचान पर हमला कर सकती है। हमें पूरी रात सावधानी से बितानी पड़ेगी। अब मचान पर सोना भूल जाओ। अपना ध्यान बाघिन पर ही केन्द्रित करना पड़ेगा। उसने हम लोगों को मचान पर देखा है। वह हमें छोड़ेगी नहीं। जल्दी टार्च बंद कर दो।''टार्च बंद करने के बाद बाघिन झाड़ी के दाहिने ओर चली गई पर जाते–जाते हमारा डर बढ़ा गई।

तभी लगभग बारह बजे अचानक तेज हवा चलने लगी। जंगल में पेड़–पौधे जोर से हिल रहे थे। दूर बिजली भी चमक रही थी। तुफ़ानी हवा से हमारी मचान हिलने लगी थी। हम डर गये थे। ऐसा लग रहा था कि मचान गिर सकता है। तभी तेज हवा आगे निकल गई ओर हवा शांत हो गई। जंगल भी शांत हो गया। चमकने वाली बिजली भी दूर निकल गई थी। उसी वक्त यानि लगभग आधे घंटे बाद वन अधिकारी साहब गाड़ी लेकर हमारे मचान के पास पहुँचे और कहने लगे ''जल्दी नीचे उतरो और गाड़ी में बैठो, वापस जाना है। आज का मौसम खराब है। आज पूर्णिमा है और पूर्णिमा के दिन तेज हवा चलती है। जंगल के बाजू के गांव में जोरों से बारिश हुई है। आपको खतरा है। इसलिए हम गाड़ी लेकर आये हैं।'' मैंने कहा ''साहब बहुत–बहुत धन्यवाद, आप गाड़ी लेकर आए, नही तो ऐसे मौसम में पूरी रात मचान पर काटना कठिन था। उसका हमें अद्‌भुत दर्शन हुआ। आज बुद्ध पूर्णिमा के दिन हमें दो बाघिनों का अच्छी तरह से दर्शन हुआ और वह भी बहुत नजदीक से। हम गाड़ी में बैठ गये। साहब ने ड्राईवर को गाड़ी निकालने को बोला और हमसे कह रहे थे ''बाघिन जंगल की रानी है। वह गुस्सा नहीं करती। उसका गुस्सा जल्दी शांत होता है। बाघ भी इस जंगल की रानी का आदर–सम्मान करते हैं। एक बाघ के साथ दो–तीन बाघिन प्यार से रहती हैं। आपके मन में बाघिन के प्रति डर है तो उसे निकाल दो। देखो, पहले देखें बाघिन ने हम पर हमला नहीं किया। वैसे दूसरे बाघिन ने भी हमला नहीं किया। बाघिन प्यार देने वाले को प्यार ही देती है। पर बाघिन को परेशान किया तो वह बहुत आक्रमक हो जाती है और हमला करने के लिए आगे पीछे नहीं देखती। इन बाघिनों ने अभी तक किसी भी आदमी को मारा नहीं है। बाघिन यहां है इसलिए जंगल सुरक्षित है और हम विभाग के लोग भी सुरक्षित हैं। साहब की बातें सुनते–सुनते, गाड़ी ने हमें जंगल के बाहर यानि कि वन विभाग कार्यालय के पास उतार दिया। हमने साहब के बंगले में तीन–चार घंटे बिताये और सुबह तैयारी करके निकले। हमने साहब को एक बार और धन्यवाद बोला और सुबह के छह वाली बस से घर प्रस्थान कर गए। इस तरह वन अधिकारी की बातों से और जंगल की रानी–बाघिन का दर्शन होने से मैं बहुत खुश था। इस बुद्ध पूर्णिमा की रात में, शरीर के पंचेन्द्रिय को एक अलग आनंद मिला है। वह रात मैं नहीं भूल पाऊँगा। वह मेरे जंगल अनुभव की जीवन की अविस्मरणीय रात रही।

आपदा प्रबंधन

संजय आर. डोंगरे
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, हिंगणा, नागपुर

जैसा कि हम लोग जानते हैं कि विश्व के सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए हैं, जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है, औद्योगिक एवं तकनीकी क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ है। इससे मानव जीवन अधिक सुखी एवं समृद्ध बना। परन्तु इसके पश्चात् मानव जीवन पर अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न हुए हैं। हर पल मानव इन आपदाओं से अपने को असुरक्षित महसूस करता है। तो जानते हैं कि आपदा प्रबंधन क्या है?

आपदा समाज के सामान्य कार्य प्रणाली को बाधित करता है, इससे बहुत बड़ी संख्या में लोग प्रभावित होते हैं। आपदा के कारण जीवन तथा संपत्ति की बड़ी हानि होती है। आपदाएं कठिनाईयाँ पैदा करती हैं जिससे राष्ट्र का विकास कई वर्ष पीछे चला जाता है। भारत जैसे विकासशील देश में आपदाओं के फलस्वरूप जनहानी और संपत्तियों को नुकसान पहुँचता है।

आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005: 28 नवम्बर 2005 को राज्यसभा द्वारा एवं 23 दिसम्बर 2005 को लोकसभा द्वारा पारित एवं इसी दिन भारत के राष्ट्रपति द्वारा सहमति प्राप्त हुई। वैसे तो आपदा प्रबंधन के कुल 11 अध्याय हैं। यह अधिनियम संपूर्ण भारत में लागू है, जिसे राज्य एवं केन्द्र सरकार किसी भी आपदा की स्थिति में इसे लागू कर सकती है।

आपदाओं के प्रकार :– भारत में कई तरह के संकट देखें गए हैं जो हमारे लिए व्यापक चिंता का कारण है जिन्हें हम 2 वर्गों में बांटते हैं :–

1. **प्राकृतिक आपदाएं :** सूखा, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, सूनामी आदि आपदाएं हैं जो प्रकृति में विस्तृत रूप से घटित होते रहते हैं और जिनका प्रभाव विनाशकारी होता है। इन प्राकृतिक घटनाओं में मानव का किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं होता है। इन प्राकृतिक घटनाओं का पुर्वानुमान लगाना बहुत ही मुश्किल है।

सूखा: सूखा एक प्राकृतिक आपदा है। जल मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। जल के बिना मानव जीवन की कल्पना करना बेकार है। ऐसा क्षेत्र जहाँ पर 25 प्रतिशत से कम वर्षा होती है उसे सूखे क्षेत्र के अंतर्गत समावेश किया जाता है। निरंतर दो वर्षों तक होने वाली वार्षिक वर्षा को अत्यधिक श्रेणी में रखा जाता है। कई पशु–पक्षी एवं अन्य प्राणी सूखे के कारण प्यासे मर जाते है। आज भी भारत में कई क्षेत्रों में सूखे की स्थिति बनी हुई है। इसका आरंभ धीरे धीरे होता है तथा उस क्षेत्र के सभी प्राणियों पर अनक वर्षों तक इसका दुष्प्रभाव रहता है।

प्रबंधन एवं उपाय: सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है कि जल संरक्षण को बढावा देना, नए तालाबों एवं कुओं का निर्माण तथा नदियों के पानी को बांध बनाकर सूखे क्षेत्रों तक पहुँचाना। जलापूर्ति बढ़ाने हेतु घरों तथा किसानों के खेतों में वर्षा के पानी को संग्रहित करना जिससे उपलब्ध पानी की मात्रा बढ जाती है।

बाढ़: बाढ़ एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जिससे एक बड़े हिस्से में पानी भर जाता है और उस पानी से जन धन का अपार हानी होती है। नदियों में भारी वर्षा के कारण तेज बहाव की वजह से बांधों के टूटने से विशाल क्षेत्रों में बाढ़ आती है। इस आपदा से निपटने के लिए और पुनः अपने जीवन को पुर्नस्थापित करने में कई माह लग जाते हैं।

प्रबंधन एवं उपायः नदियों की ऊपरी क्षेत्र में ज्यादा बांध बनाए जाएं। वह स्थान जहाँ जल संग्रह हो रहा है वहाँ वृक्षारोपण से उस जगह की तटों को काफी मजबूत बनाए जाएं। बांधो पर मानवों के अतिक्रमण पर रोक लगाई जाए। तीव्र ढलान वाले क्षेत्र में नदियों पर अनेक नहरों का निर्माण कर बाढ़ के खतरे को कम किए जाएँ। पेड़ों की कटाई से संबंधित कानूनों में ज्यादा कठोर दण्ड के प्रावधान किए जाएँ।

भूकम्पः भूकम्प किसी भी समय अचानक बिना किसी पूर्व चेतावनी के आता है। पृथ्वी के सतह से कई किलोमीटर नीचे गर्मी के कारण प्लेटों के एक जगह से दूसरे जगह खिसकने के कारण ही भूकम्प का निर्माण होता है। भूकम्प का केन्द्र पृथ्वी की सतह से कई किलोमीटर नीचे होने के बावजूद भी यह सतह पर काफी विनाशकारी प्रभाव लाती है।

प्रबंधन एवं उपायः सरकारों ने अलग अलग भूकम्प प्रभावी क्षेत्रों के लिए अलग अलग प्रकार के भूकम्प रोधी घर को बनाने के लिए दिशा–निर्देश जारी कर रखा है। भूकम्प से होने वाली क्षति से बचाव हेतु सरकार के दिशा–निर्देशों का अवश्य पालन करना चाहिए।

भूस्खलनः चट्टानी मिट्टी अथवा मलबें के ऐसे ढेर जो स्वयं अपने भार के जोर से पहाड़ों की ढलान अथवा नदियों के किनारों पर आ जाते हैं, वह भूस्खलन कहलाता है। भूस्खलन धीरे–धीरे होते रहते है। इसका पूर्वानुमान लगाना बहुत ही कठिन है। भूस्खलन के लिए प्रमुखता से भूकम्प, बाढ़ और चक्रवात की स्थितियाँ उत्तरदायी होती है, पहाड़ी क्षेत्रों में मानव द्वारा रास्तों के निर्माण करने अथवा कृषि के लिए खड़ी ढाल वाले क्षेत्र बनाना भी भूस्खलन को जन्म देता है।

प्रबंधन एवं उपायः पहाड़ी ढालों पर प्राकृतिक वनस्पती को बढ़ावा देना चाहिए। जहाँ वनस्पती नहीं है वहाँ वृक्षारोपन करना चाहिए। किसी भी बस्तियों के बसने से पहले भूस्खलन के क्षेत्रो का पता लगाना आवश्यक है। अधिक भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में बड़े निर्माण कार्य एवं विकास कार्य नहीं किए जाने चाहिए।

सूनामी : भूकम्प और ज्वालामूखी से समुद्र तल पर तरंगे पैदा होती है। ये जलतरंगे समुद्रों एवं महासागरों में सूनामी लहरों का निर्माण करती है। गहरे समुद्र में सूनामी से उत्पन्न होने वाली लहरों की लम्बाई अधिक एवं ऊँचाई कम होती है। सूनामी से समूद्र तटीय क्षेत्रों में भीषण हानि होती है, क्योंकि समूद्र का जल कभी शांत नहीं रहता, इसमें हलचल होना स्वभाविक है।

प्रबंधन एवं उपायः सूनामी अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तूलना में अधिक तीव्र गति की होती है। इसमें बड़े पैमाने पर जन धन की हानि होती है। सूनामी को रोका नहीं जा सकता है, परन्तु पहले से चेतावनी मिलने पर समूद्र तटीय क्षेत्रों को खाली कर देना ही उपाय है।

2. **मानव निर्मित आपदाएंः** आजकल देश में आतंकवादी गतिविधियों के अन्तर्गत अनेक मामलों में सार्वजनिक स्थानों, धार्मिक स्थलों या भारी भार वाले बाजारों में बम विस्फोट कर भारी मात्रा में जान माल की क्षति की जाती है। दो देश, एक दूसरे के विरूद्ध युद्ध में जैविक एवं रासायनिक हथियारों का प्रयोग कर एक दूसरे को अधिक से अधिक क्षती पहुंचाने की कोशिश करते हैं।

प्रबंधन एवं उपायः यदि कोई अज्ञात एवं संदिग्ध वस्तु बहुत देर से एक जगह पड़ी हो तो उसके आस–पास किसी को भी नहीं जाने देना चाहिए तथा यथाशीघ्र पुलिस को सूचना देना चाहिए।

रासायनिक गैस रिसाव भोपाल में घटने वाली अभी तक की सबसे विनाशकारी औद्यागिक रासायनिक आपदा है। इसमें 45 टन मिथाईल आईसो साईनेट नामक अत्यंत जहरीली गैस यूनियन कार्बाईड के कीटनाशक कारखानों से रात के 12 बजे के आस पास गैर रिस गई और हवा के साथ फैल गई। इससे लगभग 3 हजार के

आस पास लोगों को अपनी जान गवानी पड़ी और अनेक लोग सदा के लिए रोग पीड़ित हो गए। इसी प्रकार टिड्डी दल का आक्रमण, कीटों द्वारा फैलने वाले रोग, प्लेग, बर्ड फ्लू, डेंगू, कोरोना जैसी जैविक आपदाएं हैं। इसी प्रकार सड़क, रेल एवं विमान दुर्घटना भी मानव निर्मित आपदा ही है।

प्रबंधन एवं उपाय रू खतरनाक रसायनों के उपयोग तथा बचाव के तरीके से संबंधित जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना चाहिए। जहरीले पदार्थों के भंडार की क्षमता सीमित ही रखी जाए। इसी प्रकार जैविक आपदा पर नियंत्रण रखने हेतु सरकारों द्वारा समय समय पर जारी किए गए दिशा–निर्देशों का पालन करना चाहिए।

लम्हेटाघाट भारत का पहला भूवैज्ञानिक उद्यान है

अक्षय गुप्ता
लेखापाल
वेतन एवं लेखा अनुभाग, नागपुर

एक भूवैज्ञानिक पार्क एक एकीकृत क्षेत्र है जो भूवैज्ञानिक विरासत के संरक्षण और उपयोग को एक स्थायी तरीके से आगे बढ़ाता है और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए यूनेस्को की एक पहल है। ये भूवैज्ञानिक संरचनाओं के साथ–साथ मानव सभ्यता के विकास के अध्ययन में मील का पत्थर साबित होंगे। यह भूविज्ञान के अध्ययन और भूवैज्ञानिक विरासत के संरक्षण में मदद करता है। यह पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने और क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक भलाई के लिए भी मदद करता है। भूवैज्ञानिक पार्क अंतरराष्ट्रीय भूवैज्ञानिक महत्व के परिदृश्य है और विकास में स्थानीय समुदायों को शामिल करते हुए संरक्षण, शिक्षा और सतत विकास की समग्र अवधारणा के साथ और सतत्विकास के साथ संरक्षण के संयोजन के दृष्टिकोण के साथ प्रबंधित किये जाते है। 17 नवंबर 2015 को संगठन के 38वें आम सम्मेलन के दौरान यूनेस्को के 195 सदस्य राज्यों ने यूनेस्को वैश्विक भूवैज्ञानिक उद्यान के निर्माण की पुष्टि की। वर्तमान में 46 देशों में 177 यूनेस्को वैश्विक भूवैज्ञानिक उद्यान है।

भारत का पहला भूवैज्ञानिक पार्क मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में नर्मदा नदी के तट पर लम्हेटा गाँव में स्थापित होने जा रहा है, जिसकी घोषणा 29 जनवरी 2022 को जबलपुर से लोकसभा सांसद श्री राकेश सिंह जी ने की। संघ के तहत भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) खान मंत्रालय ने देश के पहले भूवैज्ञानिक उद्यान की स्थापना को मंजूरी दे दी है। भेड़ाघाट–लम्हेटाघाट प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए यूनेस्को की भू–विरासत स्थल की अस्थायी सूची में पहले से मौजूद है। भारत सरकार के भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) द्वारा उनके रख रखाव, संरक्षण, संवर्धन और भू–पर्यटन के संवर्धन के लिए भारत के 34 अधिसूचित राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक विरासत स्मारक स्थल अधिसूचित किए गए हैं। भारत में इन भूवैज्ञानिक स्थलों को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की काफी संभावनाएं हैं, जो पर्यटन उद्योग के विकास और स्थानीय लोगों के पारिस्थितिक कल्याण में मदद करेगा। इससे निकटवर्ती क्षेत्रों में रोजगार भी पैदा होगा।

विशेष रूप से जबलपुर के भेड़ाघाट– लम्हेटाघाट क्षेत्र में नर्मदा घाटी में कई डायनासोर के जीवाश्म पाए गए हैं। 1828 में विलियम स्लीमन द्वारा लम्हेटा बेड से पहला डायनासोर जीवाश्म एकत्र किया गया था। यह मास्ट्रिचियन युग (लेट क्रेटेशियस) का है और इन चट्टानों से टाइटानोसॉर, सॉरोपॉड, इसिसॉरस और एबेलिसॉरस, इंडोसॉरस, इंडोसुचस, लाईविसुचस और राजसॉरस के साथ–साथ स्तनधारियों, सांपों और अन्य जीवाश्मों सहित कई प्रजातियों के डायनासोर के जीवाश्म पाए गए थे।

नर्मदा घाटी को भूवैज्ञानिक, भू–तकनीकी, जलविद्युत और जीवाश्म विज्ञान की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसलिए भारत और दुनिया भर के विद्वानों ने भेड़ाघाट–लम्हेटाघाट के विविध पहलुओं का अध्ययन किया है। भेड़ाघाट एकमात्र ऐसा स्थल है जहां प्रोटेरोजोइक युग की चट्टानों के महाकोशल समूह के मार्बल, फाइलाइट, बीआईएफ, क्वार्टजाइट दर्ज किए गए हैं। विवर्तनिक रूप से नर्मदा घाटी पृथ्वी की पपड़ी का एक स्तरित खंड है जो पृथ्वी की पपड़ी के प्राचीन प्रसार के

कारण दोनों ओर के ब्लॉकों के सापेक्ष नीचे गिरा। नर्मदा नदी के मार्ग आकारिकी से संकेत मिलता है कि इसने अपना मार्ग बदल दिया है और अब एक अलग मार्ग में बहती है। भू–आकृति विज्ञान परिवर्तन इंगित करते हैं कि कैसे नर्मदा नदी 30 मीटर गहरी खाई में गिरती है जिसे धुआंधार जलप्रपात के रूप में जाना जाता है।

भारत में ऐसी कोई भी जगह नहीं है जो नदी के किनारे इतनी बड़ी और शानदार संगमरमर की चट्टानों की संरचनाओं और इस तरह की भौगोलिक विशेषताओं को दिखाती हो, जिससे सभी पवित्र आस्थाएं और मान्यताएं जुड़ी हुई हों। प्राकृतिक घटनाएँ भू–आकृति प्रक्रिया और झरनों की अतुलनीय सुंदरता जो यहां अनुभव की जा सकती है, वह बाकी की तुलना में अद्वितीय और उत्कृष्ट है। भूवैज्ञानिक उद्यान प्रकृति और प्राकृतिक, सांस्कृतिक विशिष्टताएं आर्थिक लाभ और जीवन की बेहतर गुणवत्ता को सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं। भू–पर्यटन दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए भूवैज्ञानिक उद्यान पारंपरिक सामग्रियों–खाद्य पदार्थों और जगह के लिए विशिष्ट रचना को अपनाकर खुद को सांस्कृतिक केंद्र में परिवर्तन कर सकते हैं।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भूवैज्ञानिक चट्टान संरचनाओं की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के लिए 130 करोड़ रुपये स्वीकृत किये हैं। भूवैज्ञानिक उद्यान की स्थापना मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा 35 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के साथ की जाएगी। इसे करीब 5 एकड़ जमीन पर बनाया जाएगा। मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद को जिला प्रशासन पहले ही 7 एकड़ भूमि आबंटित कर चुका है। भारत की भव्य घाटी भेड़ाघाट जो अपनी सफेद संगमरमर की चट्टान की संरचना के लिए जाना जाता है, में एक विज्ञान केंद्र भी बनाया जाएगा। विज्ञान केंद्र की स्थापना पर कुल 1520 करोड़ रुपये खर्च किए जाने हैं, जिसमें से 865 करोड़ रुपये राज्य सरकार और 655 करोड़ रुपये राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता, संस्कृति मंत्रालय द्वारा खर्च किए जाएंगे।

प्रकृति पर्यटन पर आधारित यह भूवैज्ञानिक उद्यान रोजगार प्रदान करेगा और जीडीपी और जीएनपी दोनों में योगदान देगा। भूवैज्ञानिक उद्यान स्थानीय समुदायों के विकास के लिए लाभकारी होने के साथ.साथ सतत विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं। यह स्थानीय लोगों और आगंतुकों को हमारे घर के बारे में समान रूप से शिक्षित करता है और उन्हें दिलचस्प सांस्कृतिक और विरासत अनुभवों की एक पूरी श्रृंखला के बारे में बताता है। भूवैज्ञानिक उद्यान सामाजिक लाभ की एक विस्तृत श्रृंखला लाते हैं जैसे कि हमारी पहचान की भावना को बढ़ाना और हमारे बच्चों के लिए शैक्षिक लाभ प्रदान करते हुए सभी प्रकार के लोगों को एक दूसरे के साथ सहयोग करना। आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित और उत्पन्न करके एक भूवैज्ञानिक उद्यान पर्यावरण संरक्षण से समझौता किए बिना स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेगा।

संस्कृत भाषा या संस्कृत दिवस का महत्व

मोहम्मद कासिम
वरिष्ठ तकनीकी सहायक (सर्वे)
भारतीय खान ब्यूरो, राँची

संस्कृत भाषा भारत देश की सबसे प्राचीन भाषा है, इसी से देश में दूसरी भाषाएँ निकली है। सबसे पहले भारत में संस्कृत ही बोली गई थी। आज इसे भारत के 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। उत्तराखंड राज्य की यह एक आधिकारिक भाषा है। भारत देश के प्राचीन ग्रन्थ, वेद आदि की रचना संस्कृत में ही हुई थी। यह भाषा बहुत सी भाषा की जननी है, इसके बहुत से शब्दों के द्वारा अंग्रेजी के शब्द बने है। महाभारत काल में वैदिक संस्कृत का प्रयोग होता है। संस्कृत आज देश की कम बोले जानी वाली भाषा बन गई है, लेकिन इस भाषा की महत्ता को हम सब जानते है, इसके द्वारा ही हमें दूसरी भाषा सीखने बोलने में मदद मिली, इसकी सहायता से बाकी भाषा की व्याकरण समझ में आई।

संस्कृत दिवस कब मनाया जाता है

भारतीय कैलेंडर के अनुसार संस्कृत दिवस सावन माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। संस्कृत दिवस की शुरुआत 1969 में हुई थी। रक्षाबंधन का त्यौहार भी सावन माह की पूर्णिमा को आता है, इसका मतलब राखी और संस्कृत दिवस एक ही दिन आता है।

संस्कृत दिवस मनाने का उद्देश्य

संस्कृत दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इसके मनाने का उद्देश्य यही है कि इस भाषा को और अधिक बढ़ावा मिले। इसे आम जनता के सामने लाया जाये, हमारी नयी पीढ़ी इस भाषा के बारे में जाने, और इसके बारे में ज्ञान प्राप्त करे। आजकल के लोगों को लगता है, संस्कृत भाषा पुराने जमाने की भाषा है, जो समय के साथ पुरानी हो गई, इसे बोलने व पढने में भी लोगों को शर्म आती है। लोगों की इसी सोच को बदलने के लिए इसे एक महत्वपूर्ण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संस्कृत भाषा का महत्व

संस्कृत भाषा बहुत सुंदर भाषा है, यह कई सालों से हमारे समाज को समृद्ध बना रही है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के विरासत का प्रतीक है। यह ऐसी कुंजी है, जो हमारे प्राचीन ग्रंथों में और हमारे धार्मिक–सांस्कृतिक परंपराओं के असंख्य रहस्यों को जानने में मदद करती है। भारत के इतिहास में सबसे अधिक मूल्यवान और शिक्षाप्रद सामग्री, शास्त्रीय भाषा संस्कृत में ही लिखे गए है। संस्कृत के अध्ययन से, विशेष रूप से वैदिक संस्कृत के अध्ययन से हमें मानव इतिहास के बारे में समझने और जानने का मौका मिलता है और ये प्राचीन सभ्यता को रोशन करने के लिए भी सक्षम है। हाल के अध्ययनों में यह पाया गया है कि संस्कृत हमारे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

आधुनिक युग मे संस्कृत की महत्ता

हम दुनिया में विदेशियों के योगदान को बहुत महत्वपूर्ण मानते है, क्योंकि इन्ही के द्वारा संस्कृत भाषा में निहित साहित्य की जानकारी पूरी दुनिया के सामने आ पाई है। सन् 1783 में सर विलियम जॉन ब्रिटिश सुप्रीम कोर्ट के जज के तौर पर कलकत्ता आये थे। वे अंग्रेजी भाषाविद, संस्कृत में विद्वान और एशियाई सोसायटी के संस्थापक थे। उन्होंने कालिदास द्वारा संस्कृत में रचित कहानी 'अभिज्ञान शाकुंतलम् एवं ';ऋतु संहार' को अंग्रेजी में ट्रांसलेट किया

था। इसके अलावा कवि जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविंद' व मनु के कानून 'मनुस्मृति' को भी इंग्लिश भाषा में परिवर्तित किया। सन 1785 में एक अन्य विद्वान सर चार्ल्स विल्किंस ने 'श्रीमद भगवत गीता' को अंग्रेजी में लिखा।

हितोपदेश भारतीय दंत कथाओं के संग्रह को एक जर्मन भाषाविद मैक्स मुलर ने संस्कृत से जर्मनी भाषा में ट्रांसलेट किया था। उन्होंने अपना नाम भी संस्कृत में बदल कर 'मोक्ष मुलर भट' कर लिया था। अपना नाम बदलना उनका संस्कृत के प्रति लगाव और उसकी पूजा करने का तरीका था। इसके द्वारा उन्होंने अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया था। कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' को इन्होने जर्मन भाषा में लिखा और उसे 'दी फेटल रिंग' नाम दिया। इसके अलावा भी मैक्स मुलर ने बहुत सी प्राचीन धार्मिक रचना का संपादन कर, उसे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में 1879 से 1884 के दौरान प्रकाशित किया। वेद और उपनिषद सिर्फ संस्कृत में नहीं लिखे गए थे, इसके अलावा भी संस्कृत को नौ ग्रहों, राहू, केतु धूमकेतु का ज्ञान था। संस्कृत में आयुर्वेद चिकित्सा, विमान का भी रहस्य छुपा हुआ था। वेद में सभी नौ गृह, महीने, दिन, मौसम के बारे में जानकारी थी, इससे प्रकृति की रचना के बारे में, मौसम के बारे में समझने में आसानी हुई।

संस्कृत दिवस मनाने का तरीका

सरकार संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए अपने इस कार्यक्रम से स्कूल, कॉलेज को भी जोड़ती है। स्कूल कॉलेज में अलग अलग कार्यक्रम होते हैं। शहर के सभी स्कूलों के बीच संस्कृत भाषा में निबंध, श्लोक, वाद–विवाद, गायन, पेंटिंग की प्रतियोगिता होती है। कुछ सामाजिक संस्थान व मंदिरों के द्वारा भी इस दिन कार्यक्रम कराये जाते है। संस्कृत की रचना, श्लोक, पुस्तक लोगों में बाँटें जाते है। सरकार के द्वारा संस्कृत की भाषा को बढ़ाने के लिए किसी नई योजना की घोषणा होती है।

आज के समय में संस्कृत भाषा की स्थिति

आज के समय संस्कृत भाषा की परिस्थति खराब ही है। बहुत से पाठ्यक्रम से इसे हटा दिया गया है। संस्कृत भाषा का अध्ययन भारत देश में अनिवार्य नहीं है जिससे अलग अलग राज्य अपने पाठ्यक्रम में अपनी इच्छा अनुसार, अपने राज्य की कोई भाषा पाठ्यक्रम से जोड़ लेते है। वैसे अब सरकार ने यह नियम निकाला है कि कक्षा छठवी से आठवी तक संस्कृत अनिवार्य है। केन्द्रीय विद्यालय ने भी ये नियम अपनाया है, और अपने पाठ्यक्रम में संस्कृत जोड़ा है। भारत के अलावा विदेश में भी संस्कृत भाषा प्रसिद्ध है, वहाँ के कॉलेज स्कूल में एक फोरेन भाषा के तौर पर संस्कृत को मान्यता प्राप्त है, जिसे छात्र अपनी इच्छा अनुसार चुन सकते है। जर्मनी, अमेरिका, लन्दन में ये ज्यादा प्रचलित है।

भारत में मौजूद संस्कृत यूनिवर्सिटी

भारत में अभी भी बहुत से ऐसे लोग है, जो संस्कृत भाषा में अध्ययन करते है। भारत में पहली संस्कृत यूनिवर्सिटी 1791 में वाराणसी में खुली थी।

यूनिवर्सिटी का नाम	सन	जगह
सम्पूर्ण आनंद संस्कृत यूनिवर्सिटी	1791	वाराणसी
सद्विद्या पाठशाला	1876	मैसूर
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत यूनिवर्सिटी	1961	दरभंगा
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ	1962	तिरुपति
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ	1962	नई दिल्ली
राष्ट्रीय संस्कृत संसथान	1970	नई दिल्ली
श्री जगन्नाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी	1981	पूरी,उड़ीसा
नेपाल संस्कृत यूनिवर्सिटी	1986	नेपाल
श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ संस्कृत	1993	कलादी, केरल
कविकुलागुरु कालिदास संस्कृत यूनिवर्सिटी	1997	रामटेक
जगद्गुरु रामानंदचार्य राजस्थान संस्कृत यूनिवर्सिटी	2001	जयपुर
श्री सोमनाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी	2005	सोमनाथ, गुजरात
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय	2008	उज्जैन
कर्नाटक संस्कृत यूनिवर्सिटी	2011	बैंग्लोर

इसके अलावा देश–विदेश के बहुत से कॉलेजों में संस्कृत पाठ्यक्रम के लिए अलग से डिपार्टमेंट होता है।
बहुत से लोग यहाँ से ग्रेजुएशन के साथ साथ पोस्ट ग्रेजुएशन भी करते है।
संस्कृत भाषा भारत देश का गौरव है, जिसे बढ़ावा और उसका हक मिलना ही चाहिए।

रणबॉकुरे

ए.जे.पठान
सहायक भंडारपाल (तकनीकी)
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

परिमल और गुंजन निश्चित समय से पूर्व, शुरु मार्च में ही करोना पैडमेटिक फैलने की खबर सुन लौट आये थे, शंका थी लॉकडाउन लग गया तो विदेश में ही कहीं फंस कर न रह जायें। अपना प्रोग्राम प्री पोन्ड कर उन्हे घर लौटने में ही भलाई लगी थी। उनके इस निर्णय से निशि और निशीथ बहुत खुश हुये थे। उनके बच्चे कितने समझदार हैं? खतरे का आभास मिलते ही उन्होनें सूझ–बूझ से काम लिया और समय से लौट आये थे। पूरे विश्व के साथ अपने देश में फैली कोरोना महामारी से पीड़ित देशवासियों की सेवा के लिए वे दोनों तत्पर थे। उनकी मेहनत और लगन देखकर निशि पिछले समय की यादों में डूब उतरा जाती, यादें ऐसी सजग थीं मानो अभी घट रही हों।

उस दिन निशि काम में व्यस्त थी जल्दी–जल्दी काम समेट रही थी जिससे निशीथ आयें तब तक वो अपना सारा काम समेट फ्रेश हो जाये काम निपटा वह हाथ पोछ रही थी। यह उसका रोज का ही क्रम था, पति के आने पर आराम से बैठ कर बतियाना नास्ता करना। तभी बाहर से निशीथ ने दरवाजा खोलकर अन्दर आते ही आवाज दी थी ''निशि आज कहाँ हो भई, दरवाजा भी नही खोला, कुछ ज्यादा ही काम कर रही हो क्या?''

''नही निशीथ। सब सिमट गया है बस पाँच मिनट।''

''पाँच मिनट का समय किसके पास हैं भला, जल्दी इधर आओ तो?''

निशि जैसी थी वैसे ही भाग कर भीतर कमरे से बाहर आ गई – क्या हुआ उसने कुछ घबराहट में पूछा – ''आज तक इतनी जल्दी कभी नही मचाई, क्या हुआ भला। ''बस!तुम्हारा प्रमोशन हो गया समझो इससे बड़ी और खुशी क्या हो सकती है तुम्ही कहो?''

''क्या? कैसा प्रमोशन? मैं गृहणी हूँ तो आज तक उसमे कही कोई प्रमोशन, कभी कहाँ हुआ है? पहेलिया मत बुझाइए।

वही तो। तुम बहुत नादान हो निशि समझती ही नहीं देखो? वे लोग अपनी 'गुंजन' का विवाह अति शीघ्र आपके सुपुत्र परिमल से करने को उत्सुक हैं, नवम्बर भर का समय है आपके पास। इसी दिसंबर की उन्होनें दो तीन तारीखें दी हैं जिसमें चाहो बेटे का विवाह कर दो। आप तो रत्न गर्भा हो जी! बेटा डॉक्टर है सर्विस में है और आने वाली बहू भी इनटर्नशिप कर चुकी है तो आप सास का प्रमोशन पा गई है कि नहीं? निशी हाथ में पकड़ा पत्र उसे दिखा रहे थे। चेहरा खुशी से दमक रहा था।

''यह तो बड़ी अच्छी खबर है जो'' उसने भी पत्र ले जल्दी से पढ़ा था। ''वही तो इसीलिए तो कह रहा था, जल्दी आओ। मेरे मन में खुशी की लहर दौड़ रही थी।''

''आप तो हाथ के तोते उड़ा देते हैं जी। दो मिनट बाद भी तो यह खबर शान्ति से दे सकते थे ना?

''अजी मैडम। शान्ति किसके पास है ? मेरे पास तो बस एक अकेली पत्नी निशि है? उसे भी देर से खबर करुँ। देखिए मैं तो भागता चला आ रहा हूँ विश्वास न हो तो जरा मेरी धड़कन देख अन्दाज लगा लो। उसने निशि का

हाथ अपने सीने से लगा कर पूछा''हैं न धड़कन तेज।'' वह हँसने लगा था। उसने भी हँसकर कहा ''ससुर बनने जा रहे हैं और हरकतें देखो बिल्कुल बच्चों जैसी – क्या सोचेगी भला गुंजन? कंधे उचकाते हुये निशीथ बोला–''यह उसका क्षेत्र है! जो सोचना हो सोचें हम तो जैसे हैं बदलने वाले नहीं हैं न। वह हँसते हुये पूछ रहा था।

निशिथ और निशि का बेटा बड़ी मनौतियों के बाद विवाह के आठ साल बाद पैदा हुआ था, लोग कहते अनोखे का बेटा पैदा हुआ है, कितना प्यार–लाड़ उड़ेल रहे हैं देखना लाड़ प्यार में बिगड़ न जाय? निशि ने तो अपनी नौकरी को भी परिमल के पालने के लिए तिलांजली दे दी। निशीथ इंजिनियर थे कमी न थी। बच्चें को पालने की जिम्मेदारी तो माँ की ही होती है उसकी प्रथम शिक्षक। फिर वह क्यों भागा दौड़ी करे। यह कार्य भी तो एक तपस्या है। परिमल पढ़ने में मेधावी निकला था। मेडिकल में प्रवेश पा डाक्टर हो गया था – साथ ही मेडिकल कालेज में ही उसे जाब मिल गया लोगों के मुँह अब बंद हो गये थे। तथा परिमल के तारीफों के पुल बँधने लगे थे 'जिधर दम उधर हम' की तरह इतना मेधावी सज्जन बेटा तो भाग्य से ही मिलता है बड़े भाग्यशाली है ये लोग। सच ही परिमल था ही ऐसा।

साफ्ट स्पोकेन, ऊँचा–पूरा घुँघराले बालों वाला – डार्क टॉल हैंडसम डॉक्टर और गुंजन छरहरी गोरी लम्बी बड़ी–बड़ी रतनारी आँखों वाली लड़की जो परिमल के कालेज में ही उससे तीन वर्ष पीछे थी। दोनों एक – दूसरे को जानते तो थे पर शर्मीली गुंजन कभी मुखर नहीं हुई और सीनियर डॉक्टर परिमल ने गुंजन के गुड मॉर्निंग सर के जवाब में गुड मॉर्निंग कर कभी कोई पहल नहीं की थी।

यो गुंजन को परिमल आकर्षित करता था और गुंजन को परिमल भी पीछे से जाते देखता रहता था। इसलिए जब गुंजन का रिश्ता आया तो एक ही कॉलेज के जुनियर सिनियर होने के कारण जानते ही थे देखने दिखाने के चक्कर नहीं था लेनदेन की बात भी नही थी। निशीथ ने विवाह पक्का करने के पूर्व मेडिकल के डॉक्टरों से जानकारी ले ली थी इत्तिफाक कहिए कि गुंजन भी अकेली पुत्री थी तो शानदार शादी हुई तीन दिन गुंजन के रिश्तेदार शहर घूमें पूरे जोश खरोश से शादी तो सम्पन्न हो गई। हनीमून के लिये पहले वे देश बाद में फिर फरवरी में दोनों दुबई चले गये थे। लम्बी छुट्टी में।

गुंजन चिढ़ाती– परिमल मुझे पता है आप, मुझे पीछे से घूरते रहते थे किसने कहा भला''मेरी सहेलियाँ बताती वो परिमल सर तुम्हे घूर रहे हैं गुंजन मैं कह देती–''तो भला मैं क्या करुँ?'' ओहो बड़ी सीधी थीं तुम तो जैसे? मुझे भी पता है खास उसी रास्ते से निकल रोज गुडमॉर्निंग सर करना तुम्हारे उसी आकर्षण के तहत नहीं था क्या? मैं सब समझता था पर?

'पर क्या परिमल?'

हम दोनों ही एक दूसरे को पसंद थे चाहते भी थे कहें तो संस्कारी थे – न तुमने कभी पहल की न मैंने कभी कोशिश।''

''देखिये हमारी लगन का फल, हम एक दूसरे को मिल ही गये न?''

''अच्छा। सच ही कोई और नहीं पसन्द था तुम्हे कालेज में? कोई कलीग या सीनियर..... सच्ची बताना–

सच यह है कि मैने अपनी तरफ से कोई पहल न करने की सोच हमेशा रक्खी थी इसलिये तुम अच्छे भी लगे तो कभी सोचा नही कि शादी तुम्ही से होगी, जब पता लगा तो मन बेहद उत्साह से भर गया था। बल्लियों उछलने लगा था। ''हाँ यार गुंजन। कुछ यही हाल हमारा भी रहा मैं पढ़ाई पर पूरा ध्यान दिये रहा तुम्हारी रोज की गुडमॉर्निंग ने मेरा ध्यान खींचा था पर मैं मनही मन गुडमॉर्निंग कर हँसता भी था अभी कमसिन है नॉदा है भोली है।'' लेकिन जब

तुम्हारे पापा तुम्हारा रिश्ता लेकर आ गये तो – बिना झिझक हाँ कर दी थी।''

''अच्छा जी। मैं नादान लगती थी'' और नहीं तो क्या? रोज ढूँढकर गुडमॉर्निंग करने की क्या जरुरत थी – बताओ?

'आप सीनियर जो थे?

''अच्छा। ऐसे कितने सीनियर्स को रोज गुडमॉर्निंग करती थी।''

वह हँस कर बोली–''एक से ही गुडमॉर्निंग काफी था न?

दोनों ने दुबई के शॉपिंग माल देखे, वहाँ की साफ सफाई से प्रभावित हुये। अल बुर्ज, बुर्ज खलीफा, डेजर्ट सफारी क्या कुछ नहीं देखा, शॉपिंग की, बैक वाटर के बीच में बैठ वहाँ के नजारों का आनन्द लेते रहे वहाँ परिमल के कुछ मित्र भी थे, जिनसे मिल कर बहुत अच्छा लगा था। स्कूल का एक मित्र नंदन वहॉ नौकरी मे था शादी में भी आया था उसने बड़े आग्रह से उन्हें बुलाया था। तो उसके यहाँ भी ठहरे थे। फिर जल्दी लौट आये थे।

25 मार्च से 15 अप्रैल तक भारत में लॉकडाउन लग गया। जो जहाँ था वहीं फँसकर रह गया था उन्हें तो अस्पताल में इन्तजाम देखना था, मरीजों का इलाज करते बाहर के आउट हाउस सें ही वे नहा – धोकर कपड़े बदल कर घर के अन्दर आते थे। फिर भी सतर्क रहते। मम्मी पापा से एक निश्चित दूरी बनाए रखते थे। थोड़े दिनों बाद ही उन्हें दिन भर 'पी.पी.ई. किट' पहने रहना पड़ता – हफ्तों घर नहीं लौट पाते। दोनों मम्मी पापा से वीडियो कॉल कर बात कर लेते, आप लोग ध्यान से संभल कर रहिएगा कोई आवश्यकता हो, बताएं अमेजन से सब कुछ घर पहुँच जाएगा। बाहर न निकलियेगा प्लीज। निशीथ और निशि कहते तुम दोनों हमारे आधुनिक रणबॉकुरे हो दोनों के माता पिता भी दोनो को समझाते देखना, अपना ध्यान रखना हम लोग तो ठीक हैं, तुम दोनों की चिन्ता सताए रहती है। तुम्हारे जैसे सभी सेवार्थी रणबॉकुरों को सलाम है तुम अपना कर्तव्य निभा रहे हो। ये वैश्विक महामारी की लड़ाई का मैदान है जिसको तुम्हें जीतना है।

चारों ओर अफरा – तफरी का माहौल था शहरों में नौकरी कर रहे मजदूरी कर रहे लोगों के काम खत्म हो गये थे। ऐसे में अपने–अपने घर लौट जाने के लिए लोग बेचैन थे। अनेक शादियाँ जो मार्च अप्रैल में होने वाली थीं, टल गई थीं, लोगों के दिल टूट रहे थे, कैसी ये मजबूरी थी। मिल कर भी न मिल पाने की व्यथा – 'सिद्ध करती थी – ''देयर इस आलवेज मेनी ए सिप बिटवीन कप एण्ड द लिप'' – हाथ में आया प्याला छूट गया था लोगों का। इन सब परेशानियों में अनेक दयालु हाथों ने खुले दिल से दान दिया, हजारों–हजार रसोइयाँ खुली जरुरत मंद लोगों के लिए। कुछ साधारण लोगों ने भी व्यक्तिगत रुप से लोगों को मदद की ठानी थी जैसे सेतुबंधन के समय गिलहरी ने अपना योगदान दिया था। हर एक की सेवा का महत्व था। पुलिस, सफाईकर्मी, डॉक्टर्स, नर्सेस लोगों को सुरक्षित रखने हेतु जी जान से लगे हुये थे। लेकिन एक सौ तैतीस करोड़ की जनता की बेचौनी बढ़ती जा रही थी, सब्र का बाँध टूट रहा था कुछ लोग अपनी मंजिल पा गये कुछ अपना जीवन ही गंवा बैठे, जैसे थके – हारे मजबूर पटरी पर ही सो कर रह गये थे। सरकार पर निरन्तर प्रयासरत थी। लोगों ने पुलिस कर्मियों डॉक्टरों के सम्मान में दीपक जलाये, मार्च पास्ट करती पुलिस के परेड में पुष्पवर्षा की थी। रोज के समाचार टी. वी.चौनल्स बेबसाइट्स बढ़ते–घटते मरीजों की संख्या की खबरों से भरे थी। लॉकडाउन का समय बढ़ता गया, फिर खुला भी धीरे–धीरे।

जब भी निशि–निशीथ, परिमल–गुंजन को समझाते तो वह कहते कि पापा–मम्मी भगवान ने हमें यह अवसर प्रदान किया है तो हमारा कर्तव्य भी है हम लोगों की सेवा करे आप लोगों ने हमें यही शिक्षा दी है तो हम क्यों पीछे हटें। वे भी गर्व से कहते हाँ बच्चों ईश्वर तुम्हारी रक्षा

करें। अपना ख्याल रखना और सेवा करना।

न जाने ये कैसी अजीब बीमारी आई। पड़ोसी देश चीन से करोना वायरस के फैलने की शुरूआत हुई। उसके बाद अमेरिका सर्वाधिक इससे प्रभावित हुआ। भारत ने पहले सम्हाला लेकिन धीरे–धीरे लॉकडाउन खुलने की प्रक्रिया में पूरे भारत में महामारी ने रौद्र रुप ले लिया। आखिर ऐसी विपत्ति आई कैसी? सभी जानना चाहते थे। तभी अतीत के आंकड़ों ने सिद्ध किया कि हर सौ साल बाद विश्व में कोई न कोई महामारी तबाही मचाती है। जैसे 1720 में 'मार्सिलेप्लेग' ने लाखो जाने ली थी जो उस समय आाबादी का बीस प्रतिशत थी, तो 1820 में 'द फस्ट कॉलरा'(हैजा) ने जन्म लिया, पहले यह बीमारी थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया और फिलीपींस में आग की तरह फैली उससे पूर्व भारत, अफ्रीका में भी जिससे लाखों मौते हुई थीं। 1920 में भी 'स्पेनिश फ्लू' की चपेट में विश्व आया जो अपनी सदी का सबसे खतरनाक वायरस सिद्ध हुआ था। विश्व की लगभग एक तिहाई आबादी उसने निगल ली थी। और अब इक्कीसवी सदी 2020 के करोना वायरस ने करोड़ों को अपने शिकारी पंजों मे दबोच लिया है। न जानें कब इस बीमारी का अन्त होगा – दवा और इन्जेक्शन बनाने में शोध चल रहा है। यही चर्चा गर्म रहती जब कभी फुर्सत मिलती थी। सारे दुनियाँ के कार्य ठप्प से पड़े हैं अपने घरों में दूबके हुये, कुछ लोग अवसाद के शिकार हो रहे हैं। वर्चुअल क्लासेस, मिटिंग्स, वेबिनार सभी कुछ तो हो भी रहा है, पर अजीब सा भय है जो मनों में समाया है। कुछ बड़ी महान हस्तियाँ काल कलवित हो गई। राजनीति अपनी तरह से हावी है बड़ी गहमा–गहमी का माहौल है।

इसी बीच एक दिन गुंजन ने परिमल को राज की बात बताई थी, बहुत लजाते हुये –'परिमल?' हूँ' 'एक बात बतानी है – कहो न, क्या बात है।' आपका नन्हा स्वरुप आने वाला है। 'क्या? क्या कहा? फिर से कहो। वह शीघ्रता से गुंजन के पास आ गया? क्या सच ही? 'हाँ सच वही जो आपने सुना अभी–अभी।'

तुम तो बड़ी चोर निकली? हमें तो छोटा सा तुम्हारा रुप चाहिए समझी और हमें तुम्हारा रुपवाला बेटा। बहुत दिनों से बताने की सोच रही थी परन्तु काम की अधिकता के कारण यह बताने को टालती रही थी।'

''गलत बात। गुंजन! इतनी महत्वपूर्ण खुशी की खबर देने में तुमने क्यों देर की? भला कब से?'

''फरवरी से ही''

''अरे बाप रे और अब मई की शुरुवात में बता रही हो – देखो गुंजन अब तुम किट पहन ड्यूटी नही करोगी, बस। चलो इस हफ्ते घर चलते हैं अब तुम घर पर ही रहना, वहीं से मरीजों को देखना इलाज करना समझी। वह ठुनकने लग गई–''इसीलिए अभी तक नहीं बताया आपको! जानती थी, आप लोग खबर मिलते ही मुझे रोंकेगें।

गुंजन। यह तुम्हारी और हमारे आनेवाले बच्चे की सुरक्षा का प्रश्न है। मैं तो यहाँ रहूँगा ही,सच जानों डबल ड्यूटी भी करूँगा। तुम स्वंय भी तो यह अनुभव कर रही होगी, बिना खाये, पानी पिये टॉयलेट जाये कितना कष्ट होता है। फिर इस समय तुम्हारी सेहत के लिये भी नुकसानदायक होगा। तुम समझो इस बात को, हम अपने मम्मी–पापा और तुम्हारे मम्मी–पापा को यह खुशखबरी देंगे, देखना वे कितने खुश होंगे?'

''और आप? उसने हँस कर पूछा था?

''ओ मेरी डार्लिंग। तुमने कितनी खुशी दी है वह असीमित है, मन तो सबको अभी बताने को कर रहा है लेकिन रात में उन्हें तंग करना नहीं चाहता इसलिये कल ही छुट्टी ले घर चलते हैं। तभी बताएं तो उनके चेहरे के रिएक्शन देख मजा आयेगा।''

''हाँ। ये ठीक रहेगा।'' दोनों भावी जीवन के प्लान बनाते

हुये सो गये थे।

अगले दिन वे लगभग पंद्रह दिन बाद वे अपने घर पहुँचे थे, पूरी सावधानी के संग। परिमल ने ही मम्मी पापा को खुशखबरी दी थी। उन्होने बहू की बलैय्या ले डालीं–अपने समधी–समधी को खुशखबरी दी थी। अब घर इतने दिनो बाद फिर किलकारियों से गूंजेगा, नन्हा परिमल या गुंजन जो भी आये घर में खुशियाँ अपार होंगी। गुंजन को परिमल वाली ही सलाह सबने दी थी, गुंजन! अब तुम अस्पताल नही जाओ, नहीं तो आने वाले के साथ अन्याय करोगी, तुमको भी अनेक तकलीफें हो सकती हैं । हम क्या समझायें तुम लोग स्वंय डॉक्टर हो ज्यादा अच्छे से समझते होगे। क्या उचित है हम बड़े हैं अपने ढंग से समझा रहे हैं। गुंजन ने बात समझी थीं, कुछ दिन परिवार के साथ रह, परिमल इस बार अकेला ही गया था ड्यूटी पर। गुंजन को कभी–कभी उल्टियॉ हो जाती थीं। अगस्त बीत चला सातवां महीना लग गया बच्चा हलचल मचाता। रात्रि में ही गुंजन परिमल वीडियो काल करतें, बच्चे की एक–एक हरकत की बात होती परिमल दिन भर की खबर देते परन्तु इस बात का विशेष ध्यान रखते कि गुंजन को ऐसी ही खबर दे जिससे वह घबराये नही, रोज रोज बढ़ते मरीज होतीं मौतों से। वह भी मन ही मन बिचलित तो था परन्तु लगन सें सभी लोगों के संग सेवाकार्य में लगा था। एक दिन उसने बताया कि उनके साथी डॉक्टर विनय भी करोना की चपेट में आ गये हैं सारी सावधानियों के बावजूद कुछ पुलिस कर्मी, नर्से भी पाजिटीव हो रहे हैं, लेकिन सबसे अच्छी बात यह है कि गुंजन ज्यादातर लोग ठीक भी हो रहे हैं और कुछ लोग ..... क्या करें? यह तो अपने बस में नही हम भगवान थोड़े है। गुंजन कहती – परमिल आपकी बड़ी चिन्ता रहती है, छुट्टी ले लें। परिमल समझाता यदि मेरी तरह सभी छुट्टी लेंगे तो बेचारे बीमार क्या करेगे गुंजन। तुम तो स्वंय छुट्टी नही लेना चाहती थी अब मुझे ये कैसी राय दे रही हो भला? किसी को कर्तव्यच्युत नही करना चाहिए। मजबूरी थी गुंजन माता–पिता ईश्वर से उसकी दीर्घ आयु की कामना करते रहते, और चारा ही क्या था – सभी तो सेवा मे रत थे। डॉक्टर विनय स्वस्थ होकर काम पर लौट आये थे। इसलिये मन को संतोष था कि भगवान सब ठीक करेगे।

रात घड़ी में आठ बज रहे थे। तभी डाक्टर विनय का फोन आया जिस बात की आशंका हमेशा लगी रहती थी वही खबर थी। विनय कह रहे थे''परिमल को कुछ दिन से अच्छा नही लग रहा था, आज टेस्ट में उसकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है भाभी।'' परन्तु घबराने की जरुरत नही है, ठीक हो जाएगा परिमल। अभी क्वारेन्टाइन कर दिया गया है, आपको तो पता है मैं भी उस बीमारी की चपेट से निकल कर आया हूँ। ईश्वर सब ठीक करेगें आप अपना और पापा–मम्मी का ख्याल रखियेगा। विनय के फोन रखते ही उसने तुरन्त ही परिमल को फोन लगाया, परिमल ने समझाया मैं क्वारन्टाइन में हूँ सभी डॉक्टर ख्याल रख रहे हैं तसल्ली रक्खो मम्मी–पापा को भी संभालना। यह खबर परिवार को दहलाने वाली थी, कितनी बेबसी थी, पास भी नही जा सकते थे।

सबकी आँखों से नींद उड़ चुकी थी, नवागत के सातवें माह के उत्सव की तैयारियाँ धरी की धरी रह गईं थीं। परिमल से बात होती उसका चेहरा देख, गुंजन का मन डूबने लगता ईश्वर ऐसा अन्याय कभी न करना, उसने पूरी लगन और अपने कर्तव्य को निभाते हुये काम किया है, दया करना। दिन पर दिन परिमल की हालत बिगड़ी थी, वेन्टीलेटर लग गया था लेकिन फिर कुछ दवाएँ असर करने लगी थी वेन्टीलेटर हटा दिया गया। सबने राहत की सास ली थी। परिमल ने मम्मी पापा से बात की घबराना नहीं मम्मी मैं ठीक हो रहा हूँ ईश्वर दयालु हैं। गुंजन की सॉस में सास आई थी। वह बोला देखो गुंजन तुम व्यर्थ ही घबरा रही थी मैं जल्दी ही ठीक हो तुम्हारे पास आऊँगा, थकी आवाज में वह धीरे–धीरे बात करता रहा था, गुंजन ने

ही समझाया था परिमल आप थक गये होंगे आराम करिए, अपनी तबीयत ठीक रखना कल बात करेंगे। गुंजन अब शांत थी विश्वास हो गया क्ववारन्टाइन का समय बिता कर परिमल घर आ जायगें। अब कुछ दिन उसे और छुट्टी लेनी पड़ेगी, गुंजन ने जी भर कर भगवान की मनोती मानी थी।

अंधेरे भोर में वह उठी थी कि तभी मोबाइल की घन्टी बजी मातृत्व भार से शिथिल शरीर से धीरे से उठ उसने मोबाइल उठाया था उधर से डाक्टर विनय की भारी सी आवाज थी ''गुंजन भाभी। आई.एम. सॉरी, अचानक रात को परिमल की हालत बिगड़ गई, पुनः वेन्टीलेटर लगाया गया, परन्तु वह सिंक कर गया। परिमल को बचाने की बहुत कोशिश की थी सबने लेकिन नही बचा पाये। उसे खो दिया हमनें। नहीं–ही क्या कह रहे हैं डॉक्टर विनय आप? रात को ही तो मैने उनसे गुडबाय कर सोने को कहा था, कहते–कहते वह जमीन पर लुढ़क गई थी।

गिरने की आवाज सुन निशीथ दौड़े आये गुंजन क्या हुआ? मोबाइल हाथ से छूट दूर पड़ा था, उन्होंने जल्दी से उसी नम्बर पर काल किया और खबर सुन निढाल हो सोफे पर बैठ गये थे। निशीथ की आवाज सुन निशि भी आ गई थी। दोनो की स्थिति देख वे स्वंय सदमें से जमीन पर बैठ गई – ये क्या हो गया। आह! मेरे लाल?

भारतीय स्वर्ण खनन उद्योग- इतिहास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावना

संतोष पाणी
उप अयस्क प्रसाधन अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

चित्रलेखा नंदनवार
कनिष्ठ तकनीकी सहायक (अ.प्र.)
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

प्रस्तावना

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में सोना धातु का काफी प्रचलन है । सोने का उल्लेख वेद, महाकाव्य, पुराण, उपनिषद तथा अन्य धर्मग्रंथों में किया गया है। अथर्व वेद में, पृथ्वी को 'हिरण्यवक्ष' कहा गया है, अर्थात, एक जो उसके सीने में सोने को धारण करता है।

''विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।''
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु । ।''

(अथर्ववेद,12.1.6)

उपरोक्त पंक्तियों का भावार्थ है कि धरती माता को प्रणाम, वह विश्वंभर (सब सहनशील) है, वह वसुधा है – भोजन, औषधि और खनिजों रूप में सभी धन की उत्पादक है। धरती माता की सतह जिस पर हम नींव रखते हैं, वह वो प्रतिष्ठा है जिसे हिरण्यवक्ष (सोने को धारण करने वाली) कहा जाता है। धरती माता वैश्वनार धारण करती है , उसके भीतर सार्वभौमिक अग्नि है , जो हमें भोजन नामक एक शुभ नैवेद्य के रूप में प्रदान करती है । धरती माता हमें उस शुभ अग्नि का वैभव प्रदान करे और हम में से प्रत्येक को अच्छे स्वास्थ्य की वर्षा करें।

उपरोक्त का तात्पर्य है कि पृथ्वी के पास सोने की खदानें भी हैं । उपरोक्त स्तोत्र में भूमि शब्द केवल पृथ्वी का मैदानी भूमि की सतह को ही नहीं दर्शाता है, बल्कि यह भी नदियों के किनारे और तल, पहाड़ों की पहाड़ियाँ, साथ में भीतरी भाग भी शामिल हैं। देश की संस्कृति में सोने की एक प्रमुख भूमिका है । भारत में, सोना सिर्फ मूल्य का भंडार ही नहीं, परन्तु धन और स्थिति का प्रतीक और कई अनुष्ठानों में एक मूलभूत प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है । एक अनुमान के अनुसार भारतीय गृहिणियों के पास विश्व का लगभग 11 प्रतिशत सोना है। यह संयुक्त राज्य अमेरिका, आईएमएफ, स्विटजरलैंड और जर्मनी के कुल भंडार से अधिक है । हिंदू और जैन संस्कृतियों में सोने को शुभ माना जाता है, इसलिए महत्वपूर्ण समारोहों और अवसरों के लिए सोने के गहने पहने जाते है । दिवाली के अलावा, जो भारतीय कैलेंडर में सबसे महत्वपूर्ण तिथियों में से एक हैं, देश भर में क्षेत्रीय त्योहार भी सोने के साथ मनाए जाते हैं। दक्षिण में, अक्षय तृतीया, पोंगल, ओणम और उगादीय पूर्व में, दुर्गा पूजा पश्चिम में, गुड़ी पाड़वा अक्षय तृतीया, उत्तर में बैसाखी और करवा चौथ इत्यादि । भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के साथ साथ सोने की माँग भी बढ़ रही है। इस माँग को पूरा करने के लिए भारत विदेशों से सोने की आयात करता है। इसीलिए भारत दुनिया का

सब से बड़ा सोना आयात करने वाला देश बन गया है। वर्तमान में सोने की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए इसी स्थिति से निपटने के लिए, भारत सरकार ने कई योजनाएँ बनाई है। इन योजना में नई खान का अन्वेषण, सोने के किफायती निष्कर्षण पर शोध और अन्य नियामक कानून के सरलीकरण जैसे कदम उठाए हैं। सरकार ने हाल के वर्षों में नियामक परिवर्तनों जैसे 2019 की राष्ट्रीय खनिज नीति और लंबे समय से चली आ रही खान और खनिज अधिनियम में जल्द ही संशोधन के माध्यम से इसे संबोधित करने के उपाय किए हैं।

भारत में सोने के खनन का इतिहास

भारत में सोने के खनन का एक लंबा इतिहास रहा है। भारत में सोने का खनन पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की है । भारत में, सोने का खनन पहली बार दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी से पहले छोटे–छोटे गड्ढों को खोदकर किया जाता था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में मिली सोने की वस्तुएं इसका प्रमाण है । प्राचीन भारत में निम्न प्रकार के स्वर्ण भंडार ज्ञात थे –

1. सैलाबी प्लेसर भंडार (Alluvial Placer Deposit)
2. वाहिनी भंडार (Vein Deposit)
3. तरल अयस्क (Liquid Deposit) –

भारत में प्राचीन सोने के खनन के शुरुआती समय में, प्रमुख उत्पादन सैलाबी प्लेसर भंडार (Alluvial Placer Deposit) से आया थाय नदी की रेत या बजरी की धुलाई या पैनिंग के माध्यम से सोना बरामद किया जाता था। पश्चिम बंगाल, झारखंड की सुवर्णरेखा नदी की रेत से सोना निकालना एक उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है। कर्नाटक और दक्षिण भारत के अन्य भागों की पर्वतीय चट्टानों से प्राप्त सोना वाहिनी भंडार (Vein Deposit) और तरल अयस्क (Liquid Deposit) के उदाहरण हैं।

भारत में सोने का खनन गुप्त काल पांचवीं शताब्दी ईस्वीद्धए चोल काल (9वीं और 10 वीं शताब्दी ईस्वी) दक्षिण भारत के ग्यारहवीं शताब्दी के राजाओं (1336 से 1560 तक विजयनगर साम्राज्य) और बाद में टीपू सुल्तान द्वारा किया जाता था । अंत में अंग्रेजों ने इस विरासत को जारी रखा । भारत की सभी प्राचीन सोने के क्षेत्रो में से दो प्रमुख सोने के क्षेत्र कोलार और हट्टी हैं। कोलार और हट्टी प्राचीन और वर्तमान भारत की मुख्य सोने की खानें रहे हैं।

बीसवीं शताब्दी के दौरान कोलार गोल्ड फील्ड सोना उत्पादन में एक प्रमुख खान थी । कोलार गोल्ड फिल्ड की स्थापना सन् 1884 में की गई थी । अंग्रेजों ने, चोल साम्राज्य के समय में, सोने का विशाल भंडार और नंगे हाथों से सोने की खुदाई करने की दास्तान सुनी थी । श्रीरंगपट्टनम के युद्ध में टीपू सुल्तान को पराजित करने के बाद अंग्रेजों ने सोना जहाँ उपलब्ध हैं उन क्षेत्रों के अधिकार अपने हाथ में ले लिए लेकिन ब्रिटिश यह पहचानने में विफल रहे कि सोना वास्तव में कहाँ मौजूद है । इस कारण से अंग्रेजों ने सोने की खानों की खोज शुरू की । अंग्रेजों ने सोने की धातु दिखाने वाले को इनाम देने की घोषणा की । घोषणा से प्रेरित होकर, जल्द ही आसपास के ग्रामीण लोग मिट्टी से भरी बैलगाड़ियों के साथ अंग्रेज जनरल लेफ्टिनेंट जॉन वारेन के सामने आए, जिन्हें उन्होंने सोने के कणों को मिट्टीं से अलग करने के लिए उनके सामने धोया। जांच के बाद, वारेन ने निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण लोगों के कच्चे तरीकों का उपयोग करके प्रत्येक 120 पाउंड या 56 किलोग्राम मिट्टी से सोने का एक कण अलग किया जा सकता है और पेशेवरों के प्रयास से तो बड़े सोने के भंडार प्राप्त किए जा सकते हैं । इस तरीके से कोलर सोने की

खदान का खोज हुआ। वर्ष 1875 में माइकल फिट्जगेराल्ड लवेल्ले नामक एक ब्रिटिश सेना के सेवानिवृत्त आयरिश सैनिक ने मैसूर के महाराजा से कोलार सोने की खदानों से सोना निकालने का अधिकार प्राप्त किया । लेकिन 1877 तक, माइकल फिट्जगेराल्ड लवेल्ले अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में असमर्थ था और धन जुटाने के लिए बेताब था। उनकी लोकप्रियता के चलते, एक अन्य सैन्यकर्मी – बैंगलोर में मद्रास स्टाफ कोर के मेजर जनरल बेरेसफोर्ड का समर्थन उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने तीन अन्य लोगों के साथ – मैकेंजी,सर विलियम और कर्नल विलियम अर्बुथनॉट – और कई अन्य सैन्य अधिकारियों के साथ एक सिंडिकेट बनाया, जिसे द कॉलर कंसेशनरीज कंपनी लिमिटेड कहा गया। 'द कॉलर कंसेशनरीज कंपनी लिमिटेड' ने कोलर खान के खनन कार्यों का भार संभाला । कोलार में शाफ्ट खोदने के लिए दुनिया भर से खनन इंजीनियरों को आमंत्रित किया गया था। लेकिन चीजें बदल गईं, जब सिंडिकेट ने, अपने निवेशकों के दबाव में 'जॉन टेलर एंड सन्स' से संपर्क किया को जो उस वक्त भारत में अत्याधुनिक खनन इंजीनियरिंग लेकर आई थी । इंग्लैंड के नॉर्विच से इन इंजीनियरों के आने से केजीएफ के स्वर्ण युग की शुरुआत हुई ।

कोलार सोने के खदान **(Kolar Gold Field (KGF))**

चित्र–1: उस समय के KGF (अभिलेखीय फोटो/श्रीकुमार)

भारत का पहला जल–विद्युत संयंत्र

जैसे–जैसे केजीएफ में संचालन आगे बढ़ा, सोने की खनन में लगने वाली ऊर्जा की मांग बढ़ती गई। उस वक्त तक बिजली का आविष्कार हो चूका था। फिर अंग्रेजों ने खनन कार्य में लगने वाली बिजली की आपूर्ति हेतु कोलार में भारत के पहले और एशिया के दूसरे बिजली संयंत्र की योजना बनाई। सन् 1900 में रॉयल इंजीनियर्स के अधिकारियों ने कावेरी नदी में एक जल – विद्युत संयंत्र बनाने के प्रस्ताव को लेकर मैसूर के महाराजा नलवाड़ी कृष्णराजा वाडियार से संपर्क किया। न्यूयॉर्क से सेंट्रल इलेक्ट्रिक कंपनी और स्विट्जरलैंड से आयशर वायस को पावर प्लांट स्थापित करने और 148 किमी ट्रांसमिशन लाइन, बनाने का काम दिया गया। यह ट्रांसमिशन लाइन दुनिया में सबसे लंबी थी । ब्रिटेन, अमेरिका और जर्मनी से आयातित मशीनरी को हाथियों और घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों में ले जाया जाता था। कावेरी नदी पर बांध यह उस समय के मैसूर शासक नलवाड़ी कृष्णराजा वाडियार और उनके दीवान एवं अभियन्ता सर एम. विश्वेश्वरैया की सोच थी। आज वह बांध कृष्णा राजा सागर बांध (KRS Dam) के नाम से जाना जाता है। यह बांध भारतीय इंजीनियरिंग कौशल और सिंचाई प्रणाली के एक उदाहरण के रूप में आज भी खड़ा है ।

जैसे ही केजीएफ में सोने का भंडार कम होना शुरू हुआ (1930), प्रवासियों ने कोलार छोड़ना शुरू कर दिया । फिर भी भारत के स्वतंत्रता तक झळथ के प्रमुख पदों पर अंग्रेजों का कब्जा था। भारत के सोने के उत्पादन का 95 प्रतिशत उत्पादन करने वाली खानों को बंद होने से बचाने के लिए 1956 में राष्ट्रीयकृत किया गया । स्वर्ण अयस्क के ग्रेड में धीरे–धीरे गिरावट आई। अंतिम बार 1kg/ton के ग्रेड पर खनन किया गया था । परन्तु सोने के उत्पादन के लागत बढ़ने के कारण, 2001 में, बड़े पैमाने पर

विरोध के बावजूद, कोलार गोल्ड फील्ड्स को बंद कर दिया गया था।

हट्टी सोने के खदान (Hutti Gold Mine)

हट्टी खदान शायद दुनिया की सबसे प्राचीन धातु की खानों में से एक है, जो अशोक काल के पूर्व की है। प्राचीन खनिकों ने 35 मीटर और 190 मीटर के बीच गहराई तक काम किया। बाद में 1890 के दशक में मुख्य खदान के 640 फीट के स्तर के कामकाज में प्रतिच्छेद किया गया था, जो दुनिया में सबसे गहरा अब तक का ज्ञात प्राचीन कार्य है। खनन के प्राचीन तरीके से ये प्रमाण मिलता है कि प्राचीन खनन गतिविधि लगभग 1900 वर्ष पुरानी थी। प्राचीन खदान के नीचे से बरामद पुरानी लकड़ी से ये संकेत मिलता है कि पूर्वजों द्वारा खदान की खुदाई आग लगाने के माध्यम से प्राप्त की गई थी। संकेत हैं कि केवल साधारण धातु–विज्ञान जैसे, कुचलने (Crushing), पीसने (rinding) और सोने की प्रसंस्करण के लिए गुरुत्वाकर्षण पृथक्करण (Gravity separation) को पूर्वजों द्वारा अपनाया गया था। बाद में इस उद्योग में गिरावट आई और अंततः 500 और 600 ईस्वी के बीच यह उद्योग गायब हो गया। इसका कारण संभवतरू गुलामी जैसे सामाजिक कुसंस्कार का खत्म होना माना जाता है।

हट्टी सोने की खानों का पुनरुद्धार

हैदराबाद (दक्कन) कंपनी द्वारा हुट्टी बेल्ट में विभिन्न सोने के क्षेत्रों की पुनरू खोज 1880 के बाद पिछली शताब्दी के अंतिम वर्षों में हुई। 1887 और 1920 के बीच हुट्टी (तब हैदराबाद राज्य में) में हुट्टी गोल्ड माइन्स कंपनी नामक एक बड़े आकार की खदान स्थापित की गई। हट्टी के मुख्य खान को हुट्टी गोल्ड माइन्स कंपनी द्वारा विकसित किया गया था और 1056 मीटर तक खनन किया गया था । इस खान को 19.48 g/ton के औसत ग्रेड पर लगभग 0. 38 मिलियन टन अयस्क से 7.40 टन सोना पुनर्प्राप्त करने वाली क्षमता के साथ विकसित किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध से आने वाली कठिनाइयों और नई खनन के खोज के लिए धन की कमी के कारण आवश्यकता के कारण खानों को 1920 के दौरान बंद कर दिया गया था। उसके बाद 8 जुलाई 1947 को 'हैदराबाद गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड' को शामिल करके, हैदराबाद के निजाम द्वारा खनन कार्यों को कोलार गोल्ड फील्ड के 'जॉन टेलर एंड संस' को सौंपा गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद, मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) के गठन के साथ राज्यों के पुनर्गठन के दौरान इसका नाम बदलकर 'द हुट्टी गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड' (भ्ळडस्) कर दिया गया।

'द हुट्टी गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड' (भ्ळडस्) के क्रम विवर्तनरू

1887 – हैदराबाद (डेक्कन) कंपनी द्वारा हैदराबाद के निजाम के लिए सोने का खनन शुरू किया गया।

1920 – प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, धन और सामग्री की कमी के चलते खदान बंद हो गई।

1947 – 8 जुलाई 1947 को 'हैदराबाद गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड' को शामिल करके हैदराबाद के निजाम द्वारा खनन कार्यों को 'जॉन टेलर एंड संस' को सौंपा गया।

1956 – जब राज्यों का पुनर्गठन किया गया तो मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) के गठन के साथ इसका नाम 'हैदराबाद गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड'(भ्ळडस्) कर दिया गया।

1966 – भारतीय स्वर्ण नियंत्रण अधिनियम 1966 ने सोने के व्यापार और उद्योग पर गंभीर प्रतिबंध लगाए।

1971 – अपने रजत जयंती वर्ष में, क्षमता 310 टन प्रति दिन (टीपीडी) से तीन गुना बढ़कर 910 टीपीडी हो गई।

1992 – गोल्ड कंट्रोल एक्ट को निरस्त कर दिया गया जिससे सोने के मुफ्त आयात की अनुमति मिली, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सोने की कीमतों में लगभग

स्थिरीकरण हुआ।

1997 – अपने 'गोल्ड जुबली ईयर' में, एचजीएमएल (भ्ळडस्) ने हुट्टी में क्षमता बढ़ाकर और चित्रदुर्ग में कॉपर यूनिट को गोल्ड यूनिट में बदलकर अपने उत्पादन को दोगुना करने के लिए एक व्यापक आधुनिकीकरण और विस्तार कार्यक्रम शुरू किया।

2022 – उत्पादन जारी है।

भारत की सोने की खदानों की वर्तमान स्थिति

हाल ही में सोने को भारत भर में व्यापक स्थानों पर खोजा गया है, हालांकि आर्थिक रूप से निकाले गए खनिज भंडार का अधिकांश हिस्सा कर्नाटक में स्थित है । आम तौर पर भारत में सोने की खान कर्नाटक राज्य में पायी जाती है (चित्र– २) ।

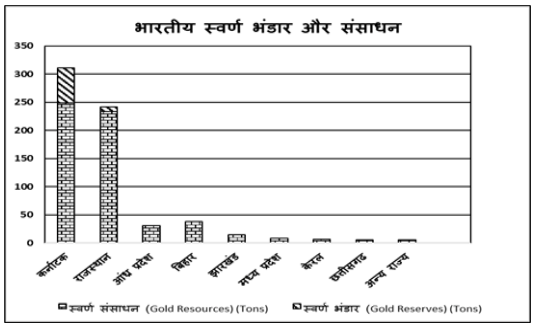

चित्र– 2: भारतीय स्वर्ण भंडार और संसांधन
(सौजन्यः भारतीय खनिज वर्ष पुस्तक)

उपरोक्त आँकड़ों (चित्र– २) से यह स्पष्ट है कि भारत के स्वर्ण संसाधन लगभग प्रमुख राज्यों के पास है। परन्तु भारत के स्वर्ण भंडार (जहाँ से स्वर्ण उत्पादन अभी हो रहा है) सिर्फ दो राज्यों के पास है। खान मंत्रालय द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार, भारत का वर्तमान परिभाषित सोने का भंडार कुल 70.1t (17.2Mt 4.1g/t पर) है।

वर्तमान भारत में एकमात्र सोना उत्पादन करने वाली खान कर्नाटक के रायचूर जिले में स्थित हुट्टी सोने की खान रही है। हट्टी सोने की खानों के अलावा, तांबे के निष्कर्षण के लिए तांबे के अयस्क को गलाने के दौरान भी सोने का उत्पादन होता है। इसलिए राजस्थान भी सोने के उत्पादन की उस सूची में मौजूद है, जहां तांबे का उत्पादन होता है।

खनन के बाद सोना कैसे बनता है

सोना सीधे खदानों से नहीं मिलता। यह अपने कच्चे रूप में पाया जाता है, जिसे स्वर्ण अयस्क कहा जाता है। सोने से समृद्ध खनिजों और सोने के कणों को विभिन्न भौतिक और रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा अशुद्धियों से अलग किया जाता है। इस प्रक्रिया को खनिज प्रसंस्करण और धातु निष्कर्षण कहा जाता है। स्वर्ण अयस्क से सोने के निष्कर्षण की सामान्य प्रक्रिया चित्र –३ में दी गई है।

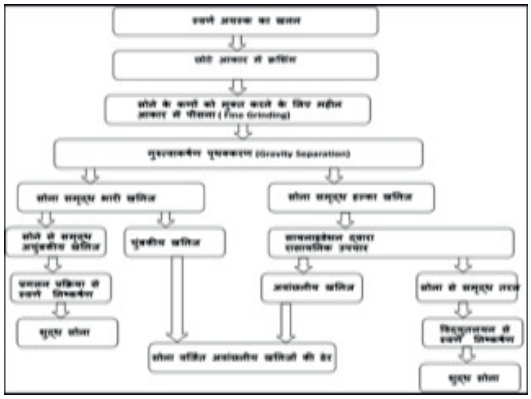

चित्र–3 सोने के अयस्क से सोने निकालने
की प्रक्रिया

वर्त्तमान स्तिथि में चलने वाली हट्टी सोने की खदानों का फ्लो शीट चित्र – 3 में दिया गया है। वर्तमान में कार्यरत हुट्टी सोने की खानों के सोने के अयस्क का फीड ग्रेड 4 g/ton है।

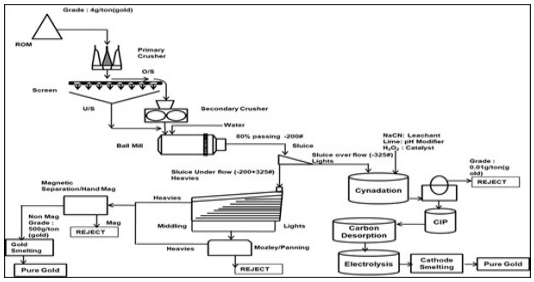

चित्र–4 हुट्टी सोने की खानों की कार्य प्रवाह शीट (सामान्यीकृत)

सबसे पहले सोने के अयस्क का खनन खदानों से किया जाता है । उसके बाद उन अयस्कों को प्राइमरी और सेकेंडरी क्रशिंग (यह क्रशर नामक मशीन से गुजरता है जहां सोने के अयस्क के आकार को छोटा किया जाता है) के माध्यम से 1 mm तक के आकार में घटा दिया जाता है । उसके बाद 1 mm आकार के अयस्क को बॉल मिल के अंदर डाला जाता है, यहाँ उसका आकार घर्षण और प्रभाव के वजह से और छोटा होकर लगभग 0.074mm (–200#) तक किया जाता है। यह 0.074mm वाला अयस्क ढलान वाली वेगशील धारा (स्लुइस) के ऊपर छोड़ा जाता हैं। यहाँ उसका पृथक्करण होता है और दो उत्पात मिलते हैय एक होता है भारी जिसे स्लुइस अंडरफ्लो (–200+325 # i-e 0.0740.044 mm) और दूसरा हल्का जिसे स्लुइस ओवरफ्लो (– 325 # i-e 0.044 mm) कहते है।

स्लुइस अंडरफ्लो (–200+325रु) को गुरुत्वाकर्षण पृथक्करण (gravity separation) की तकनीक से टेबल नामक यन्त्र के द्वारा अलग किया जाता है। इसमें भारी पदार्थ जो सोने से समृद्ध होता है उसे बाद में चुम्बकीय पृथक्करण के माध्यम से प्रकृति के अनुसार चुम्बकीय एवं अचुम्बकीय अंशों में विभाजित किया जाता है। सोने से समृद्ध अंश अचुम्बकीय होता है । इसी तरह सोने से समृद्ध हलके पदार्थों को और बारीकी से पैनिंग के द्वारा अलग किया जाता है । बाद में सोने से समृद्ध अंश को सोने के उत्पादन और संशोधन हेतु गलाने की प्रक्रिया में भेजा जाता है। यह सब प्रक्रिया सोने के कणों को मिटटी से अलग करने के लिए किया जाता है। यह सब प्रक्रिया में जो सोने के कण बच जाते हैं उनको साइनाइड (Cyanide) के साथ केमिकल पृथक्करण के लिए भेजा जाता है। केमिकल पृथक्करण के बाद सोने से समृद्ध तरल को इलेक्ट्रोविनिंग के लिए भेजा जाता है। इलेक्ट्रोविनिंग के बाद जमी हुई स्वर्ण को गला कर परिस्कृत किया जाता है। फिर परिस्कृत सोना को बेचने के लिए मार्केट में भेजा जाता है ।

भारत में सोने के खनन के लिए भविष्य की चुनौतियां

हमेशा के लिए भारत में सोने की मांग बढ़ती ही रहेगी । सोने की मांग को पूरा करने के लिए भारत को विदेशों से आयात को बढ़ाना पड़ेगा । परिणामस्वरुप देश के विदेशी मुद्रा भंडार के ऊपर उसका असर पड़ेगा । यह सब स्थिति से निपटने के लिए हम लोगों को अपने देश के खनिज संसाधनों के विकास पर ध्यान देना होगा । भारत सरकार के अलग अलग संस्थायें जैसे भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) भारतीय खान ब्यूरो (IBM) नई स्वर्ण खान के अन्वेषण और स्वर्ण निष्कर्षण के अनुसंधान पर काम कर रहे हैं । नई आविष्कृत सोने के खानों में सोने की मात्रा काफी कम हो रही है । पहले जहाँ सोने की मात्रा 2 ाह ध्जवद थी वर्तमान स्थिति में नई खानों में सोने की मात्रा 0.1 से 0.5 ाह ध्जवद पाई जा रही है । इन कम मूल्यों के अयस्क से सोना निकालना चुनौतीपूर्ण कार्य है। भौतिक प्रसंस्करण का उपयोग करके कम मूल्यों के अयस्कों से सोना निकालना संभव नहीं है। हालांकि उन कम मात्रा के स्वर्ण अयस्कों से रासायनिक द्रवीकरण पद्धति (chemical leaching process) द्वारा सोना निकाला जा सकता है। लेकिन रासायनिक द्रवीकरण पद्धति में साइनाइड (Cyanide) जैसे जहरीले रासायनिक द्रावक का उपयोग, पर्यावरण के लिए अनुकूल नहीं है। इसलिए नई तकनीक जैसे अनुजैविक द्रवीकरण (Bacterial leaching), आदि का उपयोग करके कम मात्रा के स्वर्ण

अयस्कों से सोना निकला जा सकता है। इन सब विषय पर शोध आवश्यक है ।

उपसंहार

किसी भी देश के विकास में सोने का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। भारत के पास जो अमूल्य स्वर्ण की धरोहर हैं, उसका हमे सावधानी से उपयोग करना चाहिए। बात सिर्फ सोने के उत्पादन की ही नहीं है, परन्तु उसका संशोधन एवं अन्वेषण और निष्कर्षण किस प्रकार होना चाहिए, यह सब भी जरुरी है। ऐतिहासिक स्तिथियाँ हमारे वर्तमान और भविष्य पर प्रभाव डालती है, आने वाली पीढ़ी को यह सब ज्ञात होना चाहिए। इसीलिए हमारा भारत देश जो स्वर्ण समृद्ध रहा है, उसे भविष्य में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, और उन सब का समाधान कैसे हो सकता है, उन सब अंदेशों पर इस लेख में प्रकाश डाला गया है । हमारे भारतीय खान ब्यूरो का खनिज प्रसंस्करण प्रभाग जो सतत् कार्यरत है उसमें सोने के ऊपर काफी संशोधन हुआ है और वर्तमान में भी हो रहा है। उन सबके अथक प्रयासों से इस क्षेत्र में अधिक उन्नति के द्वार खोलें जा सकतें हैं ।

संदर्भग्रंथ सूची

1. Indian mineral year book 2020
2. Dube R-K] India's Contribution to the Mining] EÛtraction and Refining of Gold: Some Observations Related to the Pre&Christian Era] 7] India; Metallurgy in India: A Retrospective; (ISBN: 81&87053&56&7); Eds: P-Ramachandra Rao and N-G-Goswami; pp-163&181-
3. https://huttigold-karnataka-gov-in/
4. https://www-thenewsminute-com/article/story&kgf&cradle&india&s&gold&rush&93798
5. Jorjani E-] Sabzkoohi H- A] Gold leaching from ores using biogenic liÛiviants–A review] Current Research in Biotechnology] Volume 4] 2022] Pages 10&20

माँ की ममता

एकता गिरि
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

"इस तरह रो कर अपनी तबियत खराब करने से क्या फायदा, सुमित्रा जी! जो होना था वह तो हो ही गया ! अब यही चहारदीवारें और यही कमरा आपकी नियति हैं ! जब तक आपके इस जर्जर होते शरीर में प्राण हैं तब तक यहीं दिन – रात काटने होंगे !'' बसेरा वृद्धाश्रम के प्रमुख पचपन वर्षीय श्रीवास्तव जी, आश्रम में नवागंतुक सुमित्रा जी को समझा रहे थॉ जिनका अपने बेटे की स्मृति में रो – रोकर बुरा हाल था। सत्तर वर्षीय सुमित्रा जी को यकीन ही नहीं हो रहा थॉ जिस बेटे को पाने के लिए उन्होंने न जाने कौन – कौन से देवी – देवताओं के चक्कर लगाये थे, वही बेटा स्वयं उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ कर चला गया था !

"कैसे न रोऊँ मैं ! आप जानते ही कितना हैं मुझे और मेरे बेटे को ! मैंने कितनी मुश्किलों से अपने बेटे प्रकाश को पाला – पोसा है ! वह मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकता !'' सुमित्रा जी कांपते स्वर में बोलीं, "उसके पिता तो तभी चल बसे थे जब वह मात्र पंद्रह साल का था ! उसके बाद अकेले ही, उसकी समस्त जरूरतों को पूरा किया है मैंने ! कोई गड़ा खजाना तो था नहीं मेरे पास ! सिलाई की, अचार बनाये, अपने गहने बेच दिये, हर कुछ तो उसके सपनों के लिए स्वाहा कर दिया मैंने ! बस आस हमेशा इसी बात की रही कि जब वह बड़ा आदमी बन जायेगा तो मेरी मेहनत सफल हो जायेगी ! मेरे दुःख दूर हो जायेंगे ! और आज मेरा प्रकाश एक बड़ी कंपनी का प्रबंधक है। उसके पास बड़ा सा घर है, सुंदर सी बहू है, हर सुख – सुविधायें हैं..... !''

"हॉ लेकिन, आपके लिए उसके पास कोई जगह नहीं है'' श्रीवास्तव जी ने सुमित्रा जी को टोकते हुए कहा।

"ऐसा नहीं हो सकता !'' सुमित्रा जी अपनी ही बात पर अड़ी थीं।

"हो गया है'' श्रीवास्तव जी ने फिर से समझाते हुए कहॉ "आपका बेटा, बकायदा आपका नाम यहॉ, बसेरा में लिखवा कर गया है इसलिए संदेह की तो कोई गुंजाईश ही नहीं फिर भी आपकी तसल्ली के लिए मैं आपको रजिस्टर दिखा देता हूँ। आप अपने बेटे के हस्ताक्षर तो पहचानती ही होंगी !'' श्रीवास्तव जी ने अपना चश्मा उतार कर मेज पर रखते हुए पूछा।

"जी, लेकिन मुझे रजिस्टर देखने की कोई जरूरत नहीं है ! मैं यहॉ हूँ, मेरे लिए इतना ही जानना पर्याप्त है। लेकिन प्रकाश ने कहा था कि यह कोई गेस्ट हाउस है और वह मुझे एक दिन में आकर ले जायेगा ! तो क्या वह झूठ बोल रहा था.....!''

"यहॉ आने वाले सभी ऐसा ही कहते हैं ! अगर उसे आना होता तो आज एक सप्ताह बीत रहे हैं वह आ गया होता ! लेकिन उसने तो आपके सारे जरूरी सामान भी भिजवा दिये हैं ! इसलिए आपके हित में यही है कि आप इस सच्चाई को जितना जल्दी स्वीकार कर लें अन्यथा आपको ही कष्ट होता रहेगा !''

"ठीक है आप मेरा एक काम करेंगे'' सुमित्रा जी कुछ सोच कर झिझकते हुए बोलीं।

"कहिये आप वृद्धों की सहायता के लिए ही तो यह बसेरा है। यहॉ पर रहने वाले हर सदस्य से मुझे एक

आत्मिक स्नेह – सा हो जाता है इसलिए आप सब की सेवा में लगाये गये पर्याप्त कर्मचारियों के बावजूद मैं प्रतिदिन आप सभी से मिलने आता रहता हूँ। आप बेझिझक कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ !''

"मुझे एक बार मेरे बेटे से मिलवा दीजिये !''

"ठीक है ! मैं फोन कर देता हूँ अगर वह आ जाये तो आप मिल लेना'' श्रीवास्तव जी सहजता से बोले।

"नहीं, वह नहीं आयेगा ! मुझे उसके पास जाकर मिलना है !'' सुमित्रा जी ने दृढ़ता से कहा।

"वाह ! यह जानते हुए भी कि वह आपसे मिलने नहीं आयेगा फिर भी आप उससे मिलना चाहती हैं ! बहुत खूब !'' श्रीवास्तव जी हँसते हुए बोले, "क्या करेंगी उससे मिल कर ! उसने आपको अपने जीवन से निकाल दिया है ! उसके घर में उसके हृदय में आपके लिए कोई स्थान नहीं है! अगर होता तो आप यहाँ न होतीं !''

"जानती हूँ लेकिनॉ माँ हूँ नॉ इतनी सहजता से स्वीकार नहीं कर पा रही हूँ ! आपने तो कहा कि यहाँ पर रहने वाले हर सदस्य से आपका आत्मिक स्नेह है तो उसी स्नेह की खातिर मुझे एक बार प्रकाश से मिलवा दीजिये !'' सुमित्रा जी गिड़गिड़ाते हुए बोलीं।

"अच्छा ठीक है !'' कुछ सोचते हुए श्रीवास्तव जी बोले "आप तैयार हो जाईये मैं अपने ड्राईवर से कहता हूँ, वह आपको लेता जायेगा !''

"जी बहुत अच्छा ! ''कह कर सुमित्रा जी अपने घुटनों को सहारा देती हुई उठ खड़ी हुई और आईने के सामने जाकर अपने बाल ठीक करने लगीं।

श्रीवास्तव जी ने कमरे से निकल कर ड्राईवर को फोन किया और कुछ ही देर में उनका ड्राईवरॉ कार सहित उनकी सेवा में उपस्थित था।

सुमित्रा जी कार में बैठीं तो न जाने क्यों श्रीवास्तव जी को कुछ ठीक न लगा। वे भी ड्राईवर की बगल वाली सीट पर जा बैठे और पीछे मुड़ कर सुमित्रा जी को देखते हुए बोले "इस बसेरा में इतने वर्ष हो गए लेकिन कभी किसी सदस्य को वापस अपने परिवार के पास लौटते हुए नहीं देखा ! आज आप जा रही हैं तो मेरी भी इच्छा है कि मैं स्वयं जाकर अपनी आँखों से देखूँ एक माँ जिसे उसका बेटा वृद्धाश्रम में छोड़ गया वह वापस जाकर अपने बेटे से क्यों मिलना चाहती है !''

सुमित्रा जी बिना कुछ बोले बस मुस्कुरा कर खिड़की से बाहर देखने लगीं।

ड्राईवर ने कार चालू कर दी और रजिस्टर में लिखाये गए पते की ओर कार बढ़ चली।

लखनऊ से इलाहाबाद – लगभग चार घंटे की दूरी तय करनी थी ! इन चार घंटों की दूरी तय करके एक बेटा अपनी माँ को वृद्धाश्रम छोड़ गया था और अब वही दूरी दुबारा तय करके एक माँ अपने बेटे से पुनः मिलने जा रही थी। अब तक के जीवन में श्रीवास्तव जी ने ऐसी स्थिति नहीं देखी थी इसलिए वे बहुत उतावले हो रहे थे। उन्होंने फिर से सुमित्रा जी की ओर मुड़ कर पूछा "आप अपने बेटे से मिलकर कहेंगी क्या !''

सुमित्रा जी फिर कुछ नहीं बोलीं लगातार खिड़की के बाहर ही दृष्टि गड़ाये हुए थीं। शायद उनके मन में भी यही प्रश्न था कि वे अपने बेटे से मिलकर कहेंगी क्या! अतीत की स्मृति में कभी उनके नेत्र सजल हो उठते तो वे अपना चश्मा निकाल कर अपनी आँखों को पोंछ लेती और फिर खिड़की के बाहर देखने लगतीं।

"माँ का हृदय भी कितना कोमल होता है ! जिस बेटे ने त्याग दिया उसी के लिए इतनी ममता !'' श्रीवास्तव जी स्वयं से ही बोल उठे "अवश्य ही ये वहाँ जाकर बेटे के सामने रोयेंगी गिड़गिड़ायेंगी ! उससे विनती करेंगी कि वह इन्हें अपने पास रख ले ! यदि वह नहीं माना तो फिर

उसकी पत्नी के पैर पकड़ेंगी ! उसे औरत होने का वास्ता देंगी ! अनुनय – विनय करेंगी ! इनके आँसुओं से शायद वे लोग पिघल ही जायें और इन्हें अपने घर के किसी कोने में कोई स्थान दे ही दें !'' श्रीवास्तव जी के सामने पूरा चित्र सजीव हो उठा था।

"आपका बेटा आपके साथ रहता है'' इस बार सुमित्रा जी ने श्रीवास्तव जी से पूछा।

सुनकर श्रीवास्तव जी पीछे मुड़े और मुस्कुराकर बोलें "मैं आपके जैसा भाग्यशाली नहीं हूँ ! ईश्वर ने मुझे कोई संतान ही नहीं दी। एक पत्नी थी तो वह भी दस साल मेरे साथ रहने के बाद बीमारी से गुजर गई। तब से मैं अकेला ही हूँ ! बसेरा को ही अपना घर – परिवार मानकर इसी के प्रबंधन में लगा रहता हूँ।''

"ओह! इसलिए आप जानते भी नहीं होंगे कि संतान को पैदा करने उसे पालने – पोसने में कितनी तकलीफों का सामना करना पड़ता है।''

"हाँ यह तो मैं नहीं जानता लेकिन बसेरा में रहने के कारण मैं यह जरूर जानता हूँ कि इन संतानों के कारण माता – पिता को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं ! जिन संतानों के लिए माता – पिता अपना जीवन होम कर देते हैं वही संतानें जब उन्हें छोड़ कर चली जाती हैं तो उन माता – पिता पर क्या बीतती है यह मैं भली – भांति जानता हूँ ! फिर भी माता – पिता अपनी संतानों का मोह छोड़ नहीं पाते हैं !''

सुमित्रा जी को लगा, श्रीवास्तव जी उन पर ही कटाक्ष कर रहे हैं, उन्होंने फिर कहा "आपकी संतान होती तो आप समझ पाते कि यह मोह छोड़ना इतना आसान नहीं होता है! अपना अस्तित्व भुला कर जिसके साथ बरसों रहे हों उस से मोह छुड़ा लेना क्या इतना सहज है !''

इस बार श्रीवास्तव जी कुछ नहीं बोले बस मुस्कुरा कर रह गये।

कार अब तक इलाहाबाद की सीमा में प्रवेश कर चुकी थी। आने – जाने वाले लोगों से पता पूछते हुए श्रीवास्तव जी ड्राईवर को दायें – बायें मुड़ने का निर्देश दे रहे थे तो पीछे बैठी सुमित्रा जी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही थीं किन्तु, जानी, पहचानी – सी सड़कें, गलियाँ, आस – पास के घर उन्हें बार – बार अधीर किए जा रहे थे। आखिर, इन सब से उनकी सैकड़ों यादें जो जुड़ी हुई थीं !

"रूको, रूको, लगता है यही घर है !'' श्रीवास्तव जी ने ड्राईवर को गाड़ी रोकने का आदेश देकर पीछे देखा। सुमित्रा जी अपने आँसू पोंछ रही थीं।

ड्राईवर ने घर के सामने गाड़ी रोक दी।

श्रीवास्तव जी गाड़ी से निकले और पीछे का दरवाजा खोलकर सुमित्रा जी से बोले "यही घर है न ! पता तो यही लिखवाया था !''

सुमित्रा जी ने ''हाँ'' में गर्दन हिला दी और फिर धीरे से गाड़ी से उतर गईं।

"तो मैं वापस चलूँ ?" श्रीवास्तव जी ने सुमित्रा जी को सहारा देकर एक ओर करते हुए पूछा।

"थोड़ा रूक जाईये ! यदि कोई दिक्कत न हो तो आप भी मेरे साथ अंदर चलिये।''

"नहीं, वह सब मैं देख नहीं पाऊँगा ! एक माँ की लाचारी और बेटे की निर्लज्जता मुझसे देखी नहीं जायेगी'' श्रीवास्तव जी ने स्पष्ट किया।

"लेकिन यही देखने तो आप इतनी दूर तक आये हैं अब आकर यूँ ही लौट जाना ठीक नहीं होगा। एक बारॉ अंदर चलिये !''

"ठीक है चलिये !'' अनमने ढंग से कह कर श्रीवास्तव जी सुमित्रा जी के पीछे – पीछे चल दिये।

सुमित्रा जी अपने घुटनों के दर्द को भूल कर तेजी

से कदम बढ़ाते हुए घर के अंदर दाखिल हो गईं।

लॉन में ही प्रकाश अपनी पत्नी तथा दोंनो बच्चों के साथ बैठा हुआ था। सुमित्रा जी को अचानक सामने देखकर वह हड़बड़ा कर उठ बैठा और हकलाते हुए बोलॉ माँ....., तुम यहाँ कैसे..... !''

सुमित्रा जी बिना कुछ बोलॉ प्रकाश के पास गईं और अपनी पूरी ताकत से एक जोर का तमाचा उसके गाल पर जड़ते हुए बोलीं, "अगर चालीस साल पहले मैंने तुझे पैदा न किया होता तो आज तेरी इतनी औकात नहीं होती कि तू मुझे वृद्धाश्रम में छोड़ पाता ! अपना सर्वस्व तुझ पर लुटा कर मैंने तुझे पाला – पोसा और तूने मेरी तपस्या का यह फल दिया..... ! तुझे क्या लगा, मैं पागल हो गई हूँ ! मेरी याददाश्त कमजोर हुई है, फिर भी तुमसे जुड़ी सारी बातें मुझे याद हैं.....। अरे....., याददाश्त तो तेरी कमजोर हुई है जो यह भी भूल गया कि तेरे पापा के नहीं रहने पर मैंने किस तरह दिन – रात एक कर तेरी परवरिश की थी ! उस समय यदि मैंने तुझे अनाथालय में छोड़ दिया होता तो आज कम से कम मेरी सारी पूँजी तो मेरे पास बची रहती..... ...!'' आवेश में लगातार बोलने से सुमित्रा जी की साँस उखड़ने लगी थी। उन्होंने एक बार सिर से पाँव तक प्रकाश को देखा और फिर घृणा से ''छिः !'' कह कर जमीन पर थूक दिया।

प्रकाश अब भी वैसा ही जड़वत् खड़ा था। अपने बच्चों के सामने गाल पर पड़ा तमाचा ही उसके लिए जीवन भर की सजा थी।

सुमित्रा जी ने श्रीवास्तव जी की ओर देखते हुए कहा "आप बहुत भाग्यशाली हैं ! इस तरह की संतान होने से निःसंतान रहना ही सही है ! आप देखना चाहते थे न, एक माँ अपने बेटे से मिलकर क्या कहती है ! बस यही कहना था मुझे ! मैं स्वयं अपने ही बेटे की अंतिम क्रिया में शामिल होने आई थी। आज से यह मेरे लिए मृत है ! अगर हो सके तो इसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कीजियेगा !'' कह कर सुमित्रा जी बाहर की ओर मुड़ गईं।

श्रीवास्तव जी कुछ देर वहीं खड़े रहे। एक माँ की अपने बेटे के प्रति ममता के इस रूप की कल्पना भी उन्होंने नहीं की थी। ठगे से वे सुमित्रा जी को सहारा देने के लिए उनकी ओर बढ़ गये।

बाजारवाद के दौर में बढ़ता हिन्दी का भाव है।

किशोर डी. पारधी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

लोग कहते हैं कि भाषा एक साधन है और उसके बारे में बहुत भावुक नहीं हुआ जा सकता। जब अंग, संवेदन और ज्ञान चीज बन चुके हैं, तो भाषा के बारे में ऐसे बयान भी अपेक्षित होते ही हैं। साधना से भाषा को साधन बनाते–बनाते बाजार ने कई दिलचस्प खेल खेले है, उन खेलों को पहचानिए तो इस देश में हिन्दी की शक्ति से साक्षात्कार हो सकेगा। एक हिन्दी अखबार में प्रथम पृष्ठ पर गुटखा मसाले का विज्ञापन हिन्दी के बड़े – बड़े अक्षरों में छापा, जिसमें मसाले की मस्ती की बहुत सी बाते कही गई। उसी विज्ञापन के अंत में एक कोने में अत्यंत छोटे अक्षरो में गुटखे के विरुध्द ''स्टेटयुचरी वार्निंग'' अंग्रेजी के साम्राज्यवाद ने हाशिए पर धकेल दिया है लेकिन उस विज्ञापन में अंग्रेजी को एक कोने में सिकुड़ी बैठी हुई देखकर संतोष होता है। हिन्दी में वोट मांग कर सत्ता हथियाने वाले जो नही कर सके वह बाजार की शक्तियों ने कर दिखाया हैं। उस विज्ञापन ने यह रेखांकित किया कि अंग्रेजी भारत में आज भी असंवाद की भाषा हैं। ऐसी भाषा जो ''वैधानिक चेतावनी'' को असंप्रेषणीयता के लिए प्रयुक्त होती हैं।

हिन्दी विरुध्द अंग्रेजी का मसला काफी हद तक पुरानी हो चुका हैं, क्योंकि जहां अंग्रेजी जाती है, अब उसके पीछे इंग्लैंड नहीं आता, अमेरिका आता है। अपने व्यापार के सांस्कृतिक बिंबो के साथ गणेश का मूसक सिर्फ अर्पित किए गए लडडू खाता रहा, लेकिन मिकी–माऊस दुनिया के सबसे प्रसिद्ध राडेट के रुप में भारत भर में छा गया। आज अमेरिकी व्यापार बिंब अंग्रेजी के रथ पर सवार हो कर पृथ्वी का निरंतर भ्रमण कर रहे हैं। औपनिवेशिक दौर में हम भाषा के माध्यम से आते हुए सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के खतरों की चर्चा करते थे लेकिन नए युग में आर्थिक साम्राज्यवाद का ज्वार किस भाषा के कंधो पर सवार होकर आ रहा है? जिन लोगों को यह एक दूरवर्ती कल्पना लगती है। वे देखे कि हाल ही में फ्रांस, जर्मनी, पोलैंड ने अंग्रेजी के विरुध्द कानून क्यों बनाए हैं और क्यों कंप्यूटर के युग में अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के खिलाफ आइसलैंड सरकार ने ''शब्द समितियां'' गठित की हैं। अभी यूरोपीय संघ के गठन के बाद अंग्रेजी संघ के कामकाज पर कुछ ज्यादा ही छाने लगी तो फ्रांस ने भाषा संरक्षण के कदम उठाए। अंतरराष्ट्रीय विधि पर अमेरिका में अभी कुछ दिनो पूर्व एक डाक्टरल अध्ययन मे कहा गया था कि फ्रेंच भाषा संरक्षण के कदम वस्तुओं, सेवाओं, श्रम और पूंजी के स्वतंत्र परिवहन वाले कॉमन मार्केट के सिद्धांत के खिलाफ हैं। भाषाविदों का अनुमान है कि वैश्वीकरण के बाजार ने कई भाषाओं को गायब कर दिया हैं। 21वी सदी के अंत तक दुनिया की 300 से अधिक भाषाओं के वंश नाश की स्थिति आ गयी थी।

आत्माभिमान से काम नही चलेगा। पूछना होगा कि ज्यादा से ज्यादा असमान होते जा रहे समय और समाज में भाषा की भूमिका क्या होनी चाहिए? देशी भाषा किस हद तक देश की रक्षा में हैं? भारतेंदु की हिन्दी क्या आजादी और आत्मगौरव की आधुनिक पुकार थी? या यह एक बहुराष्ट्रीय पेय के लिए कमर हिलाते शाहरुख खान की '' आजादी मन की '' हैं? यह विज्ञापन आजादी के 50

वर्ष पूरे होने पर खूब बजा। बहुराष्ट्रीय कंपनियां आजादी की सामूहिकता के खिलाफ व्यक्ति के निजी स्वातंत्र को कितनी चतुराई से खडा करती है, यह विज्ञापन इसका उदाहरण था। उसमें देश कहां था?

08 मार्च 2002 को वॉल स्ट्रीट जर्नल में छपे एक लेख में वैश्वीकरण के कारण देशज भाषाओं की इस अधोगति पर जॉन मिलर हंसते हुए कहते है कि भाषाएं यदि मर रही है तो इसलिए कि वे कमतर है और इसलिए कि लोग बिगमैक को ज्यादा पसंद करते है। बिगमैक का यह अहंकार भाषाई श्रेष्ठता से नही निकलता है। यह तो मैकडानल्डस् की ताकत से निकलता है। हिंदी और चीनी भाषाएं इस ताकत के सामने खड़ी है क्योंकि उनके पास जनशक्ति है। इसके चलते स्टार चौनलो को गुरुकुल और यात्रा जैसे कार्यक्रम देने पडेंगे। उसके चलते एमटीवी को 15 अगस्त पर भारत भक्ति के गीत बजाने पडेंगे।

अंग्रेजी एक शांत षड्यंत्र के साथ नाटो, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ आदि में अघोषित और अनाधिकृत रुप से कार्यकारी भाषा के रुप में स्थापित हो गई। बहुराष्ट्रीय कंपनियों में एकाधिकार की भूख अंग्रेजी के भाषाई एकाधिकार में कोई न कोई अनुवांशिक रिश्ता है। हिन्दी के बारे में हुए एक सर्वेक्षण में 77 प्रतिशत लोगो ने स्वीकार किया कि यह भारत के आरपार फैली एकमात्र भाषा हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रियाएं इसे संयुक्त राज्य अमेरिका, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, यमन, यूगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैंड व सिंगापुर भी ले गई हैं जबकि पाकिस्तान, गुआना, नेपाल व संयुक्त अरब अमीरात में इसकी पहुँच थी ही।

ग्लोबल वार्मिंग/वैश्विक तापमान में वृद्धि और उसके विनाशकारी प्रभाव

आर. एस. धोपटे
प्रेसमैन
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

आज के समय में ग्लोबल वार्मिंग एक बड़ी पर्यावरण समस्या है जिसका हम सब सामना कर रहे हैं,तथा जिसका समाधान स्थायी रूप से करना आवश्यक हो गया है। वास्तव में पृथ्वी के सतह पर निरंतर तथा स्थायी रूप से तापमान में वृद्धि होने की प्रक्रिया को वैश्विक तापमान में वृद्धि कहते हैं। आसान शब्दों में समझें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है 'पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन और उसके प्रभाव।

वैश्विक तापमान में वृद्धि का मुख्य कारण जीवाश्म ईंधन का जलना और कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन है। औद्योगिक क्रांति के बाद से औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि को दर्शाता है और वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण प्रकृति के संतुलन, जैव विविधता तथा जलवायु परिस्थियों को प्रभावित करता आ रहा है यह एक प्राकृतिक घटना है, जहाँ पर्यावरण का औसत तापमान सीमा से अधिक बढ़ जाता है, यह मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण होता है। वातावरण में हर दिन बड़ी मात्रा में जहरीली गैसें जैसे कॉर्बन डाइऑक्साइड, मीथेन आदि उत्सर्जित होती हैं।

वैश्विक तापमान बढ़ने की समस्या को कम करने के लिए सभी देशों द्वारा विश्व स्तर पर इस विषय पर व्यापक रूप से चर्चा करनी चाहिए और उसके निवारक उपाय खोजने चाहिए वैश्विक तापमान दो मुख्य तरीकों से समुद्र के जल स्तर को बढ़ाने में योगदान देता है। सबसे पहले, गर्म तापमान के कारण बर्फ की चट्टाने, ग्लेशियर और भूमि–आधारित बर्फ की चादरें तेजी से पिघलती हैं, जो जमीन से समुद्र तक पानी को ले जाती है। दुनिया भर में बर्फ पिघलने वाले क्षेत्रों में ग्रीनलैंड, अंटार्कटिक और ग्लेशियर शामिल हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि ग्रीनलैंड । यह आर्कटिक महासागर और उत्तरी अटलांटिक महासागर के बीच स्थित है, जो नए हिमपात से प्राप्त होने वाले द्रव्यमान से 20% अधिक खो रहा है।

भारत में भी ग्लोबल वार्मिंग एक प्रचलित शब्द नहीं है और भाग–दौड़ में लगे रहने वाले भारतीयों के लिये भी इसका अधिक कोई मतलब नहीं है। लेकिन विज्ञान की दुनिया की बात करें तो ग्लोबल वार्मिंग को लेकर भविष्यवाणियाँ की जा रही हैं। दुनिया का सबसे बड़ा खतरा बताया जा रहा है। यह खतरा तृतीय विश्वयुद्ध या किसी क्षुद्रग्रह (एस्टेरॉइड) के पृथ्वी से टकराने से भी बड़ा माना जा रहा है।

इतिहास का दूसरा सबसे गर्म वर्ष 2020 रहा,लेकिन 2021 के शुरुआती तीन महीने रिकॉर्ड के नए संकेत दे रहे हैं। खासकर भारत के लिए ये तीन महीने खासकर चौंकाने वाले हैं। इसकी बड़ी वजह यह है कि भारत के मौसम के लिए बेहद अहम एवं संवेदनशील माने जाने वाले हिमालय से मिल रहे संकेत अच्छे नहीं हैं। पिछले तीन माह के दौरान हिमालयी राज्यों में बढ़ती गर्मी और बारिश न होने के कारण वहां के लोग चिंतित हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के वृद्धि के कारण पृथ्वी से वायुमंडल में जल–वाष्पीकरण अधिक होता है जिससे बादल में ग्रीन हाउस गैस का निर्माण होता है जो पुनः

ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनता है। ग्लोबल वार्मिंग के लिए कई चीजें जिम्मेदार हैं जीवाश्म ईंधन का जलना, उर्वरक का उपयोग, अन्य गैसों मे वृद्धि जैसे– ट्रोपोस्फेरिक ओजोन, और नाइट्रस ऑक्साइड भी ग्लोबल वार्मिंग के कारक हैं। तकनीकी आधुनीकरण, प्रदूषण विस्फोट, ताप विद्युत संयंत्र, औद्योगिक विस्तार के बढ़ते मांग शहरीकरण ग्लोबल वार्मिंग वृद्धि में प्रमुख रूप से सहायक हैं। हम जंगलों की कटाई तथा आधुनिक तकनीक के उपयोग से प्राकृतिक प्रक्रियाओं को विक्षुब्ध कर रहे हैं जैसे वैश्विक कार्बन चक्र, ओजोन के परत में छिद्र बनना तथा पराबैंगनी किरणें का पृथ्वी पर आगमन जिससे ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि हो रही है।

ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन और तापमान वृद्धि में गहरा सम्बन्ध बताया जाता है। सन 2006 में एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म आई – 'द इन्कन्वीनियेंट ट्रुथ'। यह डॉक्यूमेंट्री फिल्म तापमान वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन पर केन्द्रित थी। इस फिल्म में ग्लोबल वार्मिंग को एक विभीषिका की तरह दर्शाया गया, जिसका प्रमुख कारण मानव गतिविधि जनित कार्बन डाइऑक्साइड गैस माना गया है। इस फिल्म को सम्पूर्ण विश्व में बहुत सराहा गया और फिल्म को सर्वश्रेष्ठ डॉक्यूमेंट्री का ऑस्कर एवार्ड भी मिला। यद्यपि ग्लोबल वार्मिंग पर वैज्ञानिकों द्वारा शोध कार्य जारी है, मगर मान्यता यह है कि पृथ्वी पर हो रहे तापमान वृद्धि के लिये जिम्मेदार कार्बन उत्सर्जन है जो कि मानव गतिविधि जनित है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग में कमी के लिये मुख्य रूप से सी.एफ.सी. गैसों का उत्सर्जन रोकना होगा और इसके लिये फ्रिज, एयर कंडीशनर और दूसरे कूलिंग मशीनों का इस्तेमाल कम करना होगा या ऐसी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे सी.एफ.सी. गैसें कम निकलती हों।

ग्लोबल वार्मिंग का सीधा और आसान मतलब है धरती का जरूरत से ज्यादा गर्म होना। वैज्ञानिकों का मानना है कि पिछले 140 सालों में धरती का तापमान एक डिग्री सेल्सियस तक बढ़ चुका है। यह एक तरह से पृथ्वी की सेहत खराब होने जैसा है। यदि धरती के तापमान में बढ़ोत्तरी इसी तरह चलती रही तो परिणाम खतरनाक हो सकते हैं। इसे कम करने में हम भी अपने स्तर पर कुछ ना कुछ योगदान दे सकते हैं।

1. पैदल चलें

यदि स्कूल या ऑफिस पास में ही है तो साइकिल से जाएं या पैदल ही चलकर जाएं।

2. सार्वजनिक परिवहन

पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ही इस्तेमाल करें, क्योंकि इससे प्रदूषण कम करने में मदद मिलती है।

3. सीएफएललाइट्स का इस्तेमाल करना

सी. एफ. एल. लाइट्स का इस्तेमाल करना भी बिजली बचाने का एक अच्छा विकल्प है। बल्बों को कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट (सी एफ एल) से बदलें।

4. इलेक्ट्रिसिटी बचाएं

बिजली के लिए छत पर सौर ऊर्जा का उपयोग करें। एयर कंडीशनिंग सिस्टम का उपयोग कम से कम करें जरूरत ना होने पर यदि आप बिजली का उपयोग नहीं करते तो ये भी अपनी तरफ से ग्लोबल वार्मिंग कम करने की दिशा में एक छोटा, लेकिन अहम योगदान है।

5. टीवी ऑन है या ऑफ

कई बार कोई भी सदस्य टीवी नहीं देख रहा होता, फिर भी टीवी ऑन ही रहता है। ऐसा करने से बचें। यह ना सिर्फ बिजली की बचत है, इससे हमारे संसाधनों की बचत भी है।

6. वनों की कटाई को रोके और पेड़ लगाएं

यह बात तो हमेशा से हमें सिखाई जाती है कि पेड़ लगाकर हम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना अहम योगदान दे सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए भी पेड़ लगाना अहम है।

7. रिपेयर करवाएं

कोई भी चीज खराब होने पर हम तुरंत नई लेने के बारे में सोचने लगते हैं और हमारी धरती पर इलेक्ट्रॉनिक या प्लास्टिक वेस्ट जमा होता जाता है। ऐसे में यदि कोई भी उपकरण या चीज खराब हुई है, तो पहले उसे रिपेयर करने या करवाने की कोशिश करें।

8. रिसाइकिल

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में रिसाइकलिंग एक अहम कदम है। जब हम पुरानी वस्तुओं को नए रूप में इस्तेमाल करते हैं, तो धरती से प्लास्टिक वेस्ट कम होता है। पेपर बैग ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करना चाहिए ये ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या को कम करने में कारगर भूमिका निभा सकता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि मानव इस समस्या को कम करने का प्रयास नहीं करता है, तो मानव जल्द ही पृथ्वी से विलुप्त हो जाएगा। ग्लेशियर सिकुड़ गए हैं, नदियों और झीलों पर बर्फ पहले टूट रही है, पौधों और जानवरों की उत्परिवर्तन हो गई हैं। पर्यावरण की प्राकृतिक प्रणाली जल्द ही ध्वस्त हो जाएगी, और बहुत प्रकार के जीवों को लुप्तप्राय या विलुप्त होने का कारण हम बनेंगे। उदाहरण के लिए उत्तरी ध्रुव में हिमनदों के क्षेत्र में कमी के कारण ध्रुवीय भालू डूब रहे हैं। सील ध्रुवीय भालू का भोजन है, और जब भूमि के कम क्षेत्र होते हैं तो ध्रुवीय भालू के लिए मछलियों को पकड़ना कठिन होता है। ध्रुवीय भालू डूबने और भुखमरी से मर जाएंगे। नतीजन, सील की आबादी बढ़ेगी और मछली की आबादी में कमी आएगी। इसलिए खाद्य श्रृंखला ढह जाएगी और जानवर विलुप्त हो जाएंगे। और पृथ्वी का पर्यावरण चक्र नष्ट हो जायेगा। अभी भी संभलने की जरूरत है अभी समय हमारे हाथ में है और एक बार समय निकल जाने पर हम कुछ भी नहीं कर पाएंगे। निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से हम पर्यावरण संरक्षण के अपने प्रयास को परिलक्षित कर सकते हैं –

(हमें किसी भी खास समय का इंतजार नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने हर समय को खास बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।)

मंडेला इफेक्टः कारण एवं संभावनाएं

सूर्य भूषण प्रसाद
उच्च श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, हिंगणा, नागपुर

जैसा कि आलेख के शीर्षक से ही स्पष्ट है इसका नामकरण दक्षिण अफ्रिका के भूतपूर्व प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति ''नेल्सन मंडेला'' से संबंधित है। वर्तमान में उपलब्ध ज्ञान के सभी विश्वसनीय मानक स्रोत हमें बताते हैं कि नेल्सन मंडेला की मृत्यु 5 दिसम्बर 2013 को हुई थी। किन्तु दुनिया के लाखों लोगों का यह दावा है कि उनकी मृत्यु तो 1990 के दशक में जेल में ही हो गई थी। मंडेला की शव यात्रा को उन लोगों ने टेलीविजन पर लाईव प्रसारित होते हुए अपनी आँखों से देखा है और उन्होंने उनकी पत्नी ''विनीफ्रेड मंडेला'' का रो – रो कर दिया हुआ भाषण भी टेलीविजन पर लाईव देखा है। नेल्सन मंडेला की मृत्यु 2013 से पहले हो गई थी, इस से संबंधित आर्टिकल (चित्र देखें)एक

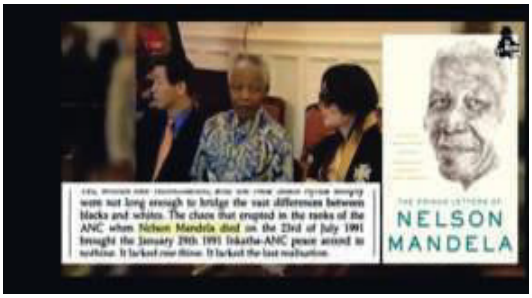

अखबार में भी छपी थी। एक अमेरिकी महिला पत्रकार 'फिआनो व्रूम' का भी यही मानना है कि नेल्सन मंडेला की मृत्यु 2013 से बहुत पहले ही हो गई थी। जब ये विरोधाभास और ज्यादा चर्चा का विषय बना तो धीरे – धीरे ऐसे लोगों की संख्या बढ़ने लगी जिनका मानना था कि उन्होंने भी नेल्सन मंडेला की मृत्यु की खबर 2013 से बहुत पहले भी सुना है। नेल्सन मंडेला की मृत्यु वाली घटना के बाद दुनियां के बहुत सारे लोगों ने कुछ ऐसी घटनाओं का भी वर्णन किया जिसमें भूतकाल की तुलना में वर्तमान समय में उसका स्वरूप पहले से बदला हुआ है। लोगों को अब ये लगने लगा कि कोई भूतकाल में जाकर चीजों को बदल रहा है, जिसके प्रभाव से वर्तमान में चीजें बदली हुई महसूस हो रही है। चूंकि, इस तरह की घटनाओं में पहली घटना नेल्सन मंडेला से जुड़ी थी जिसने बहुत बड़ी संख्या में लोगों को अपनी तरफ आकर्षित किया और बहुत बड़े विरोधाभास की स्थिति बनाई। इसलिए इस तरह की घटनाओं को नाम दिया गया ''मंडेला इफेक्ट''।

इस तरह की घटनाओं से जुड़ी एक अन्य घटना विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक ''सर निकोला टेस्ला'' से संबंधित है। निकोला टेस्ला ने अपने जीवनकाल में अनेकों महत्वपूर्ण आविष्कार किए जिसके कारण वे मशहूर हुए। निकोला टेस्ला की मृत्यु से संबंधित घटना एवं समय में भी दुनियां के लोगों में विरोधाभास। कई लोगों को यह लगता है कि निकोला टेस्ला बहुत की कम उम्र में एक कार दुर्घटना में मर गए थे, किन्तु वर्तमान में उपलब्ध सभी विश्वसनीय ज्ञान के मानक स्रोत हमें बताते हैं कि सर टेस्ला की मृत्यु वृद्धावस्था में 86 वर्ष की उम्र में दिल का दौरा पड़ने से हुआ। ऐसे ही एक अन्य घटना में दुनियां के लाखों लागों को लगता है कि मदर टेरेसा को 'संत' की उपाधि उनके जीवनकाल में ही प्रदान की गई थी, मगर वास्तविकता ये है कि मदर टेरेसा को संत की उपाधि उनकी मृत्यु के 19 साल बाद 2016 में प्रदान की गई।

एक अन्य घटना जापानी कार्टून धारावाहिक पोकेमोन के काल्पनिक पात्र 'पिकाचू' के बारे में है। कई

सारे लोगों को ऐसा लगता है कि उन्होंने पिकाचू के पूंछ की आखिरी में काली धारी देखी है, मगर वर्तमान में टेलीविजन पर प्रसारित होने वाली धारावाहिक में कोई काली धारी (चित्र देखें) नहीं दिखती है। धारावाहिक बनाने वाले निदेशक से जब इस पर बात की गई तो उन्होंने भी स्वीकारा कि पिकाचू की पूंछ पर कभी कोई काली धारी नहीं थी। तो फिर लाखों लोगों को ऐसा भ्रम क्यों हुआ?

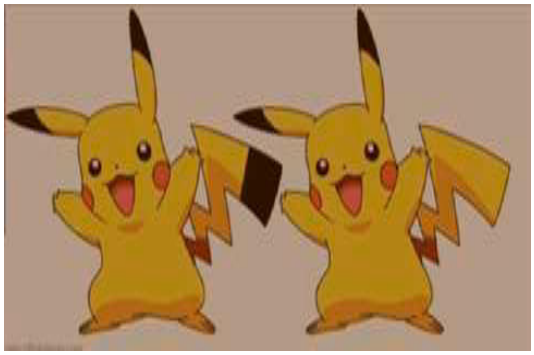

एक अन्य घटना में अमेरिका में प्रसारित होने वाली कार्टून धारावाहिक ''क्यूरियस जार्ज'' के मुख्य पात्र (जार्ज, जो कि एक बन्दर का प्रतिरूप है) के बारे में कई लागों का मानना है कि उन्होंने जार्ज की पूंछ देखी है, मगर वास्तविकता ये है कि धारावाहिक में जार्ज की पूंछ कभी दिखाई ही नहीं गई है।

एक अन्य विरोधाभास, कोका कोला कम्पनी के प्रतीक चिन्ह (**LOGO**) से संबंधित है।

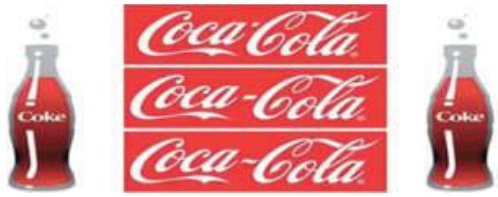

अधिकतर लागों को लगता है कि कोका कोला का अधिकारिक प्रतीक चिह्न ऊपर के तीनों चिह्नों में से सबसे नीचे वाला है, किन्तु कंपनी का कहना है कि आधिकारिक प्रतीक चिन्ह हमेशा से सबसे उपर वाला यानी कोका और कोला शब्दों के बीच सिर्फ एक डॉट (ऊपर के चित्र में पहला प्रतीक चिह्न) है ना कि घुमावदार डैश (ऊपर के चित्र में तीसरा प्रतीक चिह्न)।

वर्तमान में दुनिया में अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जिसके बारे में लोगों के बीच विरोधाभास है। कई लोगों को लगता है कि ये चीजें पहले की तुलना में आज बदल दी गई है। जैसे– कीट कैट कंपनी का प्रतीक चिह्न। बॉलीवुड चलचित्र 'शहंशाह' का प्रसिद्ध संवाद जिसमें अमिताभ बच्चन कहते हैं :–

गलत संवाद – ''रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप लगते हैं, नाम है शहंशाह। (इस संवाद को बोरोप्लस के विज्ञापन में खुद अमिताभ बच्चन ने दोहराया है)''

सही संवाद – ''रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप होते हैं, नाम है शहंशाह। (इसे आज भी चलचित्र के दृश्य में सुना जा सकता है।)''

एक अन्य विरोधाभास मोनालिसा की तस्वीर से जुड़ी है। हम बचपन से सुनते आए हैं कि मोनालिसा की तस्वीर इसलिए प्रसिद्ध हुई क्योंकि तस्वीर में मोनालिसा के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे, अर्थात मोनालिसा का चेहरा

बिल्कुल भावहीन था। मगर आज के कुछ विश्लेषक यह मानने लगे हैं कि मोनालिसा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान है। यह माना जा सकता है कि किसी भी विषय–वस्तु के बारे में कुछ सौ या हजार लोग गलत हो सकते हैं, किन्तु एक साथ लाखों लोग गलत कैसे हो सकते हैं? यह भी संभव है कि अलग अलग लोगों के ज्ञान, मनोविज्ञान, समझ एवं दृष्टिकोण की वजह से मोनालिसा की तस्वीर में अलग अलग भाव दिखते हो।

मगर अनेकों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि सभी लोगों को कभी न कभी मंडेला इफेक्ट होता जरूर है। हमने अपने जीवन में कभी न कभी ऐसा जरूर महसूस किया है कि हमारे आस पास की चीजे पहले से बदल गई है। मगर आखिर ये हुआ कैसे? क्या, यह कोई सिर्फ भ्रम है या इसे किसी ने सही में बदल दिया है?

''मंडेला इफेक्ट'' होने की संभावनाओं का विश्लेषण

मंडेला इफेक्ट के बारे में दुनियां के अलग अलग विश्लेषकों एवं वैज्ञानिकों की अलग अलग राय है। कुछ विश्लेषकों का ये मानना है कि भविष्य में पृथ्वी के लोग समय यात्रा करने में सक्षम हो गए हैं और वे भूतकाल में समय यात्रा कर चीजों को बदल रहें हैं। जैसे आज बड़ी बड़ी स्पेस कंपनी भविष्य में अंतरिक्ष पर्यटन की योजनाएं बना रही है वैसे ही भविष्य में मोटी रकम लेकर लोगों को समय यात्रा करने की सुविधा प्रदान की जाने लगी है। संभव है कोई समय यात्री भूतकाल में जाकर सर निकोला टेस्ला एवं नेल्सन मंडेला के असमय मृत्यु से विश्व को होने वाले अपूर्णीय क्षति से बचाने के लिए निकोला टेस्ला की कार दुर्घटना एवं नेल्सन मंडेला की जेल में मृत्यु के कारणों को उन दोनों की मृत्यु से पहले ही ठीक कर दिया हो।

आज के समय में व्यापार में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है। मल्टीनेशनल कंपनियां अपने उत्पाद के गुणवत्ता को एक सीमा तक ही बेहतर बना सकती हैं। उत्पाद को हमेशा बेहतर बनाते रहना संभव नहीं है। इसलिए आज कंपनियां उत्पाद की गुणवत्ता को बेहतर बनाने से उत्पाद के मार्केटिंग और पैकेजिंग पर ज्यादा पैसा खर्च करती है। किसी भी उत्पाद के उपरी कवर को पहले से ज्यादा आकर्षक बनाकर ग्राहकों के बीच उस उत्पाद की रूचि निरंतर बनाए रखते हैं जिससे उन्हें मोटी कमाई होती रहती है। संभव है, ये एक वजह हो बाजार में बिकने वाली चीजों के कवर या कवर पर चित्रित प्रतीक चिह्नों को बदलने के पीछे।

मंडेला इफेक्ट के बारे में दुसरा सिद्धांत "Parallel Universe" का है। ''क्वांटम सिद्धांत'' के आधार पर कुछ वैज्ञानिकों का ये मानना है कि ऐसा तब संभव हो सकता है जब दो अलग अलग पॅरेलल यूनिवर्स मौजूद हो। इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि जिस तरह हमारे ब्रह्माण्ड में अनेकों छोटे बड़े ग्रह, उपग्रह, तारें, आकाश गंगाएं एवं निहारिकाएं आदि हैं ठीक इसी तरह कई और अन्य ब्रह्माण्ड, हमारे ब्रह्माण्ड के समानान्तर वजूद में हो और उस ब्रह्माण्ड में भी हमारी पृथ्वी की तरह ही किसी अन्य ग्रह पर हम जैसे लोग यानी हमारे ही प्रतिरूप मौजूद हों मगर हमारे प्रतिरूप अलग अलग Dimension में हो सकते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये अलग अलग Dimension ही अलग अलग दुनियां हो सकती है और वहां भी ठीक वैसी ही संसाधन एवं सुविधाएं (जैसे–ट्वीटर, गूगल, यूट्यूब, इंटरनेट एवं अन्य सभी सुविधाएं) हो जैसा हम पृथ्वीवासी यहां उपयोग करते हैं, मगर उस ब्रह्माण्ड के कंपनीयों का प्रतीक चिह्न यहां की कंपनियों से थोड़ा अलग हो और हमने कभी सपने में वहां की दुनियां देखी हो, तो इस तरह के भ्रम हमें जरूर हो सकते है। चूंकि वो हमारे ही प्रतिबिम्ब हैं, इसलिए ऐसा होने की संभावना बिल्कुल है। इसलिए मंडेला इफेक्ट होने के कारणों में समानान्तर ब्रह्माण्ड के सिद्धांत को नकारा नहीं जा सकता। मंडेला इफेक्ट के बारे में तीसरा सिद्धांत "**Mass Human**

Psychological Phenomena" है। हम "**Mass Human Psychological Phenomena**" के सिद्धांत को एक प्रयोग द्वारा समझ सकते हैं। अगर हम एक ही संवाद 10 या अधिक लोगों को अर्थात पहले ने दूसरे को, दूसरे ने तीसरे को, तीसरे ने चौथे को ..... इस तरह से 10 या अधिक लोगों को भेजते हैं तो मूल संवाद का अर्थ बदल जाता है।

इस सिद्धांत के समर्थक वैज्ञानिकों का मानना है कि लगभग हम सभी लोग हर दिन कोई न कोई कार्य ऐसा जरूर करते हैं जिस पर हम अपना पूरा ध्यान नहीं देते। इस बेध्यान या अचेतन मन से किए गए कार्य का सिर्फ कुछ अंश ही हमारा दिमाग सुरक्षित रख पाता है और भविष्य में इससे मिलता जूलता दृश्य या चित्र देखने पर, पहले से संरक्षित किए गए जानकारी को इसके साथ मिलाकर वास्तविकता से थोड़ी अलग जानकारी फिर से अपने स्थायी मेमोरी में संरक्षित कर लेता है। यही वजह है कि जब हम वास्तविक चीजों को देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि इसे तो हमने थोड़ा अलग देखा था, ये बदल कैसे गया?

हम अचेतन अवस्था (अर्द्धनिंद्रा) में देखे गए 90 प्रतिशत सपने को याद नहीं रख पाते, और जो आंशिक रूप से याद रह जाता है वो अधूरी जानकारी होती है, किन्तु जब हकीकत में सपने से मिलता जुलता दृश्य हमारे सामने होता है और इस बार हम इसे देखते हैं तो हमारा दिमाग पहली बार और दूसरी बार में जुटाई जानकारी को मिलाकर एक जानकारी स्थाई स्मरण में संरक्षित कर लेता है जो अभी भी पूर्णतः सही नहीं होती है। भविष्य में फिर से वही दृश्य जब ध्यान से देखते हैं तो ये पहले से बदला हुआ है महसूस होता हैं। उल्लेखित तीनों सिद्धांतो में से सबसे ज्यादा प्रयोगिक "Mass Human Psychological Phenomena" को ही माना गया है। लेकिन अन्य दो सिद्धांतों की संभावनाओं को भी नकारा नहीं जा सकता।

हमने इस आलेख के माध्यम से मंडेला इफेक्ट के कारणों एवं संभावनाओं के बारे में जाना। वर्तमान में मंडेला इफेक्ट के संदर्भ में विज्ञान के द्वारा ऊपर उल्लेखित किसी भी सिद्धांत की पुष्टि नहीं की गई है। अब आप सोंचे और याद करें कि आपने, अपने जीवन में कौन कौन से मंडेला इफेक्ट को महसूस किया है?

बधाई हो लड़की हुई है

कु.वीनू खत्री
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

''बधाई हो, 'लड़की हुई है' सामान्यत : यह सुनकर सभी लोगों की प्रतिक्रियाएं भिन्न–भिन्न देखने को मिलती है। उदाहरण के रुप में इस बात को समझे तो माता का मुख संतान को देखकर वात्सल्य के भाव से भर जाता हैं, चाहे वह संतान लड़का हो या लड़की क्योंकि दानों संतानो के जन्म के समय प्रसव की पीडा समान होती हैं। वही परिवार के अन्य सदस्यों के मन में कुछ अलग ही तरह के ताने बाने बुनने के भाव आने शुरु हो जाते हैं। पिता को पुत्री के जन्म के पश्चात ही उसकी शिक्षा के अलावा उसके विवाह की चिन्ता प्रमुखता से होने लगती हैं। जैसे कि उसके विवाह हेतु धन इकट्ठा करना आदि। वही कुछ दकियानूसी खयालो वाले व्यक्तियों के मुख पटल पर यह सुनकर शिकन देखने को मिल सकती हैं, क्योंकि ये वे लोग हैं जो लड़की के जन्म को परिवार पर बोझ व परेशानी के तौर पर देखते हैं।

ऐसे मामलों में एक कटु सत्य यह भी है कि ऐसे विचारों को प्रबलता भी कही ना कही समाज ही देता हैं और उसका पोषण भी करता हैं। लड़कियों को ''पराया धन'' मानकर हमारा समाज उसकी शिक्षा, लालन पालन आदि पर ध्यान न देकर ओर उसका ''विवाह'' ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य मानकर स्वयं ही अपनी प्रगति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर रहा हैं। हमारा समाज यह भूल जाता है कि जब स्वयं विधाता ने सृष्टि के निर्माण के समय कोई विभेद नहीं किया तो मनुष्य्य को यह करने का अधिकार किसने दिया।

यह सही कहा गया है और यह एक परम सत्य भी है कि –

''बेटी से ही आबाद हैं, सबके घर परिवार,
अगर न होती बेटियां थम जाता संसार''

लेकिन अब वर्तमान समय में इस अवधारणा में परिवर्तन आना प्रारंभ हो गया हैं। परंतु यह परिवर्तन पर्याप्त नही है। जब हम लड़का या लड़की को समान अवसर, सम्मान देंगे तो हमें महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाव– बेटी पढाओं आदि की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि कहीं न कहीं लागों के जहन में यह विचार निहित है कि लड़कियां लडको से शारीरिक क्षमता एवं संज्ञानात्मक क्षमता में कम व अधिक संवेदनशील मानी जाती हैं, परंतु संवेदनशीलता का अर्थ कमजोर होना कतई नहीं है, और यह समय–समय पर महिलाओं ने साबित किया भी हैं। परंतु क्या कभी किसी ने इस बात पर विचार किया है कि क्यों सिर्फ महिला वर्ग को ही स्वयं की क्षमता को सिद्ध करना पडता है, क्यों एक महिला व पुरुष की थकान को समान नही समझा जाता।

जब तक इस मनोवृत्ति में परिवर्तन नही होगा, तब तक यह कार्य संभव नही हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में कम नही हैं। उदाहरण के तौर पर देखे तो पदमावती बंदोपाध्याय भारतीय वायुसेना की पहली महिला एयर मार्शल थी व एविएशन मेडिसीन विशेषज्ञ बनने वाली पहली महिला अधिकारी जिन्होंने इस भ्रम को तोड़ दिया कि महिलाएं शारीरिक क्षमता में किसी से कम हैं। हलक्की वोक्कालू, आदिवासी समाज की तुलसी

गौडा जो निरक्षर होते हुए भी पौधों को बस एक बार छूकर पहचानने की अनूठी क्षमता रखती है और जिन्हें ''जंगल की एन्साइक्लोपीडियां'' के नाम से भी जाना जाता हैं उनकी इस उपलब्धि के लिए उन्ह्हें पद्मश्री से भी सम्मनित किया गया है। शिक्षा, विज्ञान, व्यापार, परिवार, चलचित्र से लेकर राजनीति तक ऐसा कोई क्षेत्र नही है जहां महिलाओं ने अपनी क्षमता का परिचय न दिया हो या अपना लोहा न मनवाया हो।

अंग्रेजी साहित्य के मशहूर कवि, उपन्यासकार विलियम गोलडिंग ने कहा है कि – महिलाएं मूर्ख हैं जो स्वयं को पुरुषों के समान मानती हैं क्योंकि वे यह नहीं जानती कि वे सदा से ही पुरुषों से सर्वोच्च व अग्र रही हैं। चाहे महिलाओं को आप कुछ भी देकर देख सकते हैं, वह बस उसे गुणा करके बढ़ाकर प्रदान करती हैं। यदि आप उसे शुक्राणु देते है तो वह उसे संतान में बदल देती हैं, आप मकान देते है तो वह उसको घर बनाती हैं, यदि आप उन्हें एक मुस्कुराहट देते है तो वह अपना ह्रदय देती है। अतः जो कुछ उसे दिया जाता है वह उसे गुणा व बढ़ाकर ही देती हैं।

इस बात से यह साबित होता है कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाने का विचार ही मिथ्या है क्योंकि महिलाएं पुरुषों से हमेशा आगे रही है, बात बस हमारी मनोवृत्ति में परिवर्तन की हैं। अतः अगली बार जब आप इस जद्दोजहद में किसी को देखें तो मुस्कराकर कहिए बधाई हो लड़की हुई है।

बाइज्जत बरी

नंदकिशोर कनौजिया
सहायक
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

सुनो! मैं जरा बुटीक से आती हूं।

'ठीक है'।

वह अपने मोबाइल में म्यूजिक ऑन करके कान में हेडफोन लगा लैपटॉप पर ऑफीस का कुछ काम निपटाने लगा और वह किचन में चली गई। बाबू सो रहा है इसलिए यही छोड़ जाती हूँ। दूध का बॉटल किचन के प्लेटफॉर्म पर रखा है, अगर रोए तो पिला देना।

किचन से बाहर आकर पति को सब कुछ एक सांस में समझा वह ऑनलाईन कुक किए ऑटो के ड्रायवर का फोन रिसीव कर जल्दबाजी में अपने बिल्डींग से निकल लिफ्ट में आ गई। गेट पर ही ऑटो था लेकिन जाने क्यों उसके चेहरे पर आज पहली बार अपने दुघमुंहे बच्चे को छोड़ अकेले बाहर निकलने का दर्द थोड़ी देर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होने के सुकून से बड़ा था। ऑटो में बैठते ही वह दर्द अचानक बढ़ गया, उससे रहा नहीं गया। भैया दो मिनट रूकेंगे कुछ छुट गया है। लिफ्ट के भीतर उसने पांचवी मंजिल का बटन दबा दिया। लिफ्ट से बाहर आते ही उसके कानों से बच्चें के रोने की आवाज टकराई। बच्चा जाग गया था। दरवाजा भिड़ा था लेकिन भीतर से अभी भी उसके इंतजार में खुला था मतलब भीतर मौजूद शख्स ने उठकर कुंडी लगाना भी जरूरी नहीं समझा था। वह लगभग दौड़ती हुई भीतर गई। सब कुछ जस का तस था। नींद से जागा बच्चा खुद को अकेला समझ बेतहाशा रो रहा था और हेडफोन लगा लैपटॉप पर नजरे गड़ाए बच्चे की ओर पीठ किए इंसान वास्तविकता से बेखबर अपनी अलग दुनिया में व्यस्त था। उसने बच्चे को गोद में उठा सीने से लगा लिया और दूध का बोतल बैग में डाल इस बार उस शख्स के कंधे पर हाथ रख उसका ध्यान बंटाया।

तुम तो शायद बुटीक जा रही थी ना।

हां । जा रही हूँ, दरवाजा बंद कर लो।

वह कान से हेडफोन निकाल उठ खड़ा हुआ। लिफ्ट से नीचे जाती वह मन ही मन कुछ सोच रही थी। अबोध के प्रति पति के रवैये से दुखी उसके मन ने कहा – सच में ! पुरूष ऐसे ही होते हैं। लेकिन अगले ही पल उसके दिल ने यह सोचकर कि हो सकता है कि हेडफोन की वजह से वह कुछ सुन नहीं पाया होगा, पुरा दोष हेडफोन पर ही डाल दिया और उसने अपने मन के लगाए इल्जाम से पति को बाइज्जत बरी कर दिया। गोद में दुधमुहा बच्चा लिए उसे वापस आया देख वास्तविकता से अनभिज्ञ ऑटो ड्रायवर का दिमाग झल्लाया वह मन ही मन बुदबुदाया, यह कैसी भुल्लकड़ माँ है। बच्चे को छोड़ आई थी। लेकिन किसी अजनबी की सोच से बेफिक्र वह चेहरे पर सुकून भरी मुस्कान लिए ऑटो में जा बैठी और बोली चलो, भैया।

संकट में है हवा और पानी

प्रदीप कुमार सिन्हा
अवर श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

प्रकृति की नसीहतों की सरकार और उद्योगपतियों द्वारा अनदेखी करनेके फलस्वरूप पानी अब बोतलों में बिकने लगा है और विदेशों (जापान, अमेरिका इत्यादि) में हवा के छोटे – छोटे पैक बनाने पर शोध जारी है जितना प्रदूषण अब विकासशील देशों में है, उतना किसी विकासशील देश में देखने को नहीं मिलता। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत के 51 नगरों में से 31 में हवा जरूरत से अधिक प्रदूषित हो गई है। हवा में धूल के कणों के कारण सांस लेना कठिन हो जाता है। धूल के साथ वाहनों का धुआं समस्या को अधिक गंभीर बना रहा है। दिल्ली, बंगलुरू जैसे नगरों में 8 – 10 प्रतिशत लोग सांस की अनेक बीमारियों से पीडित हो गए हैं। वातावरण मानक के अनुसार धूल के कण 140 माइक्रोग्राम से अधिक नहीं होना चाहिए। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद, बंगलुरू इत्यादि कुछ ऐसे नगर हैं जहाँ वायु प्रदूषण को झेलना नागरिकों की प्राकृतिक क्षमता से अधिक है। फलस्वरूप इन नगरों में सांस के रोग तेजी से बढ़ रहे हैं और इनका इलाज भी गत पाँच वर्षों में 10 गुणा महँगा हो गया है।

अमेरिका, जापान जैसे विकसित देशों में हवा को प्रदूषित करने में डीजल, पेट्रोल, गैस इत्यादि ईंधनों की मुख्य भूमिका रहती है, जबकि भारत जैसे विकसित देशों में ईंधन के साथ सड़कों पर पड़ी धूल भी घातक सिद्ध होती है। विकसित देशों में हवा में कणों के मानक केवल 50 से 70 माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर है। भारत में पेट्रोल के मुकाबले डीजल सस्ध्ता होने के कारण विदेशों की तुलना में पाँच गुणा अधिक उपयोग होता है । फलस्वरूप दिल्ली में उच्चतम न्यायालय ने डीजल चालित वाहनों पर रोक लगा दी है, लेकिन वैकल्पिक ईंधन सी.एन.जी. की सप्लाई दिल्ली जैसे नगर में बहुत ही असंतोषजनक है। शुद्ध हवा बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन जिनके पास दो वक्त की रोटी के लिए रोजगार नहीं हैं, वे प्रदूषण की समस्या की ओर ध्यान नहीं दे पाते। देश में या विदेशों में ऐसा कोई ज्ञान नहीं जो वायु प्रदूषण को रोक सके। फलस्वरूप अब विकसित देशों ने प्रयास करना शुरू कर दिया है कि वाहन ऐसे ईंधन से चलें जो जरा भी प्रदूषण पैदा न करें। बिजली एक ऐसा ईंधन है। सौर ऊर्जा भी ईंधन के रूप में कैसे प्रयोग हो, इसपर वैज्ञानिक गम्भीरता से विचार कर रहे हैं।

विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत जैसे देशों में पेय जल बेचने लगी है, क्योंकि इसमें लागत कम, फायदा अधिक है। विदेशी माल की धाक इतनी है कि मौका लगने पर लोग विदेशी कम्पनियों द्वारा पैक किया पानी खरीद लेते हैं। प्याऊ लगाना एवं स्टेशनों पर शुद्ध पानी मिलना देश की आर्थिक एवं सामाजिक संस्कृति का हिस्सा था, जिसे अब कुछ गैर – सरकारी संस्थाएं (जैसे – आजादी बचाओ आन्दोलन) गर्मी के मौसम में 200 – 400 स्टेशनों में यात्रियों की सुविधाओं के लिए लगा रही हैं। रेल मंत्रालय ने भी मदद का आश्वासन दिया है, परंतु बोतल के पानी के कुछ विदेशी – देशी उत्पादक एवं वितरक तथा स्टेशनों के अधिकारी इस योजना पर अड़ंगा लगा रहे हैं।

पानी के प्रदूषण का स्तर इतना बढ़ गया है कि देश की 80 प्रतिशत नदियां प्रदूषित हो चुकी है। केरल में जिस नदी में गुरू आदिशंकराचार्य अपनी वृद्ध माता को

पीठ पर लादकर स्नान कराने ले जाते थे, वह नदी इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि उसका पानी सिंचाई के योगय भी नहीं रहा गया है। प्रकृति ने भी गरीब देशों के साथ पूरा न्याय नहीं किया। एशियाई देशों में संसार की 60 प्रतिशत जनता रहती है और पेय जल संसार का केवल 36 – 40 प्रतिशत ही है, जबकि दक्षिण अमेरिका में 6 प्रतिशत जनसंख्या है और पेय जल लगभग 25 प्रतिशत है। एशियाई देशों में सिंचाई के लिए लगभग 85 प्रतिशत पानी इस्तेमाल होता है। अमेरिका, फ्रांस जैसे देश पानी का प्रयोग खेती में कम परंतु उद्योगों में अधिक करते हैं। उनके उद्योगों की जिम्मेदारी है कि पानी को प्रदूषित करने से रोकें तथा प्रदूषित पानी को साफ करने में जो सरकार खर्च करती है, उनका 30 प्रतिशत स्वयं बर्दाश्त करें। संसार में भारत, चीन, केन्या, नाइजीरिया ऐसे देश हैं जहाँ पेय जल का संकट प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है। पेय जल को सावधानी या किफायत से इस्तेमाल करना अभी कमी होने के बावजूद शहरी नागरिकों को सीखना होगा। भारत ऐसा देश है जहाँ जिन प्रांतों में विकास कम हुआ है, वहां प्रदूषण का स्तर भी कम है। नदियों का पानी प्रदूषित हो जाने पर भी अगर उन्हें 300 – 400 किलोमीटर कम आबादी के क्षेत्रों से गुजरना पड़े तो पानी प्राकृतिक रूप से शुद्ध हो जाता है। उदाहरण के तौर पर दिल्ली में यमुना नदी का प्रदूषण काफी है। उत्तर प्रदेश में यमुना नदी इलाहाबाद से पहले इटावा एवं बांदा जनपद के बीच इतनी शुद्ध हो जाती है कि आज भी नदी के किनारे के लोग इसके पानी का उपयोग पेय जल की तरह से कर रहे हैं।

संयुक्त परिवार

अभिषेक कुमार
अवर श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, गुवाहाटी

भारत में प्राचीन काल से लोग संयुक्त परिवार में रहते आ रहे हैं। संयुक्त परिवार का अर्थ होता है जिस परिवार में एक से अधिक पीढ़ी के लोग मिल जुल कर रहते हो उदाहरण के रूप में संयुक्त परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त दादा –दादी, चाचा–चाची और उनके बच्चे सभी लोग रहते हैं। संयुक्त परिवार 8 से 10 लोगों का सदस्य हो सकता है जबकि एकल परिवार में मात्र माता–पिता और बच्चे शामिल होते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली न केवल गृहकार्य के बोझ को कम करती है, व्यक्ति यह वित्तीय कठिनाइयों, दुर्घटनाओं या आपदाओं के समय मिल जुल कर रहना सिखाती है। कठिनाइयों के समय में, परिवार मजबूत भावनात्मक समर्थन प्रदान करता है क्योंकि यह हमेशा सभी सदस्यों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनने के लिए होता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि ये समस्याएं महत्वपूर्ण हैं या नहीं, महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि सभी समस्याओं को सुना जाता है। समय के साथ संयुक्त परिवार का प्रचलन धीरे–धीरे खत्म हो रहा है क्योंकि आज के समय में ज्यादातर महिलाएं भी नौकरी पेशा वाली होती हैं और परिवार का हर सदस्य काम की तलाश में अलग–अलग शहरों में रहता है, जिसके कारण एक साथ संयुक्त परिवार के रूप में रह पाना संभव नहीं होता। हालांकि ऐसे लोग छुट्टियों में या फिर त्योहारों में अपने पैतृक घर आते हैं, जहां पर सभी परिवार एक साथ मिलते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली परिवार के सदस्यों को प्यार और स्नेह में बांधती है और दूसरों के साथ साझा करने और देखभाल करने के दृष्टिकोण को विकसित करके उन्हें अन्य लोगों की गलतियों के प्रति सहिष्णु होना सिखाती है। भारत में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। संयुक्त परिवार एक छत के नीचे एक साथ रहने वाला एक बड़ा परिवार है। ऐसे परिवारों में, सबसे बड़े पुरुष सदस्य को परिवार के मुखिया के रूप में जाना जाता है और उसकी पत्नी, उनके बेटे, बहू, पोते, सभी एक साथ रहते हैं। ये बड़े परिवार हैं जो एक साथ रहते हैं और ज्यादातर मामलों में उनका एक ही पेशा या सामान्य व्यवसाय होता है। लोग आमतौर पर बहुत महत्वाकांक्षी नहीं होते हैं और अपने परिवार की सदियों पुरानी संस्कृति और रीति–रिवाजों का पालन करते हैं।

संयुक्त परिवार का सबसे बड़ा फायदा यह है कि संयुक्त परिवार में रहते हुए एक सुरक्षात्मक भावना विकसित होती है। किसी भी प्रकार के खतरे का डर नहीं होता। संयुक्त परिवार में रहने पर किसी भी समस्या में हमें अपने परिवार के हर सदस्य का समर्थन मिलता है वह हमारी हिम्मत बढ़ाते हैं। एकल परिवार में परिवार की पूरी जिम्मेदारी एक व्यक्ति पर होती है, लेकिन संयुक्त परिवार में जिम्मेदारी बट जाती है। किसी एक व्यक्ति के ऊपर घर का बोझ नहीं होता। इस तरीके से संयुक्त परिवार में रहते हुए परिवार का हर एक सदस्य घर के खर्चे में अपनी भागीदारी देता है।

संयुक्त परिवार में बच्चों के लिए एक अनुशासन से भरा माहौल विकसित होता है क्योंकि संयुक्त परिवार में घर का सबसे बड़ा व्यक्ति हमारे बुजुर्ग यानी कि हमारे दादा जी होते हैं, जो अपने अनुभव और ज्ञान से घर के बच्चों को मार्गदर्शन देते हैं, इसके अतिरिक्त परिवार का हर एक

सदस्य बच्चों का अच्छे से देखभाल कर पाता है। इस तरीके से संयुक्त परिवार में रहते हुए बच्चों का लालन–पालन अच्छे से हो पाता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए बच्चों के साथ ही बड़ों को भी कभी बोरियत महसूस नहीं होता है क्योंकि संयुक्त परिवार के साथ हंसी मजाक कर सकते हैं और जीवन को मनोरंजन से जी सकते हैं। संयुक्त परिवार में हर प्रकार के त्योहारों को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए हर एक त्यौहार में एक अलग उमंग और उत्साह देखने को मिलता है। वैसे भी बिना परिवार की किसी भी त्योहार का कोई मजा नहीं। संयुक्त परिवार में रहते हुए हमें हर एक समस्याओं का हल मिल जाता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए हमें अकेला महसूस नहीं होता।

संयुक्त परिवार में रहने के तो कई सारे लाभ है लेकिन कभी–कभी हानि भी होता है क्योंकि परिवार के हर सदस्य एक बहुत नाजुक रिश्ते के धागे से बंधे होते है और यदि धागे में जरा भी तनाव आया तो रिश्ते में तकरार आ सकती हैं और यह खास करके परिवार के दो बहुओं के बीच में ज्यादातर होता है। ऐसे में परिवार का पूरा माहौल खराब हो सकता हैं जिसके कारण बहुत सोच समझ कर चलना पड़ता है। संयुक्त परिवार को बनाए रखने के लिए परिवार के हर सदस्य को एक दूसरे की खुशी को प्राथमिकता देनी पड़ती है। यहां तक कि परिवार में जो सदस्य छोटा है, उसे कई बार अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है और अपने बड़ों की इच्छाओं के अनुसार काम करना पड़ता है। संयुक्त परिवार में यदि हर एक सदस्य का विचार एक जैसे ना हो तो वह अन्य लोगों के बहकावे में बहुत जल्दी आ जाता है जिससे परिवार में विभाजन तक की नौबत आ जाती है।

संयुक्त परिवार में आय की भी समस्या होती है। यदि किसी सदस्य की आय अन्य सदस्य से ज्यादा हो तो दूसरे सदस्य को शर्म महसूस करना पड़ता है। यहां तक कि कई बार कम आय वाले सदस्यों को ज्यादा आय वाले सदस्य का ताना भी सुनना पड़ता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार में आय की बचत कर पाना बहुत मुश्किल हो जाता है क्योंकि संयुक्त परिवार बड़ा होता है ऐसे में सारी कमाई परिवार के खर्चे में निकल जाता है। संयुक्त परिवार में महिलाओं के बीच काम को लेकर भी काफी झगड़े होते हैं जो परिवार में अशांति फैलाता है।

गौसंरक्षण तथा अर्थव्यवस्था

जय कुमार
सहायक
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

हम सभी को अपने बचपन के शैक्षणिक दिन अवश्य याद होंगे जब हमे गाय पर निबंध लिखने को कहा जाता था और हम सहजतापूर्वक गाय के वर्णण में कुछ पंक्तियां लिखकर आनंदित हो जाते थें। लेकिन कालांतर में गाय के वैश्विक महत्व को समझकर अपने राष्ट्र के स्कूल पाठ्यक्रम तथा शिक्षा पद्धति पर गर्व होता है। बीते शताब्दी से भूमण्डलीकरण व विश्व व्यापार के दौर में आत्मनिर्भरता की संकल्पना हमारे पूर्वजों ने आदि काल में कर दिये थें। गौ–सेवा तथा गौरक्षक जैसे शब्द भले ही मीडिया के माध्यम से विशेष देखने या सुनने को मिलते हों लेकिन ऐसे शब्दावली आज की गतिशील शहरी जीवनशैली में कहीं ओझल सी हो गयी है। हम ग्राम स्वराज तथा आत्मनिर्भर भारत की बात तो करते हैं लेकिन इसके लिए आधुनिकीकरण तथा विदेशी तकनीक पर निर्भरता पर जोर भी देते हैं। कबीर के शब्दों में 'कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढें बन मांहि' का शब्दिक अर्थ है कि कस्तूरी मृग के नाभी ग्रंथी में सुगंधित पदार्थ होता है जिसे ढूंढते हुए मृग अपना जीवन खतरे में डाल देती है, ठीक उसी प्रकार मानवजाति सकारात्मक्ता से परे होता चला जा रहा है।

कोविड–19 की तीन लहरों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में तेज रिवाइवल देखा गया है क्योंकि इस महासंकट से जब पूरा विश्व जूझ रहा था तब हमारे किसान खेत में पसीना बहा रहे थे। यह आत्मनिर्भर भारत, जो कि पूरे विश्व का पेट भर सकता है, की एक झलक है। कृषि के सब्सिडियरी अर्थव्यवस्था के रूप में पशुपालन एक महत्वपूर्ण अवयव है जो एक दूसरे के पूरक हैं । यही कारण है कि हमारे देश में गौसेवा की महता को आदिकाल से ही समझा गया तथा इसे आत्मार्पित माना जाता है। गौ–रक्षण से कृषि के लिए जैविक पर्दाथ मिलता है जिससे कीटनाशक दवाई का छिड़काव नहीं होगा और बायोगैस की प्रचुरता होने से पेड़–पौधों का क्षय कम होगा।

एक कृषि प्रधान देश में किसान का सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी पशुधन होता है जिसमें गाय की भूमिका सर्वोपरि होता है। प्रागैतिहासिक काल से कृषि ने गाय की महत्ता को न केवल उसके पौष्टिक दूध के कारण, बल्कि उसके बैलों से मिलने वाली शक्ति और मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को बनाए रखने के कारण भी इसे किसी सभ्यता के क्षेत्र विशेष के आत्मनिर्भरता का प्रमाण मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि एक गाय अपने जीवनकाल में 25740 (पच्चीस हजार सात सौ चालीस) मनुष्यों को तृप्त कर सकती है। जरा सोचिए कि यदि गाय के गोबर और गौमुत्र अर्थव्यव्स्था और पर्यावरण के लिए मददगार होगी तो इनसे प्राप्त अमृत–तुल्य दूध तथा इनसे बने उत्पाद कितने जीवनदायी होंगें। वित्तीय वर्ष 2020–21 के आकड़ों के अनुसार भारत ने 1.92 लाख किलो गाय के गोबर का निर्यात विदेशों में किये जिससे हजारों करोड़ की आय में वृद्धि हुई तथा भारतीय जैविक खाद्य की मांग विदेशों में बढ़ती जा रही है। भारत में गौ पालन सभी भौगोलिक क्षेत्रों में होता है जिससे जमीने बंजर होने से बचती है तथा इससे रासायनिक खादों पर दी जा रही सब्सिडी से राहत व विदेशी मुद्रा भी बचती है। यही कारण है कि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है।

भारत दुनियां का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। इसका श्रेय श्वेत क्रांति के जनक वर्गीज कुरियन को दिया जाता है जिनके जन्मदिन अर्थात 26 नवंबर को दुग्ध दिवस के रुप में मनाया जाता है। दूध तथा इसके उत्पाद हमारे जीवन में बहुत अहमियत रखते हैं क्योंकि इसमें संपूर्णता की अनुभूति होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा अनेक पिछड़े देशों में कुपोषण से ग्रसित बच्चों के लिए दूध की आपूर्ति कराई जाती है। इसलिए हर साल दुग्ध दिवस की थीम तय की जाती है जिससे पर्यावरण, पोषण और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ डेयरी क्षेत्र में स्थिरता रहे। गाय के घी का आयुर्वेदिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में उपयोग बहुत ही फलदायक साबित होता आया है। वही घी के दीये तथा हवन में घी की आहूति देने वायुमंडल में ऑक्सिजन के अनु की बढ़ोतरी होती है जिससे ओजोन परत मजबूत होती है। वहीं दूध को वैश्विक भोजन के रूप में मान्यता दिलाना हमारा मकसद रहेगा।

मानवीय जैवक संरचना दर्शाता है कि हमारा पाचन तं त्र शाकाहार के लिए उपयुक्त है तथा यह संपूर्ण आहार है जिसमें फाइबर, विटामिन आदि कई फाइटोकेमिकल्स का लाभ हमारे शरीर को मिलता है। यही कारण है कि शाकाहारियों में कोलेस्ट्रॉल, रक्तचाप और हृदय रोगों का खतरा कम रहता है। स्पष्टतः शाकाहार जीवनशैली से न केवल मानव जाति के जीवन का उत्थान होगा अपितु असंख्य पशु–पक्षियों के कत्ल तथा इनसे उपजे अनचाहे बीमारियों से बचा जा सकता है। हम मानवजन्य बीमारियां जैसे– मैड काउ रोग, स्वाईन फ्लू, बर्ड फ्लू, कोविड–19 की त्रासदी झेल चुके हैं।

पृथ्वी के संरक्षण के लिए गाय का विशिष्ट महत्व है। इसके लिए अनेक महानुभवों ने अपना योगदान दिये है। स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा रचित तथा 1880 में प्रकाशित 'गोकरुनानिधी' पुस्तक हमारी आंखें खोलती जिसमें गाय धन को संरक्षित करने पर जोर दिया गया है। विनोबा भावे ने 1966 में पूरे भारत में गौहत्या के खिलाफ एक राष्ट्रीय कानून बनाने के लिए आंदोलन किये। वर्तमान में गौरक्षा के लिए अनेक जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। अतः गाय जैसे पशुधन को, जो हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, हमें संरक्षण प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

बीरबल का न्याय

आर. आर. सदावर्ते
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

एक बार की बात है अकबर का दरबार सजा था। अकबर के दरबार में दो व्यापारी दीनानाथ और रामप्रसाद आये। अकबर ने उनसे उनका परिचय और आने का कारण पूछा। रामप्रसाद ने दोनों का परिचय दिया और बताया कि उसने एक महीने पहले दीनानाथ को 100 सोने के सिक्के उधार दिए थे। लेकिन अब वह इसको लौटाने से तो मना कर ही रहा है बल्कि यह भी झूठ बोल रहा है कि मैंने कभी उसको सोने के सिक्के उधार दिए ही नहीं। इसके बाद रामप्रसाद बोला हुजूर इसने कभी मेरे को सोने के सिक्के उधार नहीं दिए यह मेरे व्यापार को नुकसान पहुँचाने के लिए ऐसा बोल रहा है। अकबर ने दोनों की बात सुनी और बीरबल को बोला कि तुम इन दोनों का न्याय करो। बीरबल ने दोनों से विस्तार से पूछा कि हुआ क्या था। दोनों ने अपनी अपनी सफाई में बातें बताई। बीरबल ने बादशाह अकबर को कहा यह तो तय है कि इन दोनों में से कोई एक व्यक्ति झूठ बोल रहा है। इसका पता लगाने के लिए मुझे एक दिन का समय चाहिए।

अकबर ने बीरबल को मामला सुलझाने के लिए एक दिन का समय दिया। बीरबल ने घर पर जाकर बहुत सोचा उसके बाद अपने नौकर रामू को बोला तुम बाजार में जाकर दीनानाथ और रामप्रसाद के बारे में पता करो कि दोनों किस प्रकार के व्यक्ति है। रामू बाजार जाकर दोनों के बारे में पता करके आ गया और बीरबल को बताया कि रामप्रसाद को सभी ने एक अच्छा और ईमानदार व्यक्ति बताया जबकि दीनानाथ को लालची और धोखेबाज किस्म का व्यक्ति बताया।

बीरबल ने इसके बाद रामू को दो घी से भरे हुए मटके दिए और दोनों में एक एक सोने का सिक्का डाल दिया। बीरबल ने रामू से कहा तुम एक घी का व्यापारी बन कर जाओ और दीनानाथ और रामप्रसाद को यह घी का मटका बेच दो और अगले दिन तक वहीं मार्केट में रहना और देखना कौन तुमको वह सोने का सिक्का लौटाता है। रामू ने ऐसा ही किया और दोनों को घी से भरा मटका बेच दिया जिसके बाद रामप्रसाद ने तो सोने का सिक्का लौटा दिया लेकिन दीनानाथ ने सोने का सिक्का नहीं लौटाया। उसने यह बात आकर बीरबल को बता दी। बीरबल ने अगले दिन दरबार में रामप्रसाद और दीनानाथ दोनों को बुलाया और बताया कि दीनानाथ झूठ बोल रहा है और वह दोषी है। अकबर ने इसका कारण पूछा तो बीरबल ने सारी बात अकबर को बता दी।

अकबर ने दीनानाथ को 100 सोने के सिक्के लौटाने को कहा इसके साथ 100 सोने के सिक्के अतिरिक्त उसको रामप्रसाद को परेशान करने के लिए देने होंगे यह फैसला सुनाया। अकबर ने बीरबल की बुद्धिमानी के लिए उनकी तारीफ की।

निरक्षरता : एक सामाजिक अभिशाप

पप्पू गुप्ता
कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

कोई भी देश उतना ही विकास करता है जितना वहा के नागरिक सोचते हैं। नागरिक उतना ही सोचते हैं जितना पढ़े – लिखे होते हैं इसलिए एक अच्छे राष्ट्र के लिए साक्षरता बहुत ही जरूरी है।

मुनष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व सोचता समझता है, औचित्य तथा अनौचित्य पर विचार करता है। जबकि मूर्ख को किसी भी बात से कोई मतलब नहीं होता। उसका चाहे मान हो या अपमान हो, उसे चिन्ता नहीं रहती। मूर्ख का कोई लक्ष्य नहीं होता।

जो मनुष्य साहित्य, संगीत कला से हीन है, वह मनुष्य पशु के समान है। बुद्धिमान वही है, जो साहित्य, संगीत और कला का प्रेमी हो अन्यथा वह इस धरती पर भार के समान है। ऐसे लोगों पर यदि परिवार का भार है, तो क्या वे परिवार को सही दिशा दे सकेंगे। उसका मार्गदर्शन कर सकेंगे। वे माता पिता के रूप में आकर अपनी सन्तान को क्या शिक्षा प्रदान कर सकेंगे और फिर.... मनुष्य और पशु में क्या अन्तर रह गया। ज्ञान ही एक ऐसा विशेष एवं अनुपम तत्व है जो उसे पशुता से पृथक करता है। अन्यथा यह पशु कोटि में गणना करने योग्य है। मनुष्य अपने स्वार्थ में अति पटु होता है तो पशु – पक्षी भी हानि या अपने लाभ सम्यक प्रकार से जानते हैं सन्तति प्रेम मनुष्यों तथा पशु – पक्षियों में समान रूप से पाया जाता है। गाय – भैंस भी अपने बच्चे को प्यार दुलार करती हैं। संगीत में ऐसी मनमोहक शक्ति है कि उसकी और सभी समानरूपेण आकृष्ट होते हैं। कलाकार तथा गुणवान मनुष्य का सम्मान सर्वत्र होता है। मूर्ख व्यक्ति का कोई समादर नहीं करता है। सारांश यह है कि अनेक गुण तथा व्यवहार ऐसे हैं जो मनुष्यों की तरह से ही पशुओं में पाए जाते हैं। पशुओं और पक्षियों में भी एकता पाई जाती है। उदाहरणार्थ एक बन्दर कहीं फंस जाये तो उसे बचाने के लिए अनेक – वानर वहाँ एकत्रित हो जाते हैं। केवल शिक्षा या ज्ञान ही एक ऐसा सूक्ष्म तत्व है जो मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ प्रमाणित करता है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि साक्षर होना मनुष्य के लिए बहुत ही आवश्यक है। शासन की ओर से सभी के लिए समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। भारत में शिक्षा की समुचित व्यवस्था रही है। हमारा देश भारत सैकड़ों वर्षों तक दासता की जंजीरों में जकड़ा रहा। इससे हमारी विचारधारा तथा प्रयत्न निष्क्रिय हो गए। ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था की जो दशा हुई, उससे भली प्रकार सभी सुपरिचित हैं। उन लोगों का तो यही विचार था कि भारतीय संस्कृति और साहित्य का मूलोच्छेदन ही कर दिया जाए और इस विचार को उन्होंने कार्यरूप में बदलने का पूरा प्रयास किया।

यह स्पष्ट है कि निरक्षरता के उन्मूलन के बाद ही हमारा देश सच्चे अर्थ में समस्त क्षेत्रों में प्रगति कर सकता है। निरक्षरता समाज के लिए तथा देश के लिए अभिशाप है – कलंक है। खेद का विषय यह है कि स्वतंत्र हुए 75 वर्ष व्यतीत हो गए किन्तु अभी निरक्षरता समाप्त नहीं हो सकी है। आज की शिक्षा व्यवस्था में कुछ सुधार की भी आवश्यकता है – ऐसे में यह भी देखना है कि नई शिक्षा नीति कितना सार्थक होती है। शिक्षा सस्ते शुल्क पर

उपलब्ध कराई जाए तो सभी को लाभ मिलेगा। शिक्षा पर होने वाला व्यय कुछ महंगा पड़ता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों का ध्यान अब भी शिक्षा की ओर अपेक्षाकृत कम है।

हमारे राष्ट्र का कल्याण तभी सम्भव है जबकि हमारे देशवासी साक्षरता की दिशा में ठोस कदम उठाएँ और निरक्षरता के निवारणार्थ यथासम्भव सच्चे अर्थ में प्रयत्न करें। वह दिन वास्तव में कितना सुखद होगा जबकि निरक्षरता पूर्णतः समाप्त हो जाएगी अथवा बहुत कम प्रतिशत में ही रह जायेगी।

राजभाषा हिंदी : कल और आज

असीम कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

राज– काज या प्रशासन के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली भाषा को राजभाषा की संज्ञा दी जाती है। इसका समूचा स्वरूप सरकार की विशिष्ट कार्य – प्रणाली पर आधारित होती है और कार्य – प्रणाली के पीछे निहित सिद्धांतों से नियंत्रित भी। जब हम राज– काज में हिंदी के ऐतिहासिक संदर्भ पर गौर करते हैं तो पाते हैं कि 11वीं शताब्दी के प्रारंभ में ऐसे दानपत्र और शिलालेख मिले हैं जिसमें देवनागरी का प्रयोग किया गया है। बारहवीं – तेरहवीं शताब्दी के आसपास पूर्वी पंजाब से बंगाल तक प्रचलित सभी बोलियों और भाषाओं को हिंदी ने आत्मसात कर लिया और राज– काज की भाषा के रूप में व्यवहृत होने लगी। राजपूत राजाओं के शासनों की भाषा डिंगल – पिंगल वस्तुतरू हिंदी ही थी, जिसमें शासकीय पत्र , टिप्पणियां, राजकर्मचारियों की आचार संहिता, राजा के आदेश आदि प्रस्तुत किए जाते थे। इसी प्रकार मोहम्मद गौरी के सिक्कों पर देवनागरी का प्रयोग मिलता है। अलाउद्दीन खिलजी, तुगलक आदि के अतिरिक्त हैदर अली और टीपू सुल्तान ने भी अपने प्रशासनिक कामकाज में हिंदी का इस्तेमाल किया।

वर्तमान हिंदी (खड़ी बोली) सत्रहवीं शताब्दी तक भारत में व्याप्त हो चुकी थी । यही कारण है कि जब पिछली सदी में भारतीय पुनर्जागरण आरम्भ हुआ, तो पूरे देश को जोड़ने वाली भाषा के रूप में खड़ी बोली के महत्त्व की ओर राजा राम मोहन राय, केशव चंद्र सेन और महर्षि दयानंद जैसे महान व्यक्तियों का ध्यान गया । ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राम मोहन राय ने अपने विचारों के प्रचार के लिए ''उदन्तमार्तण्ड'' नामक हिंदी पत्र प्रकाशित किया। आर्य समाज के जन्मदाता महर्षि दयानन्द ने इसमें अपने विख्यात 'सत्यार्थप्रकाश' तथा अन्य कई पुस्तकों की रचना की और इसे अखिल भारतीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का सबसे पहला सुव्यवस्थित प्रयत्न किया। राजा राम मोहन राय के जीवन काल में ही कोलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई , जहाँ विदेशियों को हिंदी सीखने की व्यवस्था की गई । उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रसार और प्रतिष्ठा की प्रस्तावना सबसे पहले उन महापुरुषों ने की , जो हिन्दीतर प्रदेशो के थे ।

हिंदी के लिए पिछली सदी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । इस सदी में हिंदी गद्य का न केवल विकास हुआ , बल्कि भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने उसे मानक रूप प्रदान किया । इसी सदी में ऐसे महापुरुष उत्पन्न हुए जिन्होंने हिंदी की पहचान अखिल भारतीय संपर्क सूत्र के रूप में की और इसके विकास के लिए प्रयत्न आरम्भ किया । यह अकारण नहीं है कि महात्मा गाँधी ने हिंदी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न माना, कांग्रेस को इसके प्रचार का एक शक्तिशाली माध्यम बनाया और हिंदी प्रचार सभाओं की स्थापना की । पिछले छह सौ वर्षो से भारतीय इतिहास ने जिस भाषा को अखिल भारतीय भाषा बनाने की साधना की, उसे सिद्धि तक ले जाने का सबसे बड़ा श्रेय महात्मा गाँधी को ही है ।

देश की स्वाधीनता के पश्चात संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में

स्वीकार किया था । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी है । अनुच्छेद 351 के अंतर्गत संघ को यह निर्देश दिया गया है कि वह हिंदी भाषा के प्रसार और विकास के लिए आवश्यक कदम उठाये ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । संघ की राजभाषा से संबंधित विभिन्न संवैधानिक उपबंधों को कार्यरूप देने के उदेश्य से भारत सरकार ने सन 1963 में राजभाषा अधिनियम एवं इसकी धारा 8 के अधीन संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए राजभाषा नियम 1976 बनाये । वस्तुतः ये नियम सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए व्यापक मार्गदर्शक सिद्धांतो की भूमिका निभाते हैं। तात्पर्य यह कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाया जाना है ।

पिछले कई दशकों से यह देखा गया है कि प्रशासनिक प्रयोजनों से लेकर व्यावसायिक सम्प्रेषण तक , संचार माध्यमों से लेकर शैक्षणिक पटल तक , विज्ञापन से लेकर तकनीक प्रौद्योगिकी की प्रत्येक नई विद्या तक हिंदी ने दस्तक दी है। आज हर नया विज्ञापन हिंदी की आकर्षण शक्ति और प्रभावात्मकता का परिचायक है। कम्प्यूटर , फैक्स, दूरसंचार, इंटरनेट जैसे नए संचार माध्यमों में भाषा प्रयुक्ति के सर्वथा नवीन आयाम उपस्थित हुए हैं विशेषतः कम्प्यूटर ने तो सारे संसार में अभिव्यक्ति और कार्यशैली को ही बदल डाला है। आज सूचना प्रौद्योगिकी की वृहत्तर भूमिका को देखते हुए वैश्विक स्तर पर हिंदी भौगोलिक सीमाओं को पारकर सूचना प्रौद्योगिकी के परवर्तित परिदृश्य में विभिन्न जनसंचार माध्यमों में घुलने लगी है । इस प्रकार, हिंदी नए सॉफ्टवेयर, इंटरनेट, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, बाजारवादी वर्चस्व आदि सभी की चुनौती को स्वीकार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व भाषा की अपनी नई भूमिका के लिए संघर्षरत है ।

अष्टांग योग का दैनिक जीवन में महत्व

विनय कुमार सक्सेना (योगाचार्य)
वरिष्ठ पुस्तकालय एवं
सूचना सहायक

योग की अंतिम परिणीति आत्मज्ञान/आत्म दर्शन के द्वारा परम शांति प्राप्त करना है संसार में प्रत्येक व्यक्ति का परम साध्य लक्ष्य भी यही है, किन्तु वर्तमान में मनोकायिक रोग तेजी से बढ़े हैं, ऐसी अवस्था में दैनिक जीवन में अष्टांग योग की महत्ता में वृद्धि हुई है। "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" इस उक्ति के अनुसार योग को दैनिक जीवन से जोड़ना वर्तमान की आवश्यकता है जिससे शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक लाभ लिया जा सके और मानव जीवन के चरम शिखर मुक्ति का बोध किया जा सके। आज हमारा जीवन रिक्तिता, विषाद, तनाव से युक्त है। हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन में निराशा, अशांति, तनाव और विषमताओं का बोल–बाला है, ऐसे अंधकारमय वातावरण में अष्टांग योग आशा की किरण है जो हमारे सुख और शांति का मार्ग प्रशस्त करता है।

अष्टांग योगः एक परिचय

योग शब्द संस्कृत की 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है – जोड़ना अतः योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना, संयोग अथवा मिलाना किंतु जब हम आध्यात्मिक सन्दर्भों या योग और प्राणायाम जैसे विशिष्ट विषयों की व्याख्या के लिए योग शब्द का प्रयोग करते हैं तो इस जोड़ने या मिलाने की एक दिशा स्वतरू ही निर्धारित हो जाती है और वह दिशा है आत्मा का परमात्मा से योग अथवा जुड़ना इस प्रकार शरीर, मन और आत्मा की समग्र शक्तियों को परमात्मा में संयोजित करना ही योग है।

भारतीय दर्शन में छः आस्तिक दर्शनों का वर्णन है, इनमें से योग दर्शन पर महर्षि पतंजलि द्वारा लिखित "योगसूत्र" अष्टांग योग का आधार है। योग साधना हेतु अष्टांग योग महत्वपूर्ण एवं व्यवहारिक विधि है जिसे वर्तमान दैनिक जीवन में अपनाया जा सकता है। योग की पूर्ण साधना के लिए इन आठ अंगों का क्रमशः अभ्यास आवश्यक है एक–एक अंग पर पूर्ण अधिकार हो जाने पर ही अग्रिम योग अंगों में प्रवृत्ति होती है अष्टांग योग का आधार पूर्ण समग्रता है। अष्टांग योग के आठ अंग इस प्रकार हैं :–

1. यम
2. नियम
3. आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

उपरोक्त आठ अंगों में प्रथम दो (यम एवं नियम)

मुख्यतरू आचार संबंधी अभ्यास है, इसके बाद दो अंग (आसन एवं प्राणायाम) शरीर को भौतिक रूप से योग्य बनाने के उपाय हैं । पांचवा अंग प्रत्याहार प्रधानतरू इंद्रिय निग्रह का उपाय है तत्पश्चात बाद के तीन अंग (धारणा, ध्यान, तथा समाधि) पूर्णरूपेण मानसिक तथा आध्यात्मिक नियमन की साधनाएं हैं।

अष्टांग योग का दैनिक जीवन में महत्त्व

अष्टांग योग ऐसी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रिया है, जिसे दैनिक जीवन में अपनाने से समूचे दुरूखों का संपूर्ण नाश किया जा सकता है। दैनिक जीवन में इसका महत्व कितना है, इसकी विवेचना करने के लिए आठ अंगों का क्रमवार विश्लेषण प्रस्तुत हैः–

1. **यम–** इसे हम पंचशील भी कह सकते हैं, दैनिक जीवन में इनका पालन सामाजिक दृष्टि से करना चाहिए। यह पांच हैय

(i) अहिंसा– किसी के अनिष्ट का चिंता ना करना और प्राणियों के साथ वैर– भाव छोड़कर प्रेम पूर्ण व्यवहार करना अहिंसा है. मनसा– वाचा– कर्मणा हिंसा ना हो तो निष्कपट विश्व बंधुत्व स्थापित हो सकता है ।

(ii) **सत्य–** सत्य जैसा अपने ज्ञान में हो वैसा ही सत्य बोलना, करना और जानना। सत्य केवल वाणी तक सीमित ना हो दैनिक जीवन के क्रियाकलापों मैं जिस ईमानदारी की अपेक्षा की जाती है वह सत्य का ही रूप है ।

(iii) **अस्तेय–** अस्तेय अर्थात– चोरी ना करना दैनिक जीवन में दूसरों के धन वस्तु या विचारों का अपने हित में प्रयोग करने की प्रवृत्ति से विरत होना स्वयं को ईर्ष्या, द्वेष, लोभ आदि दुर्भावनाओं से दूर रखना अस्तेय है ।

(iv) **ब्रम्हचर्य–** स्वधर्म से विरत न होने का बोधक है– ब्रह्मचर्य। यह केवल मात्र मैथुन कर्म से विरत होना नहीं है। दैनिक जीवन में ब्रह्मचर्य के अभाव से समाज में दुराचार में वृध्दि होती है ।

(v) **अपरिग्रह–** अपरिग्रह अर्थात आवश्यकतानुसार भौतिक साधनों का संचय व उपयोग करना, जिससे समाज के सभी मनुष्यों तक जीवन उपयोगी साधन पहुंच सके ।

इस प्रकार पांच यमों का पालन करने के रूप में योग दर्शन में उन कर्तव्यों की शिक्षा दी है जिसके बिना समाज का अस्तित्व तथा स्थिरता कायम नहीं रह सकती ऐसी स्थिति में आध्यात्मिक उन्नति तो क्या मनुष्य का भौतिक जीवन निर्वाह जी संभव नहीं होगा।

2. **नियम–** यह मुख्यतः व्यक्ति के पालन करने के नियम है, अतः दैनिक जीवन में इनका बड़ा महत्व है, यह भी पांच हैय

(i) **शौच–** शौच का तात्पर्य है जीवन के शारीरिक, मानसिक क्रियाकलापों में शुद्धता का अभ्यास करना।

(ii) **संतोष–** कर्तव्य कर्म का पालन करते हुए उसका जो परिणाम हो उसमें संतुष्टि का भाव धारण करना।

(iii) **तप–** जीवन में एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी भी परिस्थिति में सतत एवं अथक प्रयत्न करना ही तप है।

(iv) **स्वाध्याय–** अपनी जीवन दशा का उचित मूल्यांकन एवं जीवन का सही दिशा निर्धारण ही स्वाध्याय है दूसरे शब्दों में आत्म– अध्ययन ही स्वाध्याय है।

(v) ईश्वर प्राणिधान– ईश्वर के प्रति पूर्ण भावना के साथ आत्मसमर्पण ईश्वर प्राणिधान है।

अष्टांग योग के यह पांच नियम व्यक्तित्व विकास की साधना के परिचायक भी है , जिसकी सहायता से एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है।

3. **आसन–** आसनों का अभ्यास शारीरिक एवं मानसिक विकास तथा व्याधि निवारण हेतु बताया गया है। आधुनिक समाज में आसनों का अभ्यास दैनिक जीवन के

शारीरिक व मानसिक तनाव को कम करने में किया जाता है। आसनों से शरीर के विभिन्न अंगों को ऊर्जावान बनाकर दैनिक जीवन में अनेक कार्य संपन्न किए जा सकते हैं।

4. **प्राणायाम–** वर्तमान में दैनिक जीवन में प्राणायाम का महत्व सर्वविदित है। प्राणायाम दैनिक जीवन में वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में काफी प्रचलित हो रहा है। प्राणायाम से अंतरू स्त्रावी ग्रंथियों तथा चयापचयात्मक क्रियाओं के विकास, हृदय तथा फेफड़ों की क्रिया में काफी लाभ देखा गया है। प्राणायाम द्वारा प्राण शक्ति में वृद्धि होने से शारीरिक तथा मानसिक स्वस्थता का अनुभव होता है. प्राणायाम चित्त की एकाग्रता एवं स्थिरता प्रदान करने वाली विज्ञान सम्मत यौगिक क्रिया है।

5. **प्रत्याहार–** प्रत्याहार व्यावहारिक रूप से जीवन के अवांछनीय प्रवाह से स्वयं को समेटने व आत्मोन्मुख करने का अभ्यास है. प्रत्याहार सिद्ध होने पर साधक अपनी इंद्रियों, विचारों एवं भावनाओं पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है। दैनिक जीवन में इसमें व्यक्तित्व में सरलता आती है व तनाव पर नियंत्रण प्राप्त होता है।

6. **धारणा–** धारणा से मन की एकाग्रता एवं स्थिरता में वृद्धि होती है जो कि दैनिक जीवन में व्यक्तित्व विकास हेतु अनिवार्य घटक है। इस तरह से धारणा के द्वारा व्यक्तित्व संगठन को सुदृढ़ बनाने में सहायता मिलती है।

7. **ध्यान–** ध्यान चेतन मन को जागृत करने की प्रक्रिया है। अचेतन मन की दबी हुई ग्रंथियों का निराकरण कर चेतना की उच्च अवस्था तक पहुंचने की विधि है. ध्यान द्वारा समूचा मन सशक्त व संगठित होता है। दैनिक जीवन में ध्यान का महत्व निरंतर बढ़ रहा है तनाव नियंत्रण व मनोकायिक रोगों में ध्यान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

8. **समाधि–** समाधि अवस्था योग की उच्च अवस्था में से एक है इस अवस्था में चेतना पूर्ण रूप से अहं तथा अन्य विकारों से रहित हो जाती है। इस स्थिति में किसी तरह का तनाव, द्वंद आदि ग्रंथियां नहीं रहती है. दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष रूप से समाधि अवस्था का संबंध नहीं है किंतु भारतीय चिंतन में समाधि जीवन का परम एवं चरम लक्ष्य है।

निष्कर्ष :– अष्टांग योग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में प्रभावी रूप से कार्य करता है, किंतु वर्तमान में अष्टांग योग का प्रचलन बहुत सीमित अर्थों में होने लगा है। यह प्रायः आसन, प्राणायाम, ध्यान तक ही सीमित है। योग का यह अधूरा रूप तात्कालिक लाभ तो दे सकता है परंतु योग के परम लक्ष्य की पूर्ति हेतु सक्षम नहीं है। वर्तमान में आवश्यक है कि योग को उसके व्यापक अर्थों में ग्रहण किया जाए तभी अष्टांग योग की सार्थकता है। दैनिक जीवन में योग के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाएं जो हमारे सुख और शांति का मार्ग प्रशस्त करें। आज हमें अपने मन को अनुशासित करने की आवश्यकता है, जिसकी सबसे सरल और सुलभ विधि अष्टांग योग है। आज का मानव अपनी इच्छा, वासनाओं और संवेगों का गुलाम बन कर नारकीय जीवन जीने को बाध्य है। हमारे जीवन से मानवीय और आध्यात्मिक मूल्य सेवा, त्याग, प्रेम, समर्पण जो हमारी जीवन शैली के आधार बिंदु थे खो गए हैं अतः वर्तमान में हमें अपनी जीवनशैली को परिमार्जित करने की आवश्यकता है। आधुनिक चिकित्सा पद्वति के चिकित्सक जो पूर्व में अष्टांग योग को अनदेखा करते थे वे भी अब अपने रोगियों को इसकी सलाह देने लगे हैं जो कि अष्टांग योग की महत्ता में वृद्धि का संकेत है। अष्टांग योग ही वह जीवन शैली है जो हमारे व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं का विकास कर उनमें व्याप्त असंतुलन को समाप्त करने में सक्षम है।

श्रमेव जयते

पुखराज नेणिवाल
क्षेत्रीय खान नियंत्रक
भारतीय खान ब्यूरो, जबलपुर

विदेश के एक कॉलेज ने एक प्रयोग किया। उन्होंने एक अजीब नोटिस निकाला कि जो विद्यार्थी कुछ भी काम किए बगैर खाट में पड़ा रहेगा, उसको रोज के 20 डॉलर्स दिए जाएंगे। इस अवस्था में विद्यार्थी को जितने भी दिन गुजारने हों, पूरी छूट रहेगी, समय की कोई पाबंदी नहीं रहेगी। कालेज के 46 विद्यार्थियों को बिना मेहनत पैसे कमाने के इस शुभ अवसर ने आकर्षित किया। उन्हें लगा कि गर्मी की छुट्टियों में यों ही पड़े रहेंगे और रोज के 20 के हिसाब से महीने भर में अच्छे खासे 600 डॉलर्स खेल ही खेल में कमा लेंगे। प्रयोग शुरू हुआ। शुरू–शुरू में तो हिस्सा लेने वाले विद्यार्थियों को मजा आया परंतु जैसे–जैसे घंटे बीतने लगे वैसे वैसे उनकी ऊब बढ़ने लगी। जिसे वे मजा मानते थे, अब उन्हें सजा मालूम होने लगी।

अधिकांश विद्यार्थियों ने 72 घंटे में ही अपना बिस्तर लपेट कर काम करने की मर्जी दिखायी। पैसे के लोभ से दो – एक विद्यार्थियों ने जबरन प्रयोग जारी रखा। पांचवें दिन उन्हें भी महसूस हुआ कि पैसे के लोभ से कहीं पागलपन न आ जाए। अतः सुलभता से धनवान बनने का सपना उन्होंने भी छोड़ दिया। आखिर में सिर्फ एक विद्यार्थी बाकी रह गया। छठे दिन उसका भी धीरज टूट गया। बाद में उनमें से एक विद्यार्थी से किसी ने पूछा, "यदि फिर ऐसी मांग आये तो आप उसमें हिस्सा लेंगे क्या?" उसका जवाब था, "नहीं रे भाई, नहीं। बीस ही क्या, रोज के 100 डॉलर देंगे तो भी नहीं।"

कॉलेज के प्राध्यापकों ने निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य ज्यादा काम के कारण नहीं बल्कि आवश्यकता से कम काम होने के कारण बावरे, बेपरवाह और चिड़चिड़े बन जाते हैं। यहूदियों में एक कहावत है, "आलसी रहना, यह काम कठिन से कठिन है।"

विकासशील देशों की श्रेणी में गिने जाने वाले भारत में आज आधे से अधिक लोग गरीबी, कंगाली, भुखमरी और कर्ज से त्रस्त हैं। दरिद्रता के कारणों में जनसँख्या वृद्धि, आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के बढ़ते खर्च, शोषण आदि तो हैं ही परन्तु सबसे बड़े कारण हैं आलस्य और अपव्यय। कामचोरी और निकम्मापन। आलस्य के ही भाई – बंधु हैं, साथ–साथ विलासवृति और नशा भी गरीबी की आग में घी का काम करते हैं।

पहले कमाईए, फिर खाईए

आलस्य का अर्थ है, शारीरिक बल होते हुए भी उसका सदुपयोग न करना। आलस्य के कई कारण हो सकते हैं जैसे भारी और तामसिक भोजन, आधुनिक यांत्रिक उपकरणों पर अत्यधिक आश्रित होना, निंदा या भर्त्सना सुनकर कार्योत्साह भंग हो जाना, आत्मविश्वास की कमी के कारण काम को ना कर देना, भाव – स्वभाव का टकराव, ईर्ष्या, अनबन, विपरीत परिस्थितियों से सामना आदि–आदि। कारण चाहे जो भी हो लेकिन आलसी व्यक्ति पिछले जन्म के संचित पुण्यों को इस जन्म में भोगकर समाप्त कर लेता है। आगे के लिए भाग्य निर्माण नहीं कर पता है, इस प्रकार दरिद्रता उसकी संगिनी बन जाती है। लौकिक पढाई में पहला अक्षर है 'क' और फिर है 'ख'।

इसका अर्थ है पहले काम कीजिये, फिर खाइए। किसी ने ठीक ही कहा है,

खाली बैठ कर ना जिया कर।

कुर्ता उधेड़ कर सिया कर।।

श्रम से प्रेम कीजिये

गरीबी का दूसरा कारण है अपव्यय, विलासवृत्ति और नशा। हैसियत से ज्यादा खर्च या तो अपने जीवन –स्तर का दिखावा करने या इन्द्रियों की मांग को तुष्ट करने या बेलगाम इच्छाओं की पूर्ति के लिए किया जा रहा है। इसका परिणाम है, पल भर का इन्द्रिय–जनित आनंद और कर्ज, कंगाली के रूप में जीवन भर की सजा। कई बार चोरी, डकैती, प्राकृतिक आपदा, धोखा, दंगा आदि के कारण भी संपत्ति का नुक्सान हो सकता है परन्तु ऐसी परिस्थिति से मनोबल का धनी व्यक्ति बहुत जल्दी उबर जाता है। ऐसा कभी – कभार और बहुत कम लोगों के साथ होता है जैसे भूकंप में सब कुछ खो बैठे लोग सरकारी या सामाजिक मदद पाकर अपने मनोबल के बलबूते से पुनः उठ खड़े होते हैं परन्तु कर्महीनता और अपव्यय के शिकार सहायता पाकर और ही अधिक निकम्मे और विलासी हो जाते हैं। अतः श्रम से प्रेम कीजिये, श्रमिक को ऊँची दृष्टि से देखिये, कर्मठ बनिए। कर्म का सम्मान कीजिये, कर्म ही भाग्य का निर्माता है।

एक बार स्वामी सत्यदेव परिव्राजक अमेरिका के मिशिगन नगर में घूम रहे थे। एक लड़का अखबार बेच रहा था। स्वामीजी ने उसकी वेशभूषा देखकर कहा, 'तुम तो किसी संपन्न घर से लगते हो, फिर अखबार क्यों बेच रहे हो?' लड़के ने कहा, 'श्रीमान जी, मेरे घरवाले संपन्न हैं तो क्या इसका मतलब यह है कि मुझे परिश्रम नहीं करना चाहिए। मैंने अपने ही हाथों से कमाकर 150 डॉलर बैंक में जमा किये है।' स्वामीजी को अमेरिका की समृद्धि का राज समझ में आ गया।

श्रमशीलता बड़े से बड़ी डिग्री

दुर्भाग्य से हमारे देश में वाइट कॉलर जॉब को बड़ा गौरवशाली माना गया। कोई कोट–पैंट–टाई पहना हुआ व्यक्ति घर में दरवाजे पर आकर के घंटी बजाता है, पूछने के लिए कि फलाने भाई हैं क्या, तो हम दरवाजा खोल कर कहते हैं, आइए–आइए, बैठिए–बैठिए। क्या काम था? लेकिन एक फटे कपड़े वाला, गरीब इंसान घंटी बजाए और पूछता है, फलाने हैं तो कहते हैं यह कोई आने का समय है क्या? दोपहर को घंटी बजाते हो, जाओ बाद में आना।

दक्षिण अफ्रीका में एक आन्दोलन के सिलसिले में एक सत्याग्रही को जोहन्सबर्ग की जेल में बंद कर दिया गया। जेल में जो काम दिया जाता, अन्य साथी तो जी चुराते पर वह सत्याग्रही परिश्रम से उसे पूरा करते। कोई काम न मिलता तो वे पुस्तकें ही पढ़ा करते। एक बार गवर्नर का मुआयना हुआ। गवर्नर ने उनसे पूछा, 'आपको कोई कष्ट तो नहीं है?' उस सत्याग्रही ने कहा, 'यहाँ पूरी तरह काम नहीं मिलता। 'हैरान गवर्नर ने पूछा, 'यहाँ दूसरे लोग तो काम से जी चुराते हैं, तब भी आप काम क्यों करना चाहते है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'इसलिए कि कहीं मेरी जीवनी शक्ति नष्ट न हो जाये?' गवर्नर बड़ा प्रभावित हुआ। यह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि गांधीजी ही थे।

गांधीजी का मत था कि जो व्यक्ति बिना श्रम किये खाता है, वह चोर है। यदि कोई श्रम करके उपार्जित करता है और दूसरा आलसी बन केवल डकारता है, तो कर्मगति के अनुसार वह अपराध करता है। वे शारीरिक श्रम को उच्च कोटि का मानते थे। उनका मानना था कि मशीने इंसानों के लिए होनी चाहिए, न कि इंसान मशीनों के लिए।

बेशक हम अमीरजादे हों, तो भी श्रमशील बनें। जैसे गाना, बजाना, सीना, पिरोना, ड्राइविंग करना आदि डिग्रियां हमारी शान बढ़ाती हैं। इन सबमें श्रमशीलता सबसे बड़ी डिग्री है जो हर समय, हर स्थान पर, बिना साधनों के हमारे काम बनाती है। जहाँ धन, नौकर, साधन न ले जाए जा सकें, न पहुँच सकें, वहां श्रमशीलता रूपी डिग्री हमारे साथ–साथ रहती है और आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्रदान करती है।

लेने की मुद्रा समेटिये, देने की मुद्रा बढ़ाइए

मानव के पास हमेशा से ही एक – दो की विरोधी शक्तियां एक साथ हैं, इनसे मिलकर ही जीवन सुन्दर बनता है। यदि वह एक शक्ति का प्रयोग करे और विरोधी का प्रयोग ना करे तो जीवन में असंतुलन आ जाता है। जैसे यदि वह बिस्तर बिछा सकता है तो उसे समेट भी सकता है। यदि वह आराम से सो सकता है तो उठने की शक्ति भी उसके पास है। यदि वह बर्तन जूठा कर सकता है, कपड़ा मैला कर सकता है मैदान गंदा कर सकता है तो इन सबको स्वच्छ करने की योग्यता भी वह रखता है। यदि वह खा सकता है तो कमाने की शक्ति भी उसके पास है। यदि वह ले सकता है तो देने का सामर्थ्य भी उसमें है। आज सृष्टि की दुर्व्यवस्था का कारण यह है कि उसने अपनी दोनों शक्तियों का संतुलित रूप से प्रयोग नहीं किया। उसने एक शक्ति का अतिशय प्रयोग किया और दूसरी के लिए परमुखापेक्षी बनने लगा, परिणाम निकला समाज का पतन। इससे उबरने के लिए हमें लेने की मुद्रा वाले हाथ समेटने होंगे और देने की मुद्रा वाले हाथ बढ़ाने होंगे।

एक राजा ने अपनी नगरी के मुख्य रास्ते के बीचों बीच एक बड़ा–सा पत्थर डाल दिया और एक बड़े पेड़ के तने के पीछे छिपकर देखने लगा कि अब क्या होता है? उस रास्ते से आम नागरिक गुजरे, सेना के जवान गुजरे, राजगुरु गुजरा, मंत्री गुजरा परन्तु हरेक के मुख पर अलग – अलग प्रकार के उपालंभ थे। कोई कह रहा था, सड़क बनाने वालों को इसे हटाना चाहिए, कोई ग्राम – पंचायत की लापरवाही को कोस रहा था, कोई राजा के गलत प्रबंधन पर उंगली उठा रहा था। कईयों को उससे चोट भी लगी परन्तु उसे हटाने का पुरुषार्थ कोई नहीं कर रहा था। इतने में एक किसान वहां से गुजरा और बहुत श्रम लगाकर उसने वो पत्थर हटा दिया। पत्थर हटते ही उसके नीचे रखे सोने के सिक्के चमकने लगे। साथ में एक पत्र भी पड़ा था कि पत्थर हटाने का श्रम करने वाले के लिए यह इनाम है।

वर्तमान समय में भी कदम–कदम पर समस्याओं रूपी पत्थर पड़े हैं। लोग उनसे चोटिल हो रहे हैं परन्तु उन्हें हटाने में श्रम या समय का योगदान नहीं देते और कोसते ही रहते हैं। कभी प्रकृति को, कभी मनुष्यों को, कभी भगवान् को। वर्तमान समय में समस्याओं रूपी पत्थरों को हटाने के लिए किसान की तरह जो भी समय और श्रम लगाएगा, उसे जरुर इनाम मिलेगा। श्रम की ही जीत होती है, मेहनत का फल मीठा होता है।

चरित्र की गरीबी

कामचोरी और अपव्यय का कारण चारित्रिक गरीबी है। श्री जगदीशचंद्र हसीजा लिखते हैं कि 'हर वर्ग के लोग, चाहे वह व्यापारी हों या कर्मचारी, मिल मालिक हों या मजदुर, वैज्ञानिक हों या शिक्षक, सभी 'कम दो और अधिक लो' अथवा 'जिम्मेदारी कम और अधिकार अधिक' की उल्टी नीति पर अमल करने को अपने स्वार्थ के हित में समझते हैं। दिनोंदिन अच्छे और उपयोगी धंधे ठप्प तथा फालतू और खोटे धंधे चालू होते जा रहे हैं। जिस समाज में सभी 'लेवता' बन जावे, वहाँ 'देवता' कौन बचेगा? कौन नहीं जानता कि आज 'चारित्रिक पतन' और 'भ्रष्टाचार' अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया है? चारित्रिक पतन की जड़

काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार – ये पांच मनोविकार ही है। विकारों की उत्पत्ति देहाभिमान से होती है जिसको दूर करने का एकमात्र उपाय 'आध्यात्मिक शिक्षा।' आध्यात्मिक शिक्षा के बिना चरित्र निर्माण असंभव है। चरित्र निर्माण के बिना राष्ट्र निर्माण अथवा गरीबी हटाना संभव नहीं है।

हमारा देखने का तरीका, सामान्य व्यक्ति की तरफ देखने का तरीका, क्योंकि हमने श्रम को प्रतिष्ठित नहीं माना है। कुछ न कुछ कारणों से हमने उसे नीचे दर्जे का माना है। मनोवैज्ञानिक रूप से राष्ट्र को इस बात के लिए गंभीरता से सोचना भी होता है और स्थितियों को संभालने के लिए, सुधारने के लिए अविरत प्रयास करना भी आवश्यक होता है। उन्हीं प्रयासों की कड़ी में यह एक प्रयास है श्रमेव जयते।

बोनेक लोर (जंगल के आँसू)

विनय कुमार
कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, राँची

इस कहानी में जंगल की समस्या का वर्णन किया है, इस कहानी मे दो पात्र हैः–

1. **वन के राजा**
2. **आम लोग / जनता**

हल्का ठंड का मौसम था, जंगल के पहाड़ मे महुआ के पेड़ के नीचे आग लगा रहता था जिससे छोटे पेड़–पौधे जल कर राख हो जाते थे। वन के राजा को ये पता नहीं था कि ये आग कैसे लगी या किसी ने लगाई। ये आग 15–18 दिन तक लगा रहता था।

गाँव के लोग महुआ चुनने के लिए पेड़ के नीचे आग लगाते थे ताकि काँटे वाली झाड़ी पत्ते जल जाए और महुआ चुनने में आसानी हो। ये सब देख कर वन राजा काफी दुखी होते थे क्योंकि गाँववाले अपने फायदे के लिए पूरी जंगल को जला देते थे।

वन राजा (आमजन से) :गाँव वाले जंगल से फल–फूल लेते हैं, बाँस–सुखी लकड़ी ले जाते हैं। इसमें कोई चिंता की बात नहीं, क्योंकि ये चिजें उनकी जीवन निर्वाह के लिए हैं। मैं खुशी–खुशी ये चिजे उनको देने को तैयार हूँ, परंतु दुःख की बात ये है कि मनुष्य अपने फायदे के लिए जंगल के अच्छे–अच्छे पेड़ों को काट देते हैं। जंगल मे आग लगा देते हैं, इससे जंगल के सारे पेड़ जल जाते हैं। इतना बोलकर वन राजा रोने लगते हैं।

आमजन (वन राजा से) : वन राजा हमलोग तो सुखी लकड़ी, फल–फूल लेकर जाएँगे तभी तो हमारा घर चलेगा। हम लोग भी तो आपके अपने ही हैं, आप पर ही निर्भर हैं जिस तरह आपका दुःख कोई नहीं देखता वैसे ही हमलोग का भी दुःख कोई नहीं देखता। वन के अधिकारी / सिपाही हम लोग को परेशान करते हैं, हमारा पैसा छीन लेते हैं। एक सूखी लकड़ी भी हमारे हाथ मे देखते हैं तो हम पर केश कर देते हैं। हम अपना दुःख किसको बताएं।

वन राजा (आमजन से) : हम सब जानते हैं सब समझते हैं, पर हम कर भी क्या सकते हैं। इतना बोलकर वन राजा रोने लगते हैं और बोलते हैं तुमलोग सिर्फ खुद के और अपने परिवार के बारे में सोचते हो, तुमलोग को दूसरे के दुःख से कोई मतलब नहीं हैं। भगवान द्वारा निर्मित सबसे श्रेष्ठ रचना मनुष्य है। यह सभी जीव–जन्तु में सबसे अधिक बुद्धिमान है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए सभी जीव–जन्तु को अपने वश मे रखता है।

मंत्री, अधिकारी और पदाधिकारी लोग जंगल को बचाने के लिए अरबों–खरबों की योजना बनाते हैं और सारा पैसा गबन कर जाते हैं। ये लोग जंगल बचाने के नाम पर मेरे बाग–बगीचे, जंगल को उजाड़ देते हैं। जंगल में रहने वाले पशु–पक्षी, जानवर सब बेघर हो गए, सब खत्म हो गए। बरसात के दिन में मोर–मोरनी नाचते–गाते थे ये सब खत्म हो गए। कोयल की आवाज भी अब सुनाई नहीं देती। जंगल के जानवर, पशु–पक्षी का रहने का कोई ठिकाना नहीं रहा। इसलिए ये जानवर गाँव–शहर में घुस जाते हैं लोगों के घर को तोड़ते हैं, लोगों को मारते हैं। ये जानवर बिल्कुल सही करते हैं आखिर मनुष्य ने ही तो इनका घर उजाड़ा है।

अंत मे वन के राजा रोते हुए बोलते हैं, एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य को मेरे पैर में गिरकर माफी माँगना पड़ेगा। वो दिन दूर नहीं जब मनुष्य पानी–हवा के लिए तरसेगा। वो दिन दूर नहीं जब जहरीली हवा की मात्रा बढ़ जाएगी। नदी–समुद्र सब सुख जाएगा, वर्षा नहीं होगी, धरती का तापमान बढ़ जाएगा। तब मनुष्य को अपने किए पर पछतावा होगा।

निष्कर्ष : इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि हमे अपने पर्यावरण, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, नदी की रक्षा करनी चाहिए, इनका दोहन नहीं करना चाहिए। हमारा भविष्य पर्यावरण पर निर्भर करता है। आइए हम सब मिलकर पेड़ लगाएं, अपने पर्यावरण को बचायें।।

हिंदी से ही है हिन्दत्व ।

सुरेश अरुण पाटिल
सहायक रसायनविद
भारतीय खान ब्यूरो, हिंगणा, नागपुर

हिंदी ही माता । हिंदी ही गाथा ।
हिंदी ही माता । हिंदी ही गाथा ।
मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दत्व । हिंदी से ही है हिन्दत्व ।।

नहीं है कोई कटुता , हर पल निभाती है मित्रता
सबको भाती । सबको चाहती ।ना चाहिए कोई भी मान ।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दुत्व । हिंदी से ही है हिन्दुत्व ।।

हर कोई बोलता, हर कोई समजता । ना चाहिए कोई विद्वान ,
सरलता से ही है इसकी पहचान । सरलता से ही है इसकी पहचान ।।

हर गांव की शान है हिंदी । हर हिन्द की जान है हिंदी ।
हर सबका अभिमान है हिंदी । भारत देश की शान है हिंदी ।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दुत्व । हिंदी से ही है हिन्दुत्व ।।

हिंदी हर परिमाणों की अभिव्यक्ति है । मातृभूमि पर मर मिटने की शक्ति है ।
हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा , पर लगती अपनी मातृभाषा है ।
हर कोई सरलता से गप्ता है, लिखता है,समझता है ।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दुत्व । हिंदी से ही है हिन्दुत्व ।।

हर गलियारों में गूंजती है । हर खलियानो में पनपती है ।
इस देश की मिटटी भी इसी से बनती है , इसी से बनती है ।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दुत्व । हिंदी से ही है हिन्दुत्व ।।

एकता की जान है । हिंदी सबका मान है ।
हिंदी सबकी उन्नति का मूल है । हिंदी भगवान ने परोसा मीठा फल है ।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दत्व । हिंदी से ही है हिन्दत्व ।।

बस यही दुआ है रबसे, रहने दो हिंदी भाषा को शिर्षपेप् हिंदी भाषा को शिर्षपे ।।
झंडा हिंदी का ही लहरायेंगे । परचम हिंदी का ही गाएंगे । परचम हिंदी का ही गाएंगे ।।
इसलिए मानो या ना मानो, हिंदी से ही है हिन्दत्व । हिंदी से ही है हिन्दुत्व ।।
"जय हिन्द । जय खान भारती । जय खान भारती ''

इन्सपेक्टर

प्रशांत तिनगुरीया
निजी सचिव
भारतीय खान ब्युरो, नागपुर

सुबह–सुबह मोर्निंग वाक मे
श्रीमान सपन कुमार जी मिले
हाथ मे इन्सपेक्टर
वाली छड़ी लिये।
छडी हिलाकर हेलो किया,
मैंने भी हाथ हिलाकर हेलो किया।
मैंने सोचा ये छड़ी है चोर को डराने,
कुत्ते से खुद को बचाने,
या पड़ोसी को शान दिखाने,
फिर मैंने सोचा शायद ये बनना चाहते थे इन्सपेक्टर
किस्मत से बन गये टीचर।
मैंने पुछा "क्या तुम बनना चाहते थे इन्सपेक्टर? "
वो बोले "हाँ मै बनना चाहता था इन्सपेक्टर
किस्मत से बन गया स्पोर्ट टीचर,
और बनकर स्पोर्ट टीचर
बना दिये है मैंने कई इन्सपेक्टर। "

अग्निपथ

टी. एम. पुस्तोडे
सहायक रसायनविद
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

ना झुका है न झुकने देंगे माँ भारती का शीश उन्मथ
चलो अग्निपथ! चलो अग्निपथ!! चलो अग्निपथ!!!

ना डगर से डरो, न डगमगाओ पग अपने अटल!
त्याग दो मन की भ्रांतियां, बनो हिमालय–सा निश्चल!
डर से कभी ना डरो, हासिल करो यह महारथ ।1।
चलो अग्निपथ! चलो अग्निपथ!! चलो अग्निपथ!!!

राष्ट्रभक्ति की ज्योति से जागृत हो नवचेतना!
"राष्ट्र रक्षा सर्वोपरिरू" जागे जन–मन मे भावना!!
नव संकल्प के साथ आओ और ले सब दृढ–शपथ ।2।
चलो अग्निपथ! चलो अग्निपथ!! चलो अग्निपथ!!!

अग्निदिव्य से पार होकर सोना बन जाता कंचन!
अग्निवीरों पर नाज होगा, देश करेगा त्रिवार वंदन!
जिंदगी भी अमर रहेगी, विजयगाथा का विजयपथ ।3।
चलो अग्निपथ! चलो अग्निपथ!! चलो अग्निपथ!!!

''मै'' को ''मै'' में देख

पवन कुमार
कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

''मैं'' को ''मैं'' में देख, कुछ तो मिलेगा।
जो मिलेगा ''मै'' में, वो ही दुनिया में खिलेगा।।

दुनिया की बातों में न हो परेशान ऐ मुशाफिर।
जो मै में झाकेगा तो हर कठिनाई का हल मिलेगा।।
ये जो दुःख और सुख हैं, ये महज एक छलावा है।
जो ष्मैष् को तरासोगे तो सुख ही सुख मिलेगा।।

''मै'' को ''मै–– में देख, कुछ तो .....

एक हार से मत हार कभी, कर कोशिश तो जीत मिलेगा।
इन छोटी – २ हार से डरोगे, तो कुछ न मिलेगा ।।
ये जो हार और जीत है, महज एक नजरिया है।
जो ष्मैष् में झांकेगा तो, हार में भी जीत मिलेगा।।

''मै'' को ''मै'' में देख, कुछ तो .....

सोच के दायरे इतने बुलंदियों तक ले चल।
कि मंजिलों को भी, आसमां सा मुकाम मिलेगा।।
ये जो मंजिल और मुकाम हैं, ये बस ''मै'' से हैं।
जो ष्मैष् में खोजेगा, तो मंजिल को भी मुकाम मिलेगा।।

''मैं'' को ''मैं'' में देख, कुछ तो मिलेगा।
''मैं'' जो मिलेगा ''मैं'' में, वो ही दुनिया में खिलेगा।

बढ़े चलो

राजेश धावड़े
वरिष्ठ प्रयोगशाला परिचर
भारतीय खान ब्यूरो,
हिंगणा, नागपुर

फुल बिछे हो या काँटे हो,
राह न अपनी छोड़ो तुम।

चाहे जो विपदा आये,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।।

साथ रहे या रहे न साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।

नहीं कृपा की भिक्षा मांगो
कर न दीन बन जोड़ो तुम।।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा।

पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान बची हो तन में
तब तक आगे बढ़े चलो।।

धरती बचाओ पर

चूनाराम
एम.टी.एस.
भारतीय खान ब्यूरो,
गांधीनगर

आग बरसती आसमान से
लगी है मचने हाहाकार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार।

काट रहा वन–उपवन सारे
करता नहींकोई परवाह
दूषित वायु शुद्ध न होती
हर दिशा में फैले धुआँ अथाह,
अपने किये कृत्य से मानव
कई रोगों का हुआ शिकार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार।

बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग से
हिमखंड हैं सारे पिघल रहे
सारे प्राणी खतरे में हैं
कैसे तुमको ये धरा कहे,
हालत बद से बदतर होती
कुदरत भी अब हुई लाचार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार।

फैलाता है खूब इंसान
सुंदर–स्वच्छ धरा कर गंदी
करता नित अपना नुकसान,
पास बुलाता मौत को अपनी
कर पृथ्वी पर अत्याचार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार।

जलचर सारे मरते जाते
नदियों बीच रसायन बहता
फिक्र किसे मरते जीवों की
बस पैसों से मतलब रहता,
साफ रखो जल स्त्रोत को अपने
यही तो हैं जीवन आधार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार।

सोचो आने वाली पीढ़ी
कैसे जीवित रह पाएगी।

वृक्ष है प्राण वायु का दाता।

अनिता शर्मा
उच्च श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो,
नागपुर

वृक्ष है प्राण वायु का दाता।
इससे ही है जीवन चलता।
ये है जग का कल्याण करता।
वृक्ष है प्राण वायु का दाता ।1।

फुलों – फलों से लहलहाता।
राहगीरों का आश्रयदाता।
नई उमंग उनमें जगाता।
वृक्ष है प्राण वायु का दाता ।2।

प्रदुषित वायु का शोषण करता।
वर्षा को आमंत्रित करता।
यही पृथ्वी की शोभा बढ़ाता।
वृक्ष है प्राण वायु का दाता ।3।

इसका कटना ही है अंत हमारा।
न चाहते हो अगर अंत अपना।
तो हे मानव! आवश्यक है वृक्षों का बचना।
वृक्ष है प्राण वायु का दाता ।4।

मैं हूँ बाउंडरी मैन..!!

राजेश कुमार
उच्च श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

कहने को तो प्रतियोगी छात्र हूँ,
पर किस्मत से बेरोजगार हूँ..

किस्मत ना तो अच्छी है ना ही बुरी,
नंबर न इतने खराब आते कि तैयारी छोड़ दूं,
ना इतने अच्छे आते कि नौकरी लग जाये।

ये 1, 2 नंबर से किस्मत 4 साल से मजे ले रही है,
दोस्तों के नौकरी पत्र देखकर अच्छा तो लगता है,
पर दिल ही दिल जो चुभन है वो बयां भी ना कर सकता..

हर साल पिछले कटऑफ से ज्यादा लाता हूँ,
3 चरणों को पास कर लेता हूँ,
पर ये दशमलव के नंबर ही कम रह जाते हैं,
और नौकरी फिर सालों दूर चली जाती है।

दोष भी किसे दुँ, घटती वेकैंसी को,
निजीकरण को, आरक्षण को,
वेटिंग लिस्ट की कमी को, 3 साल लंबी परीक्षा प्रक्रिया को,
या चीटिंग माफिया को,
ये कोचिंग वाले भी तो कम नहीं..

थक भी नहीं सकता,
रुक भी नहीं सकता,
न आरक्षण है,
ना ही बिजनेस के पैसे,
प्राइवेट जॉब के लिये पैरवी भी नहीं,
जब बीए से नौकरी देने ही नहीं,
तो बंद करवा दो ना ऐसे एडमिशन..

दिल पत्थर से हो गया है,
या मन ही तानों से पथरा गया है,
कोई भी चमन चू''या घर ज्ञान पेल के जाता है,
चाहे रिश्तेदार हो,
या दोस्त यार हीं...
शायद उनको पता ही नहीं चलता,
अपने गुणगान के बखान में,
दोस्त के जज्बात नहीं समझ पाते..

खैर समझना तो घरवालों ने भी छोड़ दिया है,
और छोड़ें भी क्यों नहीं,
हर बार दशमलव से रह जाता हूँ..
पता है कटऑफ नहीं फुल मार्क्स चेस करना है,
पर पढ़ाई मैं भी तो पूरे मार्क्स के लिए करता हूँ।

हँसती मौज करती पार्टी करती दुनियाँ के बीच
गणित और ग्रामर में उलझा रहता हूँ..
ना कोई गलत लत है, न शराब सट्टा,
अब तो चाय की टपरी भी कम ही जाता हूँ
ना कोई लड़की दोस्त ही बनती है,
और बने भी क्यों, जब इतने सक्सेसफुल ऑप्शन्स हैं..

खैर जिंदगी जंग है,
हार मानना सीखा ही कब है,
आज नहीं तो कल,
ये नहीं तो कुछ और,
करूँगा जरूर कुछ ना कुछ,
कुछ ऐसा, कुछ बेहतर,
कि बाबा को नाज हो, फक्र हो।

सही रास्ते कब तक तकलीफ दे सकते,
इसकी लिमिट देखने के लिए,
बनाये गए हैं हम जैसे बाउंडरी मैन..!!

अप्रैल, 2021 से मार्च, 2022 तक हिंदी संबंधी कार्यों का विवरण।

भारतीय खान ब्यूरो अपने मुख्यालय तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित कर रहा है। भारतीय खान ब्यूरो का मुख्यालय नागपुर, महाराष्ट्र में है जो 'ख' क्षेत्र में स्थित है। 06 अधीनस्थ कार्यालय 'क' क्षेत्र में, 01 अधीनस्थ कार्यालय 'ख' क्षेत्र में तथा शेष 07 अधीनस्थ कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है । भारतीय खान ब्यूरो के सभी अधीनस्थ कार्यालयों ने राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम उल्लिखित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है। वर्ष 2021–22 के दौरान हिंदी कार्यान्वयन से संबंधित प्रगति का विवरण निम्न प्रकार है :–

1. मुख्यालय में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक :– दिनांक 25/06/2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 118 वीं बैठक, दिनांक 04/10/2021 को 119 वीं बैठक, दिनांक 06/01/2022 को 120 वीं बैठक तथा दिनांक 06/04/2022 को 121 वीं बैठक का आयोजन किया गया। इन बैठकों में भाषा एवं टंकण प्रशिक्षण, हिंदी के रिक्त पदों को भरा जाना, नियम 10 (4) एवं 10 (4) के तहत अधिसूचना जारी करना, धारा 3 (3) का उल्लंघन, हिंदी कार्यशाला एवं अधीनस्थ कार्यालयों का वेब – लिंक के माध्यम से ऑनलाईन आयोजन एवं राजभाषा निरीक्षण, राजभाषा तकनीकी सेमिनान आयोजन आदि अनेक विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। साथ ही सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित आयोजन किया जाता है और रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी जाती है।

1. **भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा – 2021 का आयोजनः–** महानियंत्रक (प्रभारी) भारतीय खान ब्यूरो के निर्देशानुसार भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में दिनांक 14/09/2021 से दिनांक 28/09/2021 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) भारतीय खान ब्यूरो की अध्यक्षता में भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में दिनांक 14/09/2021 को हिंदी पखवाड़ा – 2021 का ऑनलाइन उद्घाटन किया गया तथा साथ ही हिंदी दिवस का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय खान ब्यूरो के शीर्ष अधिकारीगण वेब–लिंक के माध्यम से जुड़े एवं कार्यक्रम में भाग लिया। इनमें श्री पंकज कुलश्रेष्ठ, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी, एम. ई.एस.), डॉ. (श्रीमती) संध्या लाल, निदेशक (प्रभारी अयस्क प्रसाधन), श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी एवं श्री अभय अग्रवाल, क्षेत्रीय खान नियंत्रक, तकनीकी सचिव एवं राजभाषा अधिकारी और भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय के उनके अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रमुख रूप से भागीदारी की ।

कार्यक्रम के आरंभ में श्री पी. एन. शर्मा, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी) द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा की शपथ दिलाई गई। तत्पश्चात् श्री पंकज कुलश्रेष्ठ, मुख्य खान नियंत्रक (प्रभारी, एम.ई.एस.) द्वारा माननीय गृह और सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह जी का संदेश वाचन किया गया। इसके बाद श्री अभय अग्रवाल, क्षेत्रीय खान नियंत्रक, तकनीकी सचिव एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय संसदीय कार्य, कोयला तथा खान मंत्री, भारत सरकार श्री प्रल्हाद जोशी जी का संदेश वाचन किया गया।

तत्पश्चात् राजभाषा अधिकारी श्री अभय अग्रवाल द्वारा भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर कार्यालय की गत वर्ष की हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसके अंतर्गत वर्षभर में राजभाषा से संबंधित किए गए कार्य का लेखा – जोखा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद श्री अभिनय कुमार शर्मा, सहायक संपादक द्वारा हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, टिप्पण आलेखन, हिंदी अनुवाद, राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं हिंदी शुद्धलेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन / ऑफलाइन रूप से कोविड दिशा – निर्देशों के अनुरूप किया गया। हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अभिनय कुमार शर्मा, सहायक संपादक द्वारा दिया गया।

आईबीएम में हुआ हिंदी पखवाड़ा

नागपुरः महानियंत्रक भारतीय खान ब्यूरो के निर्देशानुसार भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया. मुख्य खान नियंत्रक पी.एन. शर्मा के नेतृत्व में हुए कार्यक्रम में हिंदी निबंध, टिप्पणी आलेखन, हिंदी अनुवान, राजभाषा, प्रश्नोतरी व शुद्धलेखन स्पर्धाएं हुई.

कर्मचारियों और पदाधिकारियों के लिए ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन हुआ. कार्यशाला में वेस्टर्न कोल्डफील्ड लिमिटेड के सचिव मनोज कुमार ने हिंदी विषय और उसके प्रयोग पर व्याख्यान दिया. क्षेत्रीय खान नियंत्रक एवं राजभाषा अधिकारी अभय अग्रवाल, सहायक संपादक अभिनय कुमार शर्मा ने कार्यशाला को सराहा.

लोकमत 2.10.21

2. **तकनीकी एवं प्रशासनिक पत्रों का अनुवाद कार्य :–** वर्ष के दौरान महत्वपूर्ण तकनीकी एवं प्रशासनिक दस्तावेजों का अनुवाद हिंदी में किया गया। वर्ष 2021–22 के लिए खान मंत्रालय के वार्षिक रिपोर्ट के करीब 100 पृष्ठों का हिंदी में अनुवाद किया गया। इसी प्रकार कोयला एवं इस्पात पर स्थायी संसदीय समिति से संबंधित सामग्री की करीब 30 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया तथा टंकण कर तकनीकी सचिव अनुभाग को भेजा गया। इसी प्रकार खनन एवं खनिज सांख्यिकी प्रभाग से संबंधित सामग्री की करीब 15 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया। साथ ही, तकनीकी सचिव अनुभाग से प्राप्त खनिज संरक्षण एवं विकास नियमावली, 2017 से संबंधित 15 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया।

3. **राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण :–** मुख्यालय के प्रभाग / अनुभाग यथा मुख्य खान नियंत्रक कार्यालय, सतर्कता अनुभाग, सामान्य अनुभाग, लेखा अनुभाग, खान नियंत्रक (मध्य) कार्यालय, प्रकाशन अनुभाग, केंद्रीय पुस्तकालय, टी.एम.पी. प्रभाग, बजट अनुभाग, जी. एम. सेल, स्थापना अनुभाग, खनिज प्रसंस्करण प्रभाग, तकनीकी सचिव अनुभाग, नागपुर क्षेत्रीय कार्यालय, खनन एवं खनिज सांख्यिकी प्रभाग तथा प्रशिक्षण केंद्र, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया एवं निरीक्षण रिपोर्ट भेजी गई। इसी प्रकार हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय का दिनांक 27/08/2021 को, जबलपुर क्षेत्रीय कार्यालय का दिनांक 31/08/2021 को एवं दिनांक 24/03/2022 को कोलकाता आंचलिक कार्यालय का राजभाषा कार्यान्/वयन संबंधी निरीक्षण किया गया एवं निरीक्षण रिपोर्ट भेजी गई।

4. **भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजनः–** भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार – प्रसार व प्रगति के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में दिनांक 15/06/2021 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में कुल 17 अधिकारिय्घों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी प्रकार दिनांक 27/09/2021, 21/12/2021 एवं 11/03/2022 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं जिनमे क्रमशः 18, 20 एवं 21 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

5. **खान भारती के रचनाकारों को मानदेयः–** वर्ष 2020 में प्रकाशित भारतीय खान ब्यूरो, (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह – पत्रिका 'खान भारती' के रचनाकारों को मानदेय की स्वीकृति प्रदान की गई।

6. **संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गाँधीनगर का राजभाषा निरीक्षणः–** संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गाँधीनगर का दिनांक 21/09/2021 को राजभाषा निरीक्षण हेतु आवश्यक कार्य किए गए।

7. **राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के तहत व्यक्तिशः आदेशः** – राजभाषा नियम 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय के 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु व्यक्तिशः आदेश जारी किया गया।

8. **संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई का राजभाषा निरीक्षणः–** संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई का दिनांक 22/02/2022 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस हेतु निरीक्षण प्रश्नावली के मुख्यालय से संबंधित जानकारी के 03 पृष्ठ तैयार किए गए एवं उक्त निरीक्षण से संबंधित अन्य आवश्यक कार्य किए गए। भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर से उक्त निरीक्षण के दौरान डॉ. वाय. जी. काले, खान नियंत्रक (टी.एम.पी.) एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे। चेन्नई, क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से श्री जी.सी. सेठी, क्षेत्रीय खान नियंत्रक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

9. **संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 21/09/2021 को गाँधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय का किए गए राजभाषा निरीक्षण के उपरांत दिए गए आश्वासनों पर अनुवर्ती कार्रवाई :–** संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 21/09/2021 को गाँधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय का किए गए राजभाषा निरीक्षण के उपरांत दिए गए आश्वासनों पर अनुवर्ती कार्रवाई खान मंत्रालय, नई दिल्ली को प्रेषित की गई।

10. **मूल टिप्पण – आलेखन प्रोत्साहन योजना वर्ष 2020–21 :–** मूल हिंदी टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2020–21 हेतु भारतीय खान ब्यूरो के कुल 18 कार्यालयों के 76 कार्मिकों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण बातें :

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया । संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 26 जनवरी, 1950 को हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनाई गई।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के कागजात (प्रभावी 26 जनवरी, 1965 से)

इसके अंतर्गत आने वाले निम्न कागजातों को द्विभाषिक जारी करना वैधानिक रूप से अनिवार्य है। संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञपत्र, निविदा - सूचनाएं तथा निविदा प्रारूप।

राजभाषा अधिनियम 1976

केंद्रीय सरकार ने प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कुल 12 नियम बनाए हैं :-
इसका विस्तार तमिलनाडु राज्य के सिवाय संपूर्ण भारत पर है।
'क' क्षेत्र - बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, हिमाचल प्रदेश, तथा दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।
'ग' क्षेत्र - उक्त में से शेष समस्त राज्य है।

भारतीय की आठवीं अनुसूची में दर्ज राजभाषाएं :-

1. असमिया 2. उड़िया 3. उर्दु 4. कन्नड़ 5. कश्मीरी 6. गुजराती 7. तमिल 8. तेलुगू 9. पंजाबी 10. बंगाली 11. मराठी 12. मलयालम 13. संस्कृत 14. सिंधी 15. हिंदी 16. नेपाली 17. कोंकणी 18. मणिपुरी 19. बोडो 20. संथाली 21. मैथिली 22. डोगरी

राजभाषा अधिनियम 8 (4)

केंद्रीय कार्यालय में प्रमुख द्वारा निर्धारित किया जाता है कि उस संगठन के किन - किन विभागों / कार्यालयों / अनुभागों में शत - प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा सकता है। इसके उपरांत उन विभागों / कार्यालयों / अनुभागों को राजभाषा नियम 8(4) के अंतर्गत शत - प्रतिशत कार्य हिंदी में करने के लिए विनिर्दिष्ट (स्पेसीफाईड) किया जाता है।

नियम 10(4)

केंद्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कर्मचारियों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान (मैट्रीक अथवा समकक्ष परीक्षा हिंदी के साथ उत्तीर्ण) प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है। इस अधिसूचना का तात्पर्य यह है कि अधिसूचित कार्यालय अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करने में

राजभाषा नीति के कार्यन्वयन के लिए जाँच बिन्दु

(राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा निर्धारित)

1. राजभाषा अधिनियम व नियमों के उपबन्धों के अनुपालन का उत्तरदायित्व प्रशासनिक अध्यक्ष का है।

   - नियम (12)

2. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत निम्न कागजात द्विभाषी जारी किए जाएं । सामान्य आदेश (जैसे - परिपत्र, स्थायी प्रकार के सभी आदेश, अनुदेश पत्र, ज्ञापन, निर्णय, व्यक्तियों के समुह से संबंधित आदेश, आदि), संविदाएं, प्रशासकीय रिपोर्ट, लाइसेंस, परमिट, टेंडर मांगने के नोटिस आदि।

3. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी होने वाले कागजात द्विभाषी जारी किए जा रहे हैं और हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर, हिन्दी में दिया जा रहा है । यह उत्तरदायित्व दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का है । - नियम (6)

4. कोड, मैनुअलों, फार्मो और गजट सामग्री का निश्चित रूप से द्विभाषी प्रकाशन । रजिस्टरों, फाइलों पर शीर्ष हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनो में हों ।

5. हिन्दी पत्रों के आवक (डायरी) तथा जावक (डिस्पेच) रजिस्टर बनाए जाएं। कार्यालय से प्रेषित (डिस्पेच) किए गए पत्र की कार्यालय प्रति (ओ.सी) पर, मूलपत्र अथवा जवाब (उत्तर) लिखा जाए तथा जावक (डिस्पेच) रजिस्टर में भी मूलपत्र या जवाब (उत्तर) लिखा जाए ।

6. ''क'' तथा ''ख'' क्षेत्र को भेजे जाने वाले पत्रों पर पते हिन्दी में लिखे जाएं ।

7. हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दें । - नियम (5)

8. रबड़ मोहर, नामपट्ट, साइन बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में ही हों।

भारतीय खान ब्यूरो
नागपुर

Shakti Digital-9503425094